॥ श्रीजिनायनमः ॥

अथ क्रियाकोष भाषा छंद बंद प्रारम्भः

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

समवशरणलछमी सहित, वर्धमान जिनराय । नमो विबुध वंदित चरण, भविजन को सुखदाय ॥ १

जाके ग्यान प्रकाशमें, लोक अनंत समाव । जिम समुद्रढिग गायखुर, यथानीर दरसाव ॥ २ ॥

वृषभनाथ जिन आदिदे, पारशलों तेईस । मन, वच, काया, भाव धर, बंदो कर धर सीस ॥ ३ ॥

नमो सकल परमातमा, रहित अठारा दोष । छियालीस गुण आदिदे, हैं अनंत गुण कोष ॥ ४ ॥

वसुगुण समकित आदि जुत, प्रणमों सिद्ध महंत । काल अनंतानंत थिति, लोक शिखर निवसंत ॥ ५ ॥

आचारज, उवझाय, गुरु, साधु त्रिविध निर्ग्रंथ । भवि बनवासी जननिको, दरसावैं शिवपंथ ॥ ६ ॥

जिनबाणी दिवध्वनि खिरी, द्वादशांग मय सोय । ता सरस्वतिकों नमतहूं, मन, वच, क्रम जिन सोय ॥ ७ ॥

देव, सुगुरु, श्रुत कों नमूं, त्रेपन किरया सार । श्रावक की वरणन करूं, संछेपहि निरधार ॥ ८ ॥

चौपाई

जंबूदीप दीपसिर जान । मेरु सुदरशन मध्य बखान ॥ ताका दच्छिण दिस शुभलसै । भरतक्षेत्र अति सुवसही वसै ॥९॥

तामैं मगध देश परधान । नगर मटंब द्रोणपुर थान ॥ वन उपवन जुत शोभा लहै । ताको वरणन कवि कोकहै ॥ १० ॥

राजगृही नगरी अति वनी । इंद्रपुरी मानों दिव तनी ॥ जिनवर भवन शोभ अतिलहै । तस उपमा बरणन कोकहै ॥ ११ ॥

श्रावक उत्सव सहित अनेक । जिन पूजैं अति धर सुविवेक ॥ मंदिर पंकति शोभै भली । गीतादिक पूरवैं मन रली ॥ १२ ॥

धरमी जन तामें बहु वसैं । दान चार दे चित्तकू लसैं ॥ चहुं फेर तासके कोट । गोपुर जुत अति बनो निघोट ॥ १३ ॥

वाड़ी बाग़ विराजैं हरे । सघन दाख दाम्युं द्रुमफुरे ॥ और विविधके पादप जिते । फल फुल्लित दीसत हैं तिते ॥ १४ ॥
तिह नगरीको भूप महंत । श्रेणिक नाम महा गुणवंत ॥ चायक समकित धारी सोय । तासम भूप अवर नहिं कोय ॥ १५ ॥
मंडलीक भूपति सिरदार । बहुत तासु सेवैं दरवार ॥ परजा पालनको अति दत्त । नीतवान धरमी परतत्त ॥ १६ ॥
तास चेलना है पटनार । रूपवंत रंभा उनहार ॥ समकित द्रष्टिसुअति गुणवती । पतिव्रतती सीता सम सती ॥ १७ ॥
देव, शास्त्र, गुरुभक्ति धरेय । बहुविध नितसो पूज करेय ॥ विधिसों देय सुपात्रेदान । जिम चहुंविध भाषो भगवान ॥ १८ ॥
हीन दीन जन करुणा करी । पोखै नितप्रति ता सुंदरी ॥ भूपति चित मनुहारी सोय । तासम त्रिया अवर नहिं कोय ॥ १९ ॥
दंपति सुख नानाविध जिते । पुन्य उदै भोगतहैं तिते ॥ जिम सुरपति इंद्रानी जान । तिम श्रेणिक चेलना वखान ॥ २० ॥
महा मंडलेश्वर को राज । आसन चामर छतर समाज ॥ भूप चिह्न धरि सभा जुराय । बैठो अब सुनिये जोधाय ॥ २१ ॥

ढाल चाल ॥

इक दिवस मध्य वन मांहीं । भ्रमतो वनपालक आंहीं ॥ निज संबंधी परजाय । जिय वैर विरुद्ध जुथाय ॥ २२ ॥
ते एक चेत्रके मांही । ढिग बैठे केल करांही ॥ घोटक महिष इक जागा । बैठे धरि चित्त अनुरागा ॥ २३ ॥
मूसाकों हरष विलावै । हियमें गहि भीत खिलावै ॥ अहि नकुल दुहुं इकठांही । गैत्री पन अधिक करांही ॥ २४ ॥
इत्यादिक जीव अनेरा । निज वैर छांडि व्है भेरा ॥ बैठे लखिकै वनपाला । अचरज चिंता धरि हाला ॥ २५ ॥
मनमांहि विचारै एमे । एह अशुभ कीधो खेमे ॥ इम चिंतत भ्रमण करांही । वनपालक वनके मांही ॥ २६ ॥
विपुलाचल गिरके ऊपर । धरणेश सुरेश महीपर ॥ बहु विधजुत देव अपारा । जयजय वच करत उचारा ॥ २७ ॥
दसहूंदिश पूरित धाई । अपने चित अति हरपाई ॥ अंतिम तीर्थंकर एवा । श्री वर्धमान जिनदेवा ॥ २८ ॥
समवादि शरणलखि हरषित । धारो विचार इम चिंतित ॥ इह परस्परे जु चिरकाला । परजाय वैर दरहाला ॥ २९ ॥
सब मिल बैठे इकठामा । देखे में ऐ अभिरामा ॥ इस महा पुरुषकों जानी । माहातम मनमें आनी ॥ ३० ॥

सवैया इकतीसा ॥

मृगीसुत बुद्धिते खिलावै सिंहबाल कों, बघेराकों सुपुत्र गाय सुत जान परसै।
हंस सूनकों बिलाव हितधारकै खिलाव मोरनीं सरप परसत मन हरषै ॥
इन सब जंतुनको जन्मजात वैर सदा, भए मद गलित उखारो दोष जरसै
सम भावरूप भए कलुष प्रसमिगए, क्षीण मोह वर्धमान स्वामी सभा दरसै ॥ ३१ ॥

दोहा।

जयजय रवको कान सुन, बन पालक तत्काल । षटरितुके फल फूलले, कर धर भेट रसाल ॥ ३२ ॥
चल्यो नृपति दरबारकों, मनमें धरत उछाव । जा पहुंचे तिसहीधरा, जहँबैठो नरराव ॥ ३३ ॥
सिंहासन नग जड़ित पर, तिष्ठे श्री भूपाल । महामंडलेश्वर करहिं, फलदीन बनपाल ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥

वनपति भाषै सुनिहो देव । तुम शुभ पुन्य उदयते एेव ॥ विपुलाचल पर सनमति जान । समोशरन आयो भगवान् ॥३५॥
ऐसैं सुन आसनतें राय । उठतहि दिशि सनमुख सो जाय ॥ सप्त पेंड अष्टांग नवाय । नमस्कार कीनो हरषाय ॥ ३६ ॥
परम प्रीति पूर्वक मन आन । जिन आगमको उत्सव ठान ॥ भूषण बसन भूपतिहिं जिते । बनपालक को दीने तिते ॥३७॥
न्है खुशाल बनपालक जबैं । मन मांही इमचिंतवै तबै ॥ इतनेसौं कर रीते जान । कबहु न मिलिये सांची मान ॥ ३८ ॥
देव थान अरु राज दुवार । विद्यागुरु निजमित्र विचार ॥ निमित वैद्य जोतिषी जान । फल दीये फल भापति मान ॥३९॥
आनंद भेरि नगरमें थाय । सुन पुरवासी जन हरषाय ॥ नगर लोक परियन जन सबै । नृपश्रेणिक लेचाल्यो तबै ॥४०॥
विपुलाचल ऊपर शुभध्यान । समोशरण तिष्ठेभगवान् ॥ पहुंचो भूपति हरप लहाय । जिनपद नमिथुति करहिवनाय ॥४१
नयनजुगुल सुभसफल जुथयो । चरणकमल तुमदेखत भयो ॥ भोतिहुंलोक तिलकममआज । प्रतिभास्यो ऐसोमहाराज ॥
इहसंसार जलधियों जान । आयुरह्यो इकचलुक प्रमान ॥ जैजैस्वामी त्रिभुवन नाथ । कृपाकरो मोहि जान अनाथ ॥ ४३ ॥

मैं अनादि भटको संसार। भ्रमतें कबहु न पायो पार ॥ चहुंगति मांहि लहेदुख जिते ॥ ग्यानें मांहि दरशतहैं तिते ॥ ४४ ॥
तातें चरण आइयो सेव। मुझदुख दूरकरो जगदेव ॥ जैजै रहित अठारा दोष। जैजै भविजन दायक मोष॥ ४५ ॥
जैजै छियालीस गुणपूर। जैमिथ्यातम नासन सूर ॥ जैजैकेवलज्ञान प्रकाश। लोकालोक करनप्रतिभाश ॥ ४६ ॥
जै भवि कुमुद विकासन चंद ॥ जैजै सेवित मुनिवर वृंद ॥ जैजै निरावाध भगवान्। भगतिवंत दायक शिवथान ॥४७॥
जैजै निराभरण जगदीश। जैजै वंदित त्रिभुवन ईश ॥ ज्ञानगम्य गुण लियो अपार। जैजै रत्नत्रय भंडार ॥ ४८ ॥
जैजै सुखसमुद्र गंभीर। करम शत्रु नाशन वरवीर ॥ आजहि सीस सफल मोभयो। जव जिन तुमचरणन कों नयो ॥४९॥
नेत्रयुगल आनंदेजवै। पाद कमल तुमदेखे तवै ॥ आनन सफल भयो सुन धुनी। रसना सफल अवे थुतिभनी ॥ ५० ॥
ध्यान धरतहिरदे धन भयो। करयुग सफल पूजते थयो ॥ करपयान तुमलों आइयो। पदयुग सफलपनो पाइयो ॥५१॥
उत्तम वार आज जानियो। वासुर धन्य इहै मानियो ॥ जनम धन्य अवही मोभयो। पाप कलंक सवे भगिगयो ॥ ५२ ॥
भो करुणाकर जिनवर देव। भवभवमें पाऊं तुम सेव ॥ जवलों शिवपाऊं जगनाथ। तवलों पकरो मेरे हाथ ॥ ५३ ॥
इत्यादिक थुतिविविध प्रकार। गद्यपद्य सतसहस अपार ॥ मुनिगौतम गणधर नमिपाय। अवरसकल मुनिकों सिरनाय ॥
जिकेअर्जिका सभा मझार। श्रावक जनहि जुवुद्धि विचार ॥ यथायोग्य सवको नृप कही। फुनिनर कोठै वैठो सही ॥५५॥
जाके देव भगति उतकिष्ट। तासों ताके गुरुको इष्ट ॥ जिन भाषी वाणी सरधान। महा विवेकी अति परधान ॥ ५६ ॥
तास महातमको अधिकार। अरुताके गुणको निरधार ॥ वरणन कोकवि समरथ नांहि। वुधजन जानहु निजचितमांहि ॥
ता पीछें अवसरको पाय। गौतमप्रतिनृप प्रश्न कराय ॥ देशव्रती श्रावककी जान। त्रेपन क्रिया कहूंहुं वखान ॥ ५८ ॥

दोहा।

होनहार तिर्थेश मुन, इम भाषै भगवंत। त्रेपन किरया तुझप्रतें, कहूं विशेष विरतंत ॥ ५९ ॥

इह त्रेपन किरया थकी, सुरग भक्तिसुख थाय। भविजन मन, वच, कायशुध, पालहु चित हरपाय ॥ ६० ॥

त्रेपन क्रिया नाम ॥

उक्तंचगाथा॥गुणवयतवसमपडिमा दानंजलगालणंचअणच्छमियं ॥ दंशणणाणचरित्तं किरियातेवणसावया भणिया ॥

॥ सवैया इकतीसा ॥ मूल गुण आठ अणुव्रत पंचपरकार, शिक्षाव्रत चार तीन गुणव्रत जानिए । तपविधि बारह और एक सम्यभाव ग्यास, प्रतिमा विशेष चार भेद दान मानिए॥ एक जल गालण अणथमियएकविधि, दृगग्यान चरण त्रिभेद मन आनिए । सकल क्रिया को जोर त्रपन जिनेश कहे, अब याको कथन प्रत्येकतें बखानिए ॥ ६२ ॥

आठ मूलगुण चौपाई ॥

इसत्रेपनकिरयामें जान । प्रथम मूलगुण आठबखान ॥ पींपर,बर,ऊंबर फलतीन । पाकरफलरुकठुंबरहीन ॥६३॥
मद्यमांस मधुतीनमकार । इनआठोंको करपरिहार ॥ अतीचारजुततजअणचार । आठमूलगुणधारीसार ॥६४॥
त्रसअनेक उपजेंइनमांहि । जिनभाष्योकछुसंशयनांहि ॥ अरुजे हैं बाईस अभ्यक्ष । इनको दोषलगैपरतक्ष ॥ ६५ ॥

अथबाईस अभक्षदोष वर्णन चौपाई ॥

बोरा नाम गडालख जाण । अनछाना जलकोबंधान ॥ घोरवरकौं त्रिदल कहंत । खातां पंचेंद्री उपजंत ॥ ६६ ॥
निशि भोजन खाये जोरात । अरुवासी भषिए परभात ॥ वहु बीजा जामें कण घणा । कहिए प्रगट तिजारा तणा ।६७।
जिहिं फल बीजनकै घरनाहि । सो फल बहुबीजो कहुवाहि ॥ वेंगण महापाप कोमूर । जैखावें तेपापी क्रूर ॥ ६८ ॥
संधाणे की विधि सुनएह । जिम जिनमारग भाषीजेह ॥ राई लूण आदि बहुदर्व । फल फूलादिकमें धरसर्व ॥ ६९ ॥
नांखे तेलमांहि जैसही । नाम अथाणै तासौं कही ॥ तामैंउपजे जीव अपार । जिन्हा लंपट खायगंवार ॥ ७० ॥
पाप धर्म नहिजाने भेद । ता वसि नरक लहै बहुभेद ॥ नींबू लूण मांहि साधिये । वाड़िरा वड़ी अरु रांधिए ॥ ७१ ॥
लूण त्राछि जलमें फलमार । कैरा बिक्र जोखाय संवार ॥ उपजै जीव तासमें घणे । कवि तसु पाप कहांलो भणे ॥ ७२ ॥
मरजादा बीतै पकवान । सो लखि संधाणे मतिमान ॥ त्याग करत नहिं ढीलकरैहु । मनवचक्रम जिनवचहि फलेहु ॥७३॥

जो मरजादा कीविधिधार। भाष्यो जिनआगम अनुसार ॥ जिहमें जलसरदी नहिरहै। तिस मरजादा लखिभविइहै ॥७४॥
सीतकाल मांहे दिनतीस । पन्द्रह ग्रीषम विस्वावीस ॥ बरषारितु भाषे दिनसात । यों सुणियो जिनवांणी आत ॥७५॥

उक्तंचगाथा ।

हीमंतेतीसदिणा । गिण्हेपणरसदिणाणिपकवणं ॥ वासासुयसत्तदिणा । इयभणियंसूयजंगेहिं ॥ ७६ ॥

चौपाई ।।

तल्यीतेल घृतमें पकवांन । मीठे मिलियो व्है जोधांन ॥ अथवा अन्नतणोही होय । जल सरदी तामैकछु जोय ॥ ७७ ॥
आठपहर मरज्याद बखान । पाछें संधाणा सम जान ॥ भुजिया वड़ाकचौरी पुवा । मालपुवा घृततल जुहुवा ॥ ७८ ॥
जुमक बड़ीलूचई जान । सीरो लापर्सी पुरी बखान ॥ कीएपीछें सांजलो खाहिं । रातवसैं तिन राखे नाहिं ॥ ७९ ॥
इनमें उपजे जीवअनेक । तिनही तजो धारविवेक ॥ तरकारी पाटो षी चड़ी । इन मरजाद सुसोला घड़ी ॥ ८० ॥
रोटी भात थकीलों सांज । खइये भवि मरजादा मांज ॥ पीछें सीला वासीबोष । तजो भव्य जे शुभ बृष पोष ॥ ८१ ॥

छंदचाल ॥

केते नर ऐसे भाषैं । हम नही अथाणो चाषैं ॥ कैरी नींबू के मांही । नाना विध वस्तु मिलाहीं ॥ ८२ ॥
सरसों कोतेल मंगावैं । सव लेकर अगनि चढ़ावैं ॥ ल्योंजीतस नाम कहाई । जीभ्या लंपट अधिकाई ॥ ८३ ॥
ताको निरदूषण भाषे । निरबुद्धी बहु दिन राखै ॥ ताके अघको नहीं पारा । सुनिये कछुइक निरधारा ॥ ८४ ॥
सवविधि छोड़ी नहीं जाही । खाइये तत्काल कराही ॥ अथवा सवेरलों सांजे । भखिये चहुंपहर हि मांजे ॥ ८५ ॥
पाछे अथाणा के दोषा । जानो त्रसजीवनि कोषा ॥ अथाणा को जो त्यागी । याकों छोडै वड़भागी ॥ ८६ ॥

दोहा।

किसनसिंघ विनती करै, सुनो महा मतिमान । याहि तजै सुख परम लहि, भुंजै दुख परधान ॥ ८७ ॥

चौपाई–पंचउदंबरको फल त्याग । करइ पुरुष सोई वड़भाग ॥ अरु अजाणफलदोष अपार। मांस दोष खायें अधिकार ८८
कन्दमूल में जीव अनन्त ।ईसू अग्रभाग लखि संत ।।माटी माहिं असंखित जीव। भविजन तजिये ताहिसदीव ८९

मुहरोआफू आदिक और। खाएमाण तजै तिहि ठौर ॥ जिहि आहारकर जो मरजाय। सोऊ विषदूषणको थाय ॥
आमिष महा पापको मूर। जीवघाततैं उपजोक्रूर ॥ मन बच काय तजै इह सदा। सुरशिव सुखपावै जिनवदा ९०
मधुमाखी उच्छिष्ट अपार। जीवअनन्त तासनिरधार ॥ ताको खावैधीवर भील। सोई हीननर पापकुशील ९१
संतपुरुष नहिं भेटैं वाहि। एक कणातैं धरम नसाहिं ॥ लूण्यों दोष महा अधिकार। ताहिभखे नहिं भविसुखकार ९२
मदिरा पान किए बेहाल। मात भगनि तियसम तिहिकाल ॥ मादिक वस्तु भांगिदेआदि। खातजमारो ताको वादि ९३
फल अतितुच्छदन्त तलिदेय। ताको दूषण अधिककहेय ॥ पालो राति जमावेकोय। अरुताको खावंबुधिखोय ९४
तामें पड़ैं अधिक त्रस जीव। भविजन छाड़ो ताहि सदीव ॥ केला आंब पालमें देह। नींबू आदिक फल गनिलेह ९६
जाके खाये दोष अपार। बुधजन तजैं न लावैंबार ॥ ए बावीस अभक्ष जिनदेव। भाषै सो भविजन सुनियेव ९७
इनहि त्यागकर मन बच काय। ज्योंसुर शिवसुख निहचै थाय ॥ फूलोधान अवर सबफूल। त्रसजीवनको जानों मूल ९८
साकपत्र सब निंद्य बखान। कुंथादिक करिभरियाजान ॥ मास त्यजनव्रत राखोचहैं। तो इनसबको कबहु न गहैं ९९

बेदल वर्णन

भोजन विदलतणीं विधि सुनो। जिनवर भाषोनिहचैमुनो ॥ दोयप्रकार विदलकी रीति। सो भविजन आनो धर प्रीत १००
प्रथम आकाष्टतणीं विधिएह। श्रावक होव तजै धरनेह ॥ सुनहु आकाष्टतणीं विधि जान। मूंग मटर अरहर अरु धान १
मोठ मसूर उड़द अरु चणा। चौला कुलथ आदि गिन घणा ॥ इतने नाज तणी है दाल। उपजै वेलि थकीसानाल २॥
खरबूजा काकड़ी तोरई। टींडसी पेठो पलवल लई ॥ सेम करेला खीरा तणा। बीजा विधि फल कीजे घणा ३ ॥
तिनको दालथकी मिलवाय। दही छाछि सो विदल कहाय ॥ मुखमे देत लाल मिलिजाय। उतरत गलै पंचेंद्री थाय ४
नाज वेलि तो ऊपजै जोय। सो आकाष्ट गनियो भवि लोय ॥ छाछ तणो फल बीजइ जान। तिनकी दाल होय सो मान ५
छाछ दही मिल विदलहवन्त। यों निहचै भाष्यो भगवन्त ॥ चारोली पिसता वादाम। बोल्या बीज सांगरी नाम ६
इत्यादिक तरु फल केमाहिं। बीज दुफारा मींजी थाहि ॥ छाछ दही सों मेलिरुखाय। विदल दोष तामें उप जाय ७

गलै उतरता मिलिहै लाल । पंचेंद्री उपजै तत्काल ॥ ऐसो दोष जान भविजीव। तजिए भोजन त्रिदल सदीव ८ ॥
सांगर पिठो रतोरई तणा । मूरख करै राइता घणा ॥ तिहका अघ को पार न कोय । जो खाहै सो पापी होय ९ ॥
तजिहै विदल दोय परकार । सो निहचै श्रावक निरधार ॥ ककड़ी पेठो अरु खेलरा । इनको छाछ दही में धरा १० ॥
राई लूण मेल जिहि माहि । करे रायता मूरख खाहिं ॥ राई लूण परै निरधार । उपजै जीव सिताब अपार ११ ॥
राई लूण मिलो जो द्रव्य । ताहि सरवथा तजिहै भव्य ॥ कपड़ै बांध दही को धरै । मीठो मेल शिखरणी करै ॥ १२ ॥
खारिख दाख घोल दधिमाहिं । मीठो मेल रायता खाहिं ॥ मीठो जब दधिमांहि मिलाहि । अन्तमु हूरत त्रस उपजाहि १३
यामें मीठा जुत जो दही । अन्तर मुहूर्त्त माहे सही ॥ खावो भविजन को हित दाय । पीछै सन्मूर्छन उपजाय १४ ॥

॥ उक्तंचगाथा ॥

इरक्खुदहीसंजुत्तं भवंतिसमुच्छिमाजीवा । अन्तो मुहूत्तमभ्भे तह्माभणंतिजिणणाहो १५ ॥

॥ दोहा ॥

कांजी कर जेखात हैं, जिह्वा लंपट मूढ़ । पाप भेद जाने नहीं, रहित विवेक अगूढ़ ।
अब ताकी विधि कहत हों, सुणी जिनागम जेह । ताहि सुणत भविजन तजो मनका सकल संदेह ॥ १७ ॥

चौपाई

तातै जल अरु छाछ मिलाय। तामें सौंले लूण डराय ॥ भुजिया वड़ा नाख तिहि माहिं । खावै बुद्धिहीन सो ताहि १८
प्रथम छाछ कांजी के जाहि । तातो जल तामाहि पराय ॥ अवर नाज को कारन थाय । उपजै जीव न पार लहाय १९
याकी मरयादा अति हीण । तातें तुरत तजो परवीण ॥ ठंढी छाछ तास में जाए । तातें विदलहुं दोष बखाए २० ।
प्रथमही छाछ ऊष्ण अति करै । अरु वैसेही जल कर धरै ॥ अब दोऊ अति सीतल थाय । तब दुहुंउनको देय मिलाय २१
अगिन चढ़ाय गरम फिरि करै । जब वह सीतलताको धरै ॥ भुजियादिक तामें दे डार । तसु मर्यादाको इम पार २२ ॥

उक्तंच गाथा

चउएइंदीविगिछह अट्ठहतिगिणि भणंति दह। चौरिंदीजीवड्ढा बारह पंच भणंति। २३॥

छन्दचालकी ढाल।

जवचार महूरत मांही। एकेंद्री जीव उपजाहीं। बारा घटिका जब जाये। वे इन्द्री तामें थाये २४॥
बीते तबही दुय जामा। तब होवै तेइन्द्री धामा॥ दुय अर्धपहर गति जानी। उपजै चऊ इन्द्री प्राणी २५॥
गमियां दश दोय महूरत। पंचेंद्री जिय करि पूरत॥ हैहै नहिं संसै आणी। यां भाषै जिनवर वाणी २६।
बुध जन ऐसो लखि दोषा। जिय तत्क्षण अघ को कोषा॥ कोई ऐसे कहिवे चाही। खापे विन जन्म गवाही २७
मर्याद न सधि हैं मूला। तजिये है व्रत अनुकूला। खाय को पाप अपारा। छोड़ो शुभ गति है सारा २८।

सवैया

मूढ मुहै इह कुजिय भेद गहै मनि खेद धरो विकलाई। खात सवाद लहै अहलाद महा उनमादरु लंपटताई॥
पातक जार महा दुख धार सहै लखि ऐसिय भव्य तजाइ, जे मतिवन्त विवेकी सन्त महा गुणवन्त जिनन्द दुहाइ २९॥

इति कांजी निषेध वर्णनम्॥

अथ गोरस मर्यादा कथन।

छन्दचाल।

अब गोरस विधि सुन एवा। भाषो श्री जिनवर देवा। दोहत महिषी जब गाये॥ तबते मर्याद गहाये॥ ३०॥
इक अन्तर मुंहूरत ताईं. जीव न तामें उपजाई॥ राखे जाको जो खीरा॥ वैसेही जीव गहीरा ३१॥
उपजै सन्मूर्च्छन जासे। कर जतन दया धर तासे॥ दोहे पीछे ततकाला॥ धर अगनि उपरि ततकाला ३२॥
फिर तामें जावण दीजे। तब तै वसु पहर गणीजे॥ जबलों दधि खायो सारा॥ पीछे तजिये निरधारा॥ ३३॥
दधि को धरिकै जमथाणी। मथि है जो वणिता स्याणी॥ मथितैंही जल जामाही॥ डारे फिरि ताहि मथाही ३४॥
वह तक्रपहर च्हहुंताई। खामें को जोग कहाई॥ मथिय पीछे जल नाखे॥ वसु वार लगे तिहि राखे॥ ३५॥

विन छाणों जल जिमजाणों । तैसीहीं ताहि वखाणों ॥ तातें जे करुणाधारी । खावैं दधि तक्र विचारी ३६ ॥
मरयादाउलंघ जु खाहीं । मदिरा दूषण शक नाहीं ॥ निज उदर भरण को जेहा । वेचे दधि तक्र जु तेहा ॥ ३७ ॥
बैपाप महा उपजाहीं । या मैं कुछ संशय नाहीं ॥ तिनको जु तक्र दधि लेई । खावैं मतिमंद धरेई ॥ ३८ ॥
अरकरय रसोई जातें । भाजन मध्यम व्हैतातें ॥ मरयादा हीण जो खावे । दूषणको पार न लावै ॥ ३९ ॥
इहदहीं तक्र विधि सारी । सुनिये जो भविव्रत धारी ॥ किरिया अरुजो व्रत राखे । दधितक्र नपरको चाखे ॥ ४० ॥
अव जावण की विधि सारी । सुनिय भवि चित्त अवधारी ॥ जब दूधदुहाय घर लावे । तवही तिहि अगनि चढ़ावे ॥ ४१ ॥
अवटाय उतार जुलीज । रुपय तब गरम करीज ॥ डारैं पयमांहे जेहा । जमिहैं दधि नहिं संदेहा ॥ ४२ ॥
बांधै कपड़ा के माहीं । जब नीरनबुंद रहाहीं ॥ तिहकी देवड़ी सुकाई । राखे सो जतन कराई ॥ ४३ ॥
जलमाहीं धोख सो लीज । पयमांहे जांवण दीज ॥ मरयादा भाषी जहा । इहजावण मुं लखिलेहा ॥ ४४ ॥

इति गौरसमरयादा संपूर्णम् ।

अथचर्माश्रित वस्तु दोष वर्णनम् ॥

दोहा ॥

चरम मध्यकीं वस्तुको, खात दोष जो होय । ताको संक्षेपहि कथन, कहुं सुनो भविलोय ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

मूयें पशुको चरम जु होय । भीटैनर चंडाल जु कोय ॥ ता चंडालहि परसत जवै । छोतिगिने सगरेनर तवै ॥ ४६ ॥
घर आये जल स्नानकरेय । एती संख्या चितहि धरेय ॥ पशू खालके कूपामांहि । घिरत तेल भंडसाल करांहि ॥ ४७ ॥
अथवा सिरपर धरकर ल्याय । वचे सो वाजारहिं जाय ॥ ताहि खरीद लेयघर मांहि । खाव सबै शंककछु नाहिं ॥ ४८ ॥
तामें उपजें जीव अपार । जिनवाणी भाष्यो निरधार ॥ जैसैं पशू चाम के मांहि । घृत जल तेल डार हैं नांहि ॥ ४९ ॥
ताही कुलके जीव उपजंत । संख्यातीत कहैं भगवंत ॥ ऐसो दोष जाणिकैं संत । चरम वस्तु तुम तजहु तुरंत ॥ ५० ॥

कोई मिथ्याती कहैएम । जिय उत्पत्ती भाषो केम ॥ जीव तेल घृतमें कहुं नांहि । चरम धरैं करउपजैं कांहि ॥ ५१ ॥
ताके समभावण को कथा । कही जिनेश्वर भाषूं यथा ॥ दे दृष्टांत सुदृढ़ता धरी । मिथ्यादृष्टी संशयपरी ॥ ५२ ॥
घृत जल तेल जोगतें जीव । चरम वस्तुमें धरत अतीव ॥ उपजै जैसें जाको चाम । सो दृष्टांत कहूं अभिराम ॥ ५३ ॥
सूरज सन्मुख दरपण धरै । रूई ताके आगे करै ॥ रविदरपण को तेज मिलाय । अगन उपज रूई वलिजाय ॥ ५४ ॥
नहीं अगनि इकली रूमांहि । दरपन मध्य कहुं है नांहि ॥ दुहुयनि को संयोग मिलाय । उपजै अगनि न संशै थाय ॥ ५५ ॥
तैई चामके वासन मांहि । घृत जल तेल धरैं सक नांहि ॥ उपजैं जीव मिलैं दुहुंथकी । इह कथनी जिनमारग वकी ॥ ५६ ॥
ऐसैं लखकै भीलचमार । धीवर रैगर आदि चंडार ॥ तिनके घरके भाजन तणो । भोजन भखैं दोष तिम तणो ॥ ५७ ॥
तैसो चरम वस्तुमें दोष । दुरगति दायक दुखको कोष । चरमवस्तु भक्षण करिजेह । मांसभखी सादृशहै तेह ॥ ५८ ॥
तुरत पशू मूएकी चाम । करिकै तास भाथडी ताम ॥ भरैहींग तामें मिलजाय । खातां मांस दोष अधिकाय ॥ ५९ ॥
जाके मांस त्याग व्रतहोय । हींग भक्ष्य नहिं खावे कोय । हींग परै जहि भाजन मांहि । सो चमार वासण समजाहि ॥ ६० ॥

सवैया।

चामड के मध्य वस्तु ताको जो आहार होय, अतिही अशुद्धताकि मिथ्यादृष्टी खायहै । दातारके दीए विन जिन इच्छा होय एसो, असन लहाय नाम जतीको कहाय है ॥ तिनवहिरातमांसो कहाकहै और सुनो, वणियो सो भोजन क्रियातैं हीणथायहै । हरित अनेक जुत मारग धरमवंत, शुद्धता कहाय भष धरैं यागहाय है ॥ ६१ ॥

दोहा।

जीमत भोजनके विषैं, मूत्रोजनावर देख । तजै नहीं वह असनको, पुरजन दुष्ट विशेष ॥ ६२ ॥
एचाख्यों इकसे कहे, यामें फेर नसार । अति लंपट जिन्हा तणो, लोलप चित्त अपार ॥ ६३ ॥

चौपाई।

हटवा तणो चून अरुदाल । व्रतधर इनको खावो टाल ॥ वींधो अन्न पीसदल ताहि । दया रहित वेचनहैं जाहि ॥ ६४ ॥

जीव कलेवर थानक सोये । चलतेंहु तामाहे होय ॥ परम विवेकी है जो पुनी । माँस दोष लख त्यागैं सही ॥ ६५ ॥
नीच लोक घरको घृत दुग्ध । तजहु विवेक जाणिए अशुद्ध ॥ सांढिदूध दोहततें लेय । तातो होय तहां सो देय ॥ ६६ ॥
निंद्य वस्तु तिन उपमा इसी । कहिए मास बराबर जिसी ॥ आमिषकी उपमा इहवीर । जैसो सांढि तणो है खीर ॥६७॥
यातैं सांढि दूधको तजो । माँस तजन व्रत निहचै भजो ॥ संख तणो चूनों गोमूत्र । महानिंद भाषो जिनसूत्र ॥ ६८ ॥
कालिंगडा बीया तोरई । कदू लौकि जामांनिई ॥ इत्यादिक फलकाय अनंत । तिनको तजये तुरत महंत ॥ ६९ ॥
फलीय कचारि फली कचनार । फूल सुहजणा आदि अपार ॥ महा निंद जीवन को धाम । तजिये तुरत विवेकीराम ॥७०॥

दोहा।

त्रेपन किरयाके विषै, प्रथम मूलगुण आठ । तिन वर्णन संक्षेपते, कथो पूर्व ही पाठ ॥ ७१ ॥
जिनबानी जैसी कही, कथा संस्कृत तेह। भाषा तिह अनसारतैं, वंध चौपई एह ॥ ७२ ॥
पंचउदुंबर फल त्यजन, मकारादि फुनितीन । महा दोष कर जानके, तुरत तजहु परवीन ॥ ७३ ॥

सवैया।

पीपर और वड फल उंबर कटुंबरहु पाकेपरिपांच उदुंबर फल जाणिये । मद्य मांस मधु तीन मकरादि अतिहीन सुनहु परवीन सबै आठए बखानिये ॥ इनही के दोष जेते तामें पाप दोषतेते कहैन संतोष तेते नर खात मानिए । इनिके तजे जोमन वच कूम भव्य जीव आठ मूलगुणके सधैया मन्य आनिये ॥ ७४ ॥

❀ अथ रसोई वा न्हाको परिहिंडाकी वगेरे वर्णन ❀

चौपाई।

जाघर मांहि रसोई होय । तहां तानिये चंदवो लोय ॥ अवर परहिंडा ऊपर जोन । उंखल चाकी है जिहि थान ॥ ७५ ॥
फटके नाज नवीणे जहां । चून छानिवो थानक तहां ॥ जिस जागह जीमभनित होय । सयनकरण जागा अवलोय ७६
सामायक कीजे जिहि धीर । एनव थानक लख वरवीर ॥ ऊपर वसने जहां ताणिये । श्रावक चलण तहां जाणिये ७७ ॥

चाकी ऊखल कै परिमाण। ढकणा कीजै परम सुजाण॥ स्वान बिलाई चाटैं नाय। कीजे जतन इसीविधि भाय॥७८॥
खोट लिये मूसलतें नाज। धोय इकान्त धरो बिनकाज॥ छाज चालणा चालणी तीन। चामतणा तजिये परवीण॥७९॥
चरम वस्तुको रागी होय। इनको कबहु न भेंटे सोय॥ दिनमें खोटैं पीसै नाज। सो खाना किरिया सिरताज॥८०॥
नाज नजर ते सोध्यो परै। तातैं करुणा अति विस्तरै॥ निसिको जो पीसैं अरु दलै। जातें करुणा कबहुं न पलै॥८१॥
चाकी गालै चून रहाय। चींटी अधिक लगै तसु आय॥ निसिको पीस्यो नजर न परै। ताके दोष कौन ऊचरै॥८२॥
नाजमाहिं ऊपरि तें कोय। माणी आयरहे जो होय॥ सोई नजर न आवै जीव। यातैं दूषण लगैं अतीव॥८३॥
एतें निशि पीसण के दोष। जान लेहु भवि अघके कोष॥ ताते निसि पीस्यो नहिं भलो। त्यागोते किरियाजुत चलो॥८४॥
चूनतणी मरयादा कहूं। जिनमारग में जैसे लहूं॥ सीतकाल दिन सात बखान। पांच दिवस ग्रीषम ऋतु जान॥८५॥
वरषाकाल माहिं दिन तीन। ए मरयादा गहो मवीन॥ इन उपरांत जानिये इसो। दोष चलित रस भाष्यो तिसो॥८६॥
निसिको नाज भेय जो खाय। अंकूरा तिनमें निकसाय॥ जीव निगोद तणो भंडार। कन्दमूल सब दोष अपार॥८७॥
ताते जिते विवेकी जीव। दोष जाणके तजहु सदीव। श्रावक की है घर जो त्रिया। किरिया माहि निपुण तसु हिया॥८८॥
ईंधन सोध रसोई माहिं। लावे तासों असन कराहिं॥ तातैं पुन्य लहै उत्कृष्ट। भव भव में सुख सहै गरिष्ट॥८९॥

अथ मुरब्बादिक वर्णन ॥ चौपाई ॥

कोऊ मान बड़ाई काजे। अरु जिव्हा लोलपुता साजे॥ खांडतणी चासणी कराय॥ दाख छुहारा माहिं डराय॥९०॥
नाना भांति अवरभी जान। करइ मुरब्बा नाम बखान। कैरी अगनि ऊपरि जदवाय। खान्ड पातमाहे नखवाय॥९१॥
कई नाम तसु कैरी पाक। करवावै तसु अशुभ विपाक॥ तिनकी मरजादा वसु जाम॥ व्रत धरे पीछे नहिं काम॥९२॥
जेतो ऊष्ण नीरकी वार। तेती इन सख्या निरधार॥ रहित विवेक मूढता जान। राखे घरमें बहु दिन आन॥९३॥
मास दमास छमास न ठीक। वरस अधिक दिनलों तहकीक॥ काहू में तो पेस करेय। मांगे तिनको मंगा देय॥९४॥
जातें लखै बड़ाई आप। तिस समान कछु अवर न पाप॥ मदिरा दोष लगै सकनाहिं। ताते भविजन य हितजाहिं॥९५॥

जो मनमें खानेको चाव । खावे जीमत वार कराव ॥ अथवा कीए पाछै ताम । लैनो जोग आठही जाम ॥ ९६ ॥
सांझीकार सकों अवटाहि । राखे नरम चासणी ताहि ॥ घागर मटकी भरके राख । ताको बहुदिन पीछे चाख ॥ ९७ ॥
ताहूं में मदिरा को दोष । महानन्त जीवनिको कोष ॥ अधिको कहा करो आलाप । अहो रात्रि खीछे वहु पाप ॥ ९८ ॥
याको षटरस नाम जु कहैं । पुन्यवान कवहुं न गहैं ॥ मन वच तन इनको जो तजै । मदिरा त्याग वरत सो भजै ॥ ९९ ॥

दोहा ।

जे विशुद्ध मदिरा त्यजन, पालैं वरत महन्त । मरजादा ऊपर गए, तुरत त्यागिए सन्त ।

अथ रसोई वा भोजनकी क्र्याबर्णन ॥ चौपाई ॥

होत रसोई थानक जहां । खिचड़ी रोटी भोजन तहां ॥ चावल और विविधि प्रकार । निपजै श्रावक के घरसार ॥ १ ॥
जीमण थानकके जो परमाण । तहां जीमिए परम सुजान ॥ रांधण के भाजन हैं जेह । चोका बाहिर काढ़ि न तेह ॥ २ ॥
जो काढै तो माहि न लेह । क्रियावन्त सो नाहि सनेह ॥ असन रसोई बाहिर जाय । सो वटवोय नाम कहाय ॥ ३ ॥
अन्य जाति जो भीटै कोय । जिह भोजन को जीमे सोय ॥ शूद्रनिभेले जीमें जिनो । दोषवखान्यो है वह तिसो ॥ ४ ॥
अन्य जाति के भेले कोई । असन करै निरबुद्धी होई ॥ यातें दूषण लगैं अपार । जिमि परजूठि भखै मतिछार ॥ ५ ॥
निज सुत पिता व भ्राता जान । साचो मित्रादिक जो मान ॥ भेलैं तित कै जीमण जदा । किरिया मति वरणो नहिं कदा ६
तोपर जात तणी कहा वात । क्रियाकान्ड ग्रन्थन विख्यात ॥ भाजन निज जीमनको जेह । मांग्यो परको कवहु न देह ७
अरु परको वासण में आप । जीमंते अति वाढै पाप ॥ ग्रामान्तर जो गमन कराय । वसिहै ग्राम सरायां जाय ॥ ८ ॥
मांगे वासन खाव वाहि । जो सीधो घरहू को आहि ॥ खाये दोप लगैं अधिकार । मांस वरावर फेर न सार ॥ ९ ॥
गूजर मीणा जाट अहीर । भील चमार तुरक वहु कीर ॥ इत्यादिक जे हीण कहात । तिन वासनमें भोजन खात १०
ताके घरको वासण होई । ताते तजो विवेकी लोय ॥ श्रावक कुल अति लह्यो गरिष्ट । क्रियाविना जो जानहु भिष्ट ११
जे बुध क्रिया विषै परवीन । अन्य तणो वासण गहि हीण ॥ तामें भोजन कवहु न करै । अधिको कष्ट आयजो परै १२

जैन धरम जाके नहिं होय । अन्यमती कहियेनर सोय ॥ निपज्यो आसन तास घरमाहिं ॥ जीमणयोग वपाणो नाहि १३
अरु तिनके घरहुको कीयो । खानों जिनमतमें वरजीयो ॥ पाणी छाणि न जाणै सोय। सोधणनाज विवेक न होय १४
ईंधण देख न वालो जिके । दया रहित नर जाणों तिके ॥ जीव दया पटमत में सार । दया विना करणी सवछार १५
यातें जे करुणा प्रतिपाल । असन आन घरि कर तजि चाल ॥ निज ब्रत रक्षकहै नर जेह । यों जिनवर भाष्यौ संदेह १६

छन्द चाल

जे आठ मूल गुण पालै । इतने दोषनि को टालै ॥ दीजे जिम मन्दिर नींव । गहिरी चौंडी अति सींव ॥ १७ ॥
तापर जो काम चढ़ावै । वहु दिन लों डिगण न पावै ॥ तिम श्रावक ब्रत ग्रह केरी । इनि विनिही नीच अनेरी १८
दरशन जुत पुफलि आवै । बृत मन्दिर अडिग रहावै ॥ याते जे भविजन प्राणी । निहचै एह मनमैं आणी ॥ १९ ॥
दृग गुण विनु सब बृत धारी । प्रतिमा नहि कारिज कारी ॥ प्रतिमा ग्यारा जो भेद । आगे कहिहों तजि खेद ॥ २० ॥

अडिल्ल छन्द ।

क्रिसनसिंह यह अरज करे भविजन सुनो । पालो वसु गणमूल निजातम को गुणों ।
दरशन जुत ब्रत त्रिविधि शुद्ध मनलाई हो । सुरग सम्पदा भुंजि मोक्ष सुख पायहो ॥ २१ ॥ इति ॥

❀ अथ रजस्वला स्त्रीकी क्रिया लिख्यते ❀

चौपाई ।

अवर कथन इक कहनो जोग । सो सुनलीज्यो जे भविलोग ॥ अवैक्रिया प्रगटी वहु हीण । यातें भाषूं लखहु प्रवीन ॥ २२॥
ग्रंथत्रिवर्णाचार जु माहिं । वरणन कीयो है अधिकाहिं ॥ मतलव सो तामें इक जान । मैंसंक्षेप कहूं सुखदान ॥ २३ ॥
रितुवंती वनिता जब थाय । चलण महा विपरीत चलाय ॥ प्रथम दिवस तेही ग्रह काम । देय बुहारी सिगरे धाम ॥ २४॥
अवर हाथ मांही ले छाज । फटके सोधै वीणे नाज ॥ बालक कपड़ा पहिरा हाय । वाहि खिलावै सगरे होय ॥ २५ ॥
आपसमें तिय हूजे सबै । नकरे शंका भींटत जबै ॥ मांजै सब हँडवाई सही । जीमण की थाली हूगही ॥ २६ ॥

जिह थाली में सिगरे खांहि । ताहीमें वा असन कराहि ॥ जलपीवे को कलस्यो एक । सबही पीवै रहित विवेक ॥ २७ ॥
क्रियाकोष ग्रन्थन में कही । रितुवंती जो भाजन लही ॥ ग्रह चंडार तणांको जिसो । वोहू भाजन जाणो तिसो ॥ २८ ॥
और कदा कहियै अधिकाय । वह वासण माहे जो खाय ॥ ताके दोष तणो नहिं पार । क्रिया हीण बहुजाणि निवार ॥ २९ ॥
निसिका पति सोवतहै जहां । वाहू सयन करतहै तहां ॥ दुहुं आपसमें परसत देह । यामें मति जाणो संदेह ॥ ३० ॥
कोऊ विकल महा कुमतिया । दुय तीजे दिन सेवैं तिया ॥ महापाप उपजावै जोर । यासम अवर न क्रिया अघोर ॥ ३१ ॥
महा म्लानि उपजै तिहिवार । चमारणिहूं ते अधिकार । जाको फल बेतुरत लहाय । जो कहुं उस दिन गरभ रहाय ॥ ३२ ॥
भाग्य हीण सुत बेटी होय । पर तिय नर सेवे बुधिखोय ॥ क्रोधित व्है कह अति बच हीक । जदवा तदवा कहै अलीक ॥ ३३ ॥
रितु वंती तिय किरिया जिसी । भाषी भवि सुणि करिए तिसी ॥ वनिता धर्म होत जब बाल । सकल कामतजिके तत्काल ॥ ३४ ॥
ठाम एकांत बैठिहैं जाय । भूमि तृणा संथारो कराय ॥ निसि दिन तिह पर थिरता धरै । निद्रा आये सयन जुकरै ॥ ३५ ॥
इह विधि निवसे वासर तीन । तबलों एती क्रिया मवीन ॥ प्रथमही असन गरिष्ट नकरै । पातल अथवा करमें धरै ॥ ३६ ॥
माटी वासण जलका साज । फिरिवै है आवै नहिं काज ॥ इहभाजन जल पीवन रीति । अवर क्रिया सुनिये धर प्रीति ॥ ३७ ॥

छंदचाल ।

दिनमें नहि सयन कराहीं । हासि न कौतूहल थाहीं ॥ तनि तेल फुलेल नलावे । काजल नयना नअंजावे ॥ ३८ ॥
नषको नहिं दूर करावे । गीतादिक कवहु नगावे ॥ तिलक नदे रोली केशर । कर पग लप दे नमहावर ॥ ३९ ॥
एक दिवस तीनलो भोग । रितुवंती नकरीयो जोग ॥ पुरुषन को नजर न धारे । निज पतिहु को ननिहारे ॥ ४० ॥
वनितान्है धरम जु निसिको । दिन गिण लीजे नहिं तिसको ॥ सूरज नजरों जो आवे । वह दिन गिणती में लावे ॥ ४१ ॥
दूजे दिन स्नान कराही । धोवी कपड़ा लेजाही ॥ संकोच थकी नखवाई । औरन की नजर न आई ॥ ४२ ॥
तीजे दिन जलतें न्हावे । तनु वसन ऊजले लावे ॥ चउथे दिन स्नान करंती । मनमें आनंद धरंती ॥ ४३ ॥
तन वसन ऊजले धारे । प्रथमहि पतिनयन निहारे ॥ निसि धरै गरभ जोयाम । पति सूरत सो अभिराम ॥ ४४ ॥

निपजावै उत्तम बालक । बड़भाग जनइ प्रतिपालक ॥ ताते इह निहचै जानी । चौथे दिन स्नान जु ठानी ॥ ४५ ॥
पतिवरत त्रिया जो पारे । निज पति को नयन निहारे ॥ नर अवर नजर जो आवे । तस सूरत सम सुत थावे ॥४६॥
शीलहि कलंक को लावे । अपजस जग पडह बजावे ॥ यातैं सुभ बनिता जेहैं । किरिया जुत चाले ते हैं ॥ ४७ ॥
निजपति बिन अवर न देखे । सासू ने नाहिं मुख पेखे ॥ ताके घर मांही जाणो । लछमी को बास बखाणो ॥ ४८ ॥
अति सुजस होय जगमाहीं । तासम बनिता बहु नाहीं ॥ इह कथन लखो बुध ठीका । भापों नहिं कछू अलीका ॥४९॥

दोहा ॥

क्षत्री ब्राह्मण वैश्यकी, क्रिया विशेष बखान । ग्रन्थ त्रिवर्णाचार में, देख लेहु मति मान ॥ ५० ॥

इतिरजस्वला स्त्री क्रिया वर्णनम् ॥

❀ अथद्वादश व्रत कथन लिख्यते ❀

दोहा ॥

कियो मूलगुण आठको, वर्णन बुधि अनुसार । अब द्वादश व्रतको कथन, सुनहु भविक व्रतधार ॥ ५१ ॥
बाराव्रत मांहीं प्रथम, पांच अणूव्रत सार । तीन गुणव्रत चार फुनि, शिक्षा व्रत सुखकार ॥ ५२ ॥

छन्दचाल ।

इह व्रत पाले फल ताको । भाषों प्रत्येक सुजाको ॥ जे अव्रत दोष अपारा । कहिहों तिनको निरधार ॥ ५३ ॥
समकित जुत व्रत फल दाई । तिहकी उपमा न कराई । बिनु दरशन जे व्रत धारी । तुष खंडन सम फलकारी ।५४

अडिल्ल ।।

जो नर व्रतको धरैं सहित समकित सही । सुर नर और फणिंद्र संपदा को लही ॥
केवल विभव प्रकाश समवश्रुत लहि सदा । सिद्धि वधू कुचकुंभ पाय क्रीडित सदा ॥ ५५ ॥

दोहा।

भाग्य हीन ज्यों चहत गुण, धन धानादिक नाहिं। भीत मूर्ति नितही दुखी, वरत रहित नर आंहि ॥ ५६ ॥

गीता छन्द।

जो शुद्ध समकित धार अतिही नरभव सुखकर कीन हैं। संसार में जे सार सारहि भोग सो मुनि व्रत गहैं ॥
सोमुक्ति वनिताके पयोधर हार सम जे रति करैं। तहँ जनम मरण न लहै कवही सुख अनंता अनुसरैं ॥ ५७ ॥

दोहा

कुबुद्धि भव संसार में, भ्रमत चतुर गति थान। जिन आगम तत्वार्थ को, विकल होय सरधान ॥ ५८ ॥

अथ अहिंसा अनुव्रत लिख्यते ॥

चौपाई।

त्रसकी घात कवहुं नहिं जाण। जो कदाचि छूटै निज प्राण ॥ थावर दोष लगै तिह थकी। प्रथम अणुव्रत जिनवरवकी ५९॥
थावर हिंसा इतनी तजै। त्रस के घात दोष को भजै॥ सोधरमी सोपरम सुजान। जीवदया पालक प्रतिजान॥ ६०॥

छन्दनाराच।

करोति जीवकी दया नरोत्तमो मही सही। सुवैर वर्ग वर्जितो निरामयो तनू लही ॥
तिलोक हर्म्य मध्यरत्न दीप सो वखानिए। वरै विमोक्ष लक्ष्मी प्रसिद्ध शिवको जानिए ॥ ६१ ॥

दोहा॥

खाद्य अखाद्य न भेद कछु, हिंसा करत न ढील। महा पाप को मूल नर, ज्यों चंडाल अरुभील ॥ ६२ ॥

अडिल्ल छन्द।

जीव वद्ध करपाप उपर्जित पाक तें। घोर भवोदधि मांहि परै निज आपते ॥
नरक तणा दुख सवै वहुत विधितें सहै। फिरर दुर्गति मांहि सदा फिरते रहै ॥६३॥

दोहा।

करुणा अरु हिंसा तणो, प्रगट कह्यो फल भेद। वह उपजावे सुख महा, अदया ते व्है खेद ॥ ६४ ॥
ऐसे लख भविजन सदा, धरो दया चित राग। सुपने हूं अदया करत, भाव तजहु बड़भाग ॥ ६५ ॥

सवैया ॥

पूरवही मुनिराय दया पालो षट्काय महा सुखदाय शिव थानक लहायो है। प्रतिमा धरैया के उपसमकादि केतेहू करुणा सहाय जाय देवलोक पायो है।। अजहू जीवनि की रक्षाके करैया भवि सुरशिव लहै जिनराज यों बतायो है। यातें हिंसा टार क्रिया पार चित्तधार जिन आगम प्रमाण कृष्णसिंह ऐसे गायो है ॥ ६६ ॥

❀ अथ हिंसा अतिचार ॥ चाल ❀

बांधैनर पशुयन केई। रज्जूबंधन दृढ़दई ॥ लकुटादिक तैं अतिमारै। पाइन मूठी अधिकारै ॥
नासा करणादिक छेदै। परवेदन को नहिं वेदै ॥ पशुवन को भाड़ो करिहै। इतनो हम बोज जु धरि है ॥ ६७ ॥
पीछै लादे बहु भार। जाके आवको नहिं पार ॥ खर बैल ऊंट अरु गाड़ो। मरयाद जितो करि भाड़ो ॥ ६८ ॥
हासिलको भय कर जानी। वाजि मरन अधिक धरानी ॥ घोटक रथ व्है असवारे। चालैनिस सांज सबारे ॥ ६९ ॥
तसु भूखा त्रिषा नहिं बूझे। ताको परदुखनहिं सूजे ॥ काहू नर केसिर दाम। जाकों रोकै निजधाम ॥ ७० ॥
तिहि खानपान नहिं देई। क्रोधादिक अधिक करेई ॥ ए अतीचार भनि पांच। अदया को कारण सांच ॥ ७१ ॥
करुणा व्रत पालक जेह। टालैं मनमें धरनेह ॥ बिन अतिचार फलसारा। सुखदायक हो अधिकारा ॥ ७२ ॥
वे धन्य पुरुष जग माहीं। ते करुणा भाव धराहीं ॥ करुणा सब विधि सुखदायक। पदवीपावै सुर नायक ॥ ७३ ॥
अथवा चक्री धरणेश। देव नृपहुं ही अधिक वेश ॥ इनपदवी कहा बड़ाई। संसार तणा सुखदाई ॥ ७४ ॥
यातें तीर्थंकर होई। संदेह न आणों कोई ॥ तातें सुनिये भविजीव। करुणा चितधार सदीव ॥ ७५ ॥

❀ अथ सत्य अणुव्रत कथन ॥ चौपाई ❀

जूट थूल बाहुन मुख कहै । संकट पड़ै मौन कों गहै ॥ त्यागै असत्य सर्वथा नहीं । यातें लघुखिर है मुखि कहीं ॥७६॥
जीवदया पालिहै जदा । झूट बचन बोलै है तदा ॥ वैहै सत्य सांचही जांण । जहां जीवके बचिहैं प्राण ॥ ७७ ॥

छन्द नाराच ॥

सदीव सत्य भावतें अलंघ्यवैं न तासको । पणविवाच सिद्धि चार नाद होय जासको ॥
सशुद्धि रिद्धि वृद्धि तीन लोककी लहै इकों । त्रिया जुमोक्ष गेह गाडु तिष्टहै सुजायकों ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

बचन नजाको ठीक कछु, अति लबारे मति क्रूर । ताते फल अतिकटुक सुन, महा पाप को मूर ॥ ७९ ॥

अडिल्ल छन्द ।

नष्टजीभ वच परतें निंदित मानिए । गर्दभ ऊंट बिलाव काक सुर जानिए ॥
जह विवेक ते रहित मूकता को धरैं । झूट बचनते मनुज ईते दुख अनुसरै ॥ ८० ॥

दोहा ।

सांच झूट फल है निसो, तिसा कह्यो भगवान । सत्य कहो झूठहि तजो, इहै सीख मनआन ॥ ८१ ।

इति सत्यअनुव्रत

❀ अथ सत्यबचन अतीचार ❀

छन्दचाल ।

निज झूट बचन नहिं भाषै । अवरनि उपदेश जु आपै ॥ परगुप्तबात जो थाहो । ताकों ते प्रगट कराहीं ॥ ८२ ॥
पत्री झूठी नित मांडै । कूलवर्णीहिय नहीं छांडै ॥ लेखी फुनि मोढै झूठी । खतहू लिखहै जु अपूठो ८३

तासौं शुभ कर्म जुरूठै । अघ अधिक महा करि तूठो ॥ को धरिहैं धरो कढ़ि आई । जासौं जो मुकरि सुजाई ॥ ८४ ॥
साखो दस पांच बुलावै । तस झूठो करि ठहरावै ॥ इस पाप तणो नहीं पारा । कहिए कहु लो निरधारा ॥ ८५ ॥
दुहु पुरुष जुदे बतलावै । तिन मिलती हिए अणावै ॥ दुहु मुख आकार लखाई । परसों सो प्रगट कराई ॥ ८६ ॥
दूषै उनके परिणाम । अघ दायक है इह काम ॥ लख अतिचार दुइ तीन । व्रत सत्य तणा परवीन ॥ ८७ ॥
इनकों त्यागै जे जीव । शुभ गति सुख लहै अतीव ॥ ए अतिचार पण भाखे । व्रत सत्य जेम जिन आखे ॥ ८८ ॥
शिव भूति भयो द्विज एक । पापी धर मन अविवेक । नग पांच सेठ सुत धरिके । पाछे सों गयो मुकर कै ॥ ८९ ॥
सत्य घोष प्रगट तसु नाम । नृप तिय झूठा लखि ताम ॥ जुवारीम करें चतुराई । तसु तियपैं रत्न मंगाई ॥ ९० ॥
तिह सेठ परिच्छा कारी । जिह लिये निज नग टारी ॥ द्विज मरिकैं पन्नग थायो । तत्क्षण असत्य फल पायो ॥ ९१ ॥

अदत्तत्याग अणुव्रत कथन ॥ चौपाई

धरा परायो अरु तीसरो । लेखा मैं भोलो जो करो ॥ मही परो नहिं लेहै सोय । जो अदत्त त्यागी नर होय ॥ ९२ ॥
चोरी प्रगट अदत्ता सर्व । अणुव्रतधारी तजिहै भव्य ॥ लगै व्योपारादिक में दोष । एक देश पलिहै शुभ कोष ॥ ९३ ॥

छन्द नाराच ।

तजेहि द्रव्य पारको सुसंनिधि निरंतरं । भवन्ति भूमिनाथ भोग भूमि पाय है परं ॥
लहे विसर्व बोध सिद्ध कांतया सुनैन को ॥ अतीव भूति तासकी सहाय चैन दैनको ॥ ९४ ॥

दोहा ।

जाकी कीरति जगत में, फैले अति विस्तार । उज्जल शशि किरणां जिसी, जो अदत्त व्रत धार ॥ ९५ ॥
सदा हरै परद्रव्य को, गहा पाप मति जोर । पड्यो रह्यो भोलेवड्यो, गहै सुनिहचै चोर ॥ ९६ ॥

अडिल्ल छन्द ।

सदा दरिद्री शोक रोग भयजुत रहै । पाप मूर्ति अति क्षुधा त्रिषा वेदन सहै ॥
पुत्र कलत्ररु मित्र नहीं कोउ जा रुके । चोरी अर्जित पाप उदै भो तासके ॥ ९७ ॥

दोहा ।

त्यंजन अदत्त सुव्रत को, अरु चोरी फल ताहि । सुन विगहै व्रतको सुधी, चोरी भाव लजाहि ॥ ९८ ॥

इति अदत्त अणुव्रत ।

❀ अथ अदत्तादानका अतीचार वर्णन ॥ छंद ❀

चोरी करने की बात सिखवावै और निषध्त ॥ जावो परधन के काज । लावो इस बुधि बनि साज ॥ ९९ ॥
कोऊ चोरी कर ल्यावे । बहु मोली वस्तु दिखावै ॥ ताको तुच्छ मोल जु देई । बहु धनकी वस्तु सु लेई ॥ ३०० ॥
कपड़ो मीठो अरु धान । लावे वेचैं ले आन ॥ जिनको हासिल नहिं देई । नृप आज्ञा एम है नेई ॥ १ ॥
जो कहुं नरपति सुन पावै । तिहि वांध वेग मंगवावै ॥ घर लूटलेई सव ताको । फल इह आज्ञा हणि वाको ॥ २ ॥
गज हाथ पंछेरी वाट । जाणो इह मान निराट ॥ चौपाई पाई देवाणी ॥ सोई माणी परमाणी ॥ ३ ॥
इनको लखिये ऊनमान । तुलिहै मपिहै बहु वान ॥ वोछो दे अधिको लेई । अपनो शुभ ताको देई ॥ ४ ॥
उपजावै बहुते पाप । दुरगति में लहै संताप ॥ केसर कस्तूरी कपूर । नाना विधि अवर जरूर ॥ ५ ॥
घृत हींग लूण बहु नाज । तंदुल गुल खांड समाज ॥ इन मांहीं भेल कराहीं । हियरे अति लोभधराहीं ॥ ६ ॥
कपड़ो बहु मोलो लावै । कोऊ कहै आण गहावे ॥ ताके बदले धरि वैसो । अगिला रंग होवे जैसो ॥ ७ ॥
व्रत दान अदत्ता कीजै । पण अतिचार एलीजै ॥ तातैं सुनिये भवि प्राणी । दुरगति दुखदायक जाणी ॥ ८ ॥
तजिये इनको अव वेग । भवि जीवनि को इह नेग ॥ त्यागे सुधरै इहलोक । परभव सुख पावै थोक ॥ ९ ॥

अथ ब्रह्मचर्य अणुव्रत कथन ॥ चौपाई ॥

नारि पराई को सर्वथा । त्याग करै मन वच क्रम यथा । निज वयतैं लघु देखे ताहि । पुत्री सम सो गिनिए जाहि १०
आप बराबर जोवन धरै । निज भगिनी सम लख परिहरै । आप थकी वय अधिकी होय । ताहि मातसम जाणहिजोय ११
इम परतियको गनिहै भव्य । सोसुख सुरनरके लहि सर्व । निज बनिता माहिं संतोष । करिये इसविध सुणि शुभकोष १२
आप व्रती तियको व्रत जबै । दोऊ दिन सील गहै बुध तबै । आठैं चौदस परवी पांच । शील व्रतपालै मन सांच १३
भादों मास अठाई पर्व । महा पज्य दिन लखिये सर्व । ब्रह्मचर्य पालै इन माहिं । सुर सुख लहियत संसय नाहिं १४॥

अथ शीलकी नव वाड़ि प्रारम्भः ॥ चौपाई ॥

फुनि व्रत धर इतनी विधि धरे । ताहि शीलव्रतत्रिविध सुपरे । जेहि बनिताको जूत महन्त । तहां मास नहिं करिये संत१५
रुचि धर प्रेम न निरखै त्रिया । ताको सफल जनम अरु जिया । पड़दाके अन्दर तिय ताहि । मधुर वचन भाखै नहिं जाहि१६
पूरव भोग केलिकी प्रीत । तिनहिं न याद करे शुभ मीत । लेइ नहीं आहार गरिष्ट । तुरत शीलको करिये जु भिष्ट १७ ॥
कर शुचितन शृंगार बनाय । किये शीलको दोष लगाय । जिह पलंग सें सोवै नार । सो सज्या तज बुध व्रतधार १८
मन्मथ कथा होय जिहि थान । तहतण रहै नहीं मतिवान । निज मुखते कबहूं नहिं कहै । ब्रह्मचर्यव्रतको जो गहै१९
उदर भरो भोजन नहिं करे । ताते इन्द्री बहुबल धरे । ए नव वाडिपालिये जबै । शील शुद्ध व्रत पालहै तबै ॥२० ॥

इति नववाडि संपूर्णम् ।

शीलचरित्र कथन सवैया ॥

ब्राह्मी सुन्दरनि आदि देके सोला सती भई शील परभाव लिंगछेद सोतेई भई । तिन माहें केउ नृप सोई शिवध्यान
लह्यो केऊ मोक्ष जैहैं भूप होय तहां ते चई अनन्तमती तु कारी ने आदि केती कहूं महा कष्ट पाय शील दिढता मई
ठई । शीलते अनन्त सुख लहै कछु सन्से नाहिं शील भंग भ्रमैं नरक महा पई ॥ २१ ॥

दोहा ।

सेठ सुदर्शन आदि दे, शीलतखै परभाव । लहै अनन्ते मोक्ष सुख, कहांलों करों बढ़ाव ॥ २२ ॥

नाराच छन्द

सुनो विसन्त ब्रह्मचर्य पाल बाधका इसौ । अतीव रूपवान थाय कामदेवको जिसौ ॥ मनोज्ञ खोजता सुहाग पुत्र पौत्र सोभितो । अनेक भूषणादि द्रव्य और मैं नही इतो ॥ २३ ॥ गहै विदीक्षया लहै विज्ञान को प्रकारही । अनन्त सुख बोध दर्शनादि वीर्य भासही ॥ सुमोक्ष सिद्ध थायकाल बीच है अपार सो । सुसिद्ध खोजता गुलाब लोकने नगारसों २४

दोहा ।

लंपट विषई पुरुष के, निजपर ठीक न होइ । दुरगति दुख फल सो लहै, भूमि है भव दधि सोइ ॥ २५ ॥

अडिल्ल छन्द ॥

व्है कुरूप दुर्गंध निंदि निरधन महा । वेद नपुन्सक दुर्ग व्याधि कुष्टहिंगहा ॥

अङ्ग विकल अति हीय ग्रथल जिमि भासही । परतिय सङ्ग विपाक लही व्है इम सही ॥ २६ ॥

दोहा ॥

व्रत परवनिता त्यजनको, कथन कह्यो सुखकार । अरु लंपट विषई तणो भाष्यो सहु निरधार ॥ २७ ॥

शील थकी सुर नर विमल, सुखलहि शिवपुर जाहि । दुरगतिदुख भव भ्रमणकों, विषई लंपट पाहि ॥ २८ ॥

❁ अथ ब्रह्मचर्य अणुव्रत अतीचार छन्द चाल ❁

परकी जो करै सगाई । वतलावे जोग मिलाई ॥ अरु व्याह उपाव बतावे । निज व्रतको दोष लगावे ॥ २९ ॥
विभिचारणी जेहे नारी । परिग्रहीत नाम उचारी ॥ जिनको वैश्यादिक कहीये । तिन सङ्गम नहीं गहीये ॥ ३० ॥
हास्यादि कोतूहल कीजै । शीलै तव मलिन करीजै ॥ अपरिग्रहीत सुनि नाम । पति परणी है जो वाम ॥ ३१ ॥

तसु महा कुशीला जाणी । जसु संगति करै जु प्राणी ॥ हास्यादिक वचन कुभाषै । सो शील मलिन अति राखै ॥३२॥
जे लंपट विसई क्रूर । ते पावै भव दुख पूर ॥ अतीचार तीसरो एह । सुणिये अब चौथो जेह ॥ ३३ ॥
क्रीड़ाअनंग विधि एह । हस्त कुपरसत तिय देह ॥ विकल्प मन मैंही आन । परतच्छ ते शीलहि भानै ॥ ३४ ॥
इह अतीचार चौथांही । बुध करै नकबहू यौंही ॥ पंचम भनिये अतीचार । सुपने में मदन विकार ॥ ३५ ॥
उपजै तिय सेवन काम । विकलपता अति दुख धाम ॥ औषध के पाक बनावे । बहु विध रस धात मिलावै ॥ ३६ ॥
अति विकल होय निज तियको । सेवै हरपाव जियको ॥ बध जन इहरीति न जोग । पण अतीचार इसभाग ॥ ३७ ॥

दोहा ।

इनहीं टाल व्रतशीलको, पालो मन वच काय । इह भवतैं सुर पद लहै, फिरि मृप व्है शिवजाय ॥ ३८ ॥

* अथ परिग्रह प्रमाण अणुव्रत कथनम् ॥ चौपाई *

क्षेत्र वास्तु आदिक दस जाण । परिग्रह तणौं करै परिमाण ॥ इनका दोष लगावे नहीं । वहै देशव्रत पंचम कही ॥ ३९ ॥

छन्दनाराच ।

करोति मूढ़नां प्रमाण कर्ण सेवनां विषै । त्रिलोक वेदग्यान पाय श्रीजिनेशयौंअषै ॥
भवंति सरव्य सागरो अनंत शक्ति कौं गहै । त्रिलोक वल्लभो सदा भवंतरे सिवंलहै ॥ ४० ॥

दोहरा छन्द ।

मन विकलप सरै अधिक, विभव परिग्रह मांहि । लहै नहीं अघके उदै, फल नरकादि लहांहि ॥ ४१ ॥

अडिल्ल ।

जनम जरा फुनि मरण सदा दुखकौं सहै । बहु दूषणको थान रोग अतिही लहै ।
भ्रमै जगतके मांहि कुगति दुख में परै । विषय निमूर्च्छा मांहि नचंवर जे करै ॥ ४२ ॥

दोहा ॥

व्रत परिग्रह प्रमाण नर, कीये कहै फल सार । मन झुकलावै ठीक तजि, दुख भुगतै नहिं पार ॥ ४३ ॥
याते व्रतधरि भव्यजे, मन विकल्प विस्तार । ताहि तजै सुख भोगवे, यामें फेर न सार ॥ ४४ ॥
जे संतोष न आदरै, ते भव भ्रमै सदीव । दुख करि याकों जानिकै, त्यागै उत्तम जीव ॥ ४५ ॥
दोष लगै या समझकै, अतीचार पणि जाणि । तिन को वरणन भेद कछु, आगै कहौं वखाणि ॥ ४६ ॥

❀ अथ परिग्रह प्रमाणका अतीचार वर्णन ॥ चौपाई ❀

क्षेत्र कहावे धरती मांहि । हल खेडन की जो विधि आहि ॥ वास्तु कहावे रहवातणा । मंदिर हाट नोहो रातणा ॥ ४७ ॥
हिरण्य रूपा को परमाण । करे जितो राखै बुधिभांण ॥ सुवरण सोनोही जाणिये । ताकी मरज्यादा ठाणिये ॥ ४८ ॥
धन महिषी घोटक अरु गाय । हस्ती बैल ऊंट ज थाय ॥ इत्यादिक चौपद जे सही । तिन सिगरेकी संख्या कही ॥ ४९ ॥
सालि मूंग गोधूम अर चिणा । नाज विविधके जे है घणा ॥ इन सबकी मरज्यादा गही । बहुत जतनतें राखै सही ॥ ५० ॥
खरच जितो घरमाहीं होय । तितनो नाज खरीदै सोय ॥ विणज निमित्त जेतो परमाण । जीव पड़ै नहीं तसे जाणि ॥ ५१ ॥
बहुउपाय करिकै राखिहै । ऐसे जिनवाणी भापि है ॥ बरस एक में बीकै नहीं । दूजो बरस आइ है सही ॥ ५२ ॥
मरयादा माफिक थोजितो । अधिक लेय नहिं राखै तितो ॥ दुपद परिग्रह जे एक है । बनिता दासी दासहु लहै ५३ ॥
कुप्य परिग्रह में ये जाण । चावा चन्दन अलर बखाण ॥ रेसम सूत ऊन का जिता । कपड़ा होय कहाहै तिता ॥ ५४ ॥
तिनहूं की मरज्यादा गहै । यों नायक श्रीजिनवर कहै ॥ रुपया भूषण रतन भंडार ॥ बहुरि सोतधिया अरु दीनार ५५
इनकी मरयादा करि लेहु । हंडवाई वासण फुनि एहु ॥ बहुविधि तणा किराणा भणी । अवर खांडगुड मिश्री तणी ५६
मरयादालं सो निरवहै । भंगकीये दूषणको लहै ॥ मन वच काया पाले जेह । भव भव सुख पावे नर तेह ॥ ५७ ॥

सवैया ३१ ।

वरत करैया ग्यारा प्रतिमा धरे या जेते दोष के टरैया मनमाहीं ऐसे आनिकै । जैसो है जिह थान जोग तैसो भोगउपभोग

चरमति जोग मांहिं कह्यो है बखानिकै ॥ आदरेंति तोही तह वाकी सबै छांडिदेह ग्रंथसंख्याव्रतएह श्रावकको जानिकै ।
तदभव सुरथाय राज ऋद्धिको लहाय पावै शिवथान दुषदानि भव मानिकै ॥ ५८ ॥
मरहटा छन्द ॥ जो परिग्रह राखै दोष न भाखै चित अभिलाषैहीन । विकल्प न कुलावै विषय वढावै आढन पावै दीन ॥
बहु पाप उपावै जो मल भावै आवै वात कहीन । मूर्च्छा को धारीहीणाचारी नरक लहै सुखहीन ॥ ५९ ॥

छन्दभजंगप्रयात ।

कह्यो मूर्च्छना दोष भारी अवपा । लहै सुभूलंसैन जानै लगारी ॥
तजै सर्वथा मोक्ष सौख्यं लहंती । यहै जानभव्यानयाको गहन्ती ॥ ६० ॥

इति परिग्रह परिमाण पंचम अणुव्रतसम्पूर्णम् ।

अथदिगगुणव्रत प्रथमकथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

चारदिशा विदिशा फुनिचार । ऊर्ध अधो दुहुं मिलि दस धार ॥ दिग व्रत पालन नर परवीन । मरयादा लंघै न कदीन ६१
जिते कोसलों फिरियो चहै । दिसा विदिसाकी संख्या गहै ॥ अधिक लोभको कारिज वणै । व्रत धर मरयादा नहि हणै ६२
जिम मरयादा की आखडी । तहँलों जाय काम वसि पड़ी ॥ घरिवैठा निति धारै ठीक । पाले कवहु न चले अलीक ६३॥

दोहा ।

दिगव्रतको पाले थकी, उपजै पुन्य अपार ॥ सुरगादिक फलभोगवै, यामै फेर न सार ।
मरयादा लीये बिना, फल उतकृष्ट न होय ॥ इमैं पलै नहिं इम कहे, वहै विकल मति जोय ॥६४॥

अब दिगगुणव्रतके अतीचार पांचलिख्यते ॥

छन्द चाल ।

मन्दिर निज परकी आड़ । चढियां फुनि कोई पहाड़ ॥ ऊरध संख्या सो कहिये । टालै ते दोषहि गहिये ॥ ६५ ॥

तहँखाना कूप रवाय । गिरि गुफा माहिं जो जाय ॥ इह अधो भूमि मरयादं । टालै दूषण परमादं ॥ ६६ ॥
दिसि विदिशि सोह जे लीनी । तिरछा चलावै मति दीनी ॥ सो तिरजिग गवन कहाई । अतीचार तृतीय इहथायी ६७
निज खेत भूमि जो थाय । सीमातें वधिक वधाय ॥ सो खेत वृद्धि तुम जाणों । चौथो अतीचार बखाणों ॥६८॥
जिह वस्तु तणो परमाण । प्रथमहीं कीयो थो जाण ॥ तिहिकौं वीसरि सो जाई । स्मृतिजु अतीचार कहाई ॥ ६९ ॥

इति दिग्गुणव्रत सम्पूर्णम् ।

अथ देशव्रतकथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

दिशि विदिशा के जे जे देश । जिहपुरलौं जो करय प्रवेश ॥ हरै नहीं मरयादा कोई । तिनको पलै देशव्रत सोई ॥७०॥
मन सैन्यवारख के हेत । मन वच कर मरयादा लेत ॥ आप जहां दिसि कबहुं न जायं । तहातणोवस्तो नहीं खायं ७१

दोहा ।

सो लहिये विन वध्तको, नेम न मूल कहाय । यातें गहिये आखड़ी, ज्यों फल विस्तर थाय ॥ ७२ ॥

अथ देशव्रत अतीचार पांचलिख्यते ॥ छन्द चाल ॥

कीयो जे देश प्रमाण । तिह पारध की सांस जाण ॥ कोई नहीं वस्तु मंगावे । कबहू ना लोभ बढावै ॥ ७३ ॥
जहलों मरयादा ठानी । भांजे नहीं उत्तम प्राणी ॥ भांजे मरयादा जास । अतीचार कहावै तास ॥ ७४ ॥
मरयादा बारै कोई । नरकों न बुलावै जोई ॥ अरु आप नहीं बतलावै । बतलाए दोष लगावै ॥ ७५ ॥
निजरूपहि सों हसिवाई । काहू जो देइ दिखाई ॥ इह अतीचार चौथोंही । जिन देव बखानो योंही ॥ ७६ ॥
मरयाद जिटी जिहिं धारी । तिह वारे करतें डारी ॥ कंकरी कपड़ोकछु और ॥ पाहण लकड़ी तिहिं ठौर ॥ ७७ ॥
इत्यादिक वस्तु वहु नाम । वरनन कहां लों ताम ॥ ऐसी मति समजो कोई । देसांतर ठीक दुहोई ॥ ७८ ॥
चैत्यालय बाघर मांहीं । अथ वादे सांतर तांही ॥ धरिहै जिम जो मरयाद । पालै तिम तजि मरयाद ॥ ७९ ॥

इह देश वरत तुम जाणों । दूजो गुणव्रत परमाणो ॥ अब अनरथ दंड जतीजो । बहु बिधि तसु कथन सुणीजो ॥८०॥

इतिदुतीयगुणव्रत ।

अथ अनर्थदंड तृतीयगुणव्रत कथनं ॥ चौपाई ॥

अनरथ दंड पंच परकार । प्रथम पाप उपदेश असार ॥ हिंसा दान दूसरो जाण । तीजो खोटो पाप बखाण ॥ ८१॥
तुरिय कुशास्त्र कहै मन लाय । पंचम प्रमाद चर्या थाय ॥ निज घर कारज विनुते और । तिनके पाप तणी जे ठौर८२॥
पशु विणज करवावै जाय । अरु तिह बीच दलाली खाय ॥ हिंसा को आरंभ जु होई । ताकै उपदेसै जु कोय ॥ ८३॥
मीठो लूण तेल घृत नाज । मादिक वस्तु मध्य विनु काज ॥ बोलि धाह भ्याहरडे लाख । आलकभूंभा को अभिलाख८४
नील हींग आफू मोहरो । भांग तमाखू सावण खरो ॥ तिल दाखासिण लोह असार । इन उपदेश देहि अविचार ८५
कूवा तलाव हवेली वाय । बाडी बाग कराय उपाय ॥ कपड़ा वेगि धवावेहु मीत । निज ग्रह कारज राखहु चीत ॥८६॥
परधन हरण तणी जे बात । सिखवावै बहुतेरी घात ॥ इतने पापतणे उपदेश । कीये होय दुरगति परवेश ॥ ८७ ॥
चाकी ऊखल मूसल जिते । कुसी कदाल फाहुडीतिते ॥ तवो कड़ाही अरु दातलो । इमांगा देयो नहीं भलो ॥८८॥
धणहीक बाण तीर तरवार । जम घर छुरी कुहाड्या टर ॥ सिल लोढो दांतण घोबणो । बाण जेवड़ा वडीगणो ८९
रथ गाड़ा वाहण अधिकार । अगनि उपलादिक निरधार ॥ इत्यादिक कारण जे पाप । मांगेदीए बढै संताप ॥ ९० ।
याते व्रतधारी जे जीव । मांग्या कबहुन देय सदीव ॥ द्वेष भाव करि वैर लखाय । बध बन्धण मारण चितथाय ९१
पर तिय देखि रूप अधिकार । ऐसो चितवन अतिदुख कार ॥ खोटे शास्त्र बखाणे तदा । इणतदोष रागी व्हैजदा ९२
हिंसा अरु आरंभ बढ़ाय । मिथ्या भाव उपरिचित थाय ॥ जामें एते कहै दखाण । सो कुशास्त्र अघकारण जाण ९३॥
विनही कारण गमन कराय । जल क्रीड़ा औरनि लेजाय ॥ बाले अगनि काम विनु सोय । छेदै तरु अति उद्धत होय ९४॥
मेलादेखण चलिये यार । असवारी यह खड़ी तयार ॥ गोठि करै निज खरचै दाम । ऐ सब जाणि पाप के काम ९५॥

बहुजनलखो मनलावै भलो । होला ढेंहगी खावें चलो ॥ सिरा बाजरा अर जुवारि । फलही भाजी सबनिपचारि ॥९६॥
चले माधी लैजेहैं खेत । बस्त खवावनको मन हेत ॥ अनरथ दंड न जाणैं भद । पाप उपाय लहै बहु खद ॥ ९७ ॥
सूवो कबूतर मेना जाण । तूती बुलबुल अधकी खाण ॥ पंखियां और जनावर पालि । राखै बन्दि पींजरैं घालि ९८॥
इनि पाले को पाप महंत । अनरथ दंड जाणिये संत ॥ कूकर वांदर हिरण विलाव । मींढादिक रखिये धरि चाव ९९९॥
पालि खिलावें हरखि धरेय । अनरथ दंड पाप फल लेय ॥ मन हुलसे चित्रामकराय । त्रस जीवन सूरत मंडमाय ४००
हस्ती घटक पींडुक मोर । हिरख चौपद पंखी और ॥ कपड़ा लकड़ी माटी तणा । पाखाणादिक करिहै घणा ॥१॥
जोव थिताई करि आकार । करैं विविधि केहीण गंवार ॥ तिणिकों मोल लेइ जण घणा । बाटे घरघर में लाहणा ॥२॥
इहं मयादचर्या विधि कही । अनरथ दण्ड पापकी मही ॥ जो न लगावें इनको दोष । सो धरसी अघ करिहैं सोष ॥३॥

दोहा ।

जो इस व्रतको पालि है, मन बच काय लगाय । सो निहचै सुर पद लहै, यामैं फेर न जाय ॥ ४ ॥
बिनु कारजही सबनिको, दोष लगावे कोय । जाके अघ के कथन को, कवि समरथ नहिं होय ॥ ५ ॥
अघसे नरकादिक लहै, इह जानो तहकीक । अतीचार यावरत को ॥ सुनों पांच यह ठीक ॥ ६ ॥

अथ अतीचार अनरथ दण्डका लिख्यते ॥ छन्द चाल ॥

अतीहास कौतूहल कार । मन माहीं सोच विचार ॥ इह अतीचार एक जाणी । जिनआगम कह्यो बखानी ॥ ७ ॥
क्रीड़ा उपजावन काम । बहु कला करै दुख धाम ॥ नृत्यादिक देखण चाव । वादीगर लखि येह दाव ॥ ८ ॥
मुखतें बहुगाली देई । बन ज्यों त्योंही भाखेई ॥ इह अतीचार भणि तीजो । दधि त्यागहु ढील न कीजो ॥ ९ ॥
मन में चिंतै को काम । इतनो करस्यां अभिराम ॥ तातैं अधिकोज कराई । दूषण इह नांयो थाई ॥ १० ॥
जेती सावद्री भोग । अथवा उपभोग नियोग ॥ पर नर जो मोल मदाहीं ॥ निज अधिको मोल चढाहीं ॥११॥

लोलपता अतिही ठानै । हठ करिस्यों अपनो आनै ॥ इह पंचमदोष सुठीक । यामैं कछु नाहिं अलीक ॥ १२ ॥
भणिया ए पण अतीचार । बुधजन मन धरि सुविचार ॥ नितिही इनको जो टालै । मन बच क्रम व्रत सो पालै ॥१३॥
इह कथन सबैही भाष्यो । जिन वाणी माफिक आख्यो ॥ जो परम विवेकी जीव । इनको करि जतन सदीव ॥१४॥
जे अनरथ दण्ड लगावै । ते अघको पार न पावै ॥ अथ महा जगतको दाई । भव भांवरि अन्त न थाई ॥ १५ ॥
बच भाषै लागो पाप । ऐसेहु न करेहु अलाप ॥ मन बच तन व्रत जे पालै । ते सुरगादिक सुख भालै १६ ।
अनुक्रमि शिवथानक पावै । कबहूं नहिं भव में आवै ॥ सुख सिद्ध तणा जु अनन्त । भुगते जो परम महन्त ॥१७॥

दोहा ।

गुणव्रत लखि इह तीसरो, अनरथ दण्ड सुजाणि । कथन कह्यो संक्षेपतैं, किसन सिंह मनि आणि ॥ १८ ॥

इतिगुणव्रत कथन संपूर्णम् ।

अथप्रथम शिक्षाव्रतसामायिकलिख्यते चौपाई ॥

सबजीवनिमैं समता भाव । संयम मे शुभ भावन चाव ॥ आरतिरुद्र ध्यान तिहूं त्याग । सामायिक व्रत जत अनुराग ॥१९॥
प्राणी सकल थकी मुज शांति । बेउत्तम मुझ परिकरि सांत ॥ मेरा वैर नहीं उन परी । वैमुझतैं कछु दोष न करी ॥२०॥
इत्यादिक बच करि विउचार । जो नर सामायक को धार ॥ परजिंकासन गाढो तथा । सक्तिमभाग थापि है तथा ॥२१॥
पूर्वान्हिक मध्यान्हिक चाल । अपरान्हिक एतीनो काल ॥ मरयादा ज ती उच्चरै । तेती वार पाठ सो करै ॥२२॥
दुहुं आसन के दोषज जिते । सामायक जुतः जि है तिते ॥ जोविशेष सुणि वाको चाव । ग्रंथ श्रावका चार लखाव ॥२३॥
हूं एकाकी अवर न कोई । शुद्ध बुद्ध अविचल मय जोय ॥ करयातें वैढ्यांन उजाणि । मैं न्यारा तिहूंकालवपाणि ॥२४॥
इस संसारै मुझका नाहिं । मैंनकिसी को इह जगमांहि ॥ बंध्यो अनादि करमते सही । निहचै बंधन मेरै नहीं ॥२५॥
राग दोष करि मैला जदा । तिन दुहुइनत मिलन नकदा ॥ देह बसंतो रहत सरीर । चेतन शक्ति सदा सुझतीर ॥२६॥

चिंताआठौं मद आरंभ । चितवन मदन कषायरुदंभ ॥ इनिकौंजिस विरियां परिहार। करयी सुबुध समायकधार २७॥
सीतवसन वरषा फुनिवात। दंसादिक उपजत उतपात॥ जिनवर वचन विषै अति धीर। सहिहै जिके महा वरवीर ॥२८॥
पूर्वाचारिज के अनुसार । जैसुविचक्षन करई विचार ।। तीनमुहूरत दोइक जाण । उत्तम मध्यम जघन्य वखाण । २९॥
जैसी शक्ति होय जिहिं पास । करिए है भव भ्रमणविनास ।। भव्यजीव इहि विधि जे करै । तिनकी महिमा कवि को करै ।३०

दोहा ॥

इह व्रत पाले जे पुरुष, मनवच क्रम धरि ठीक । सुरनर के सुख भुंजकर, शिव पावै तहतीक ॥३१॥
जकुमती जिन नाम को, लैन करं परमाद । सो दुरगति जैहे सही, लहिहै दुखविपवाद ॥३१॥

अथसमाइक अती चार लिख्यते॥ छंदचाल ॥

मनवचनक्रम कोए जोग । परमादी होय प्रयोग ॥ परिणामं दुष्टता भारी । राखें नहीं ठीक लगारी ॥३२॥
सामायिक पाठ करंत । बतलावै परसौंमंत ॥ बोलै फुनि वारंवार । जानैं य दूजो अती चार ॥३३॥
सामायक करत अनादर । मतमैंन उच्छाह धरै पर ॥ विनुलगन भायहू पोट । किनि सिर पर दीजिय मोट ।३४।
आसण का करं चलाचल । तन झुंमहलावै पल पल ॥ फेरै मुख चहुं दिसि भारी । तिजहु अती चार विचारी ॥
सामायक पाठ करंतां । चितपाठेप्रम धरंतो ।। मैंइह पाठ पढ्यो अकनांही । फुनि फुनि इम चींतवि जांही । ३५॥
ए अतीचार पण भाषै । जिन वाणीमैं जिम आषै ।। वे भवि सामायक धारी । प्रथमही है दोष निवारी ॥३६॥
तहुं कालकरे सामायक । सवजीवनि कौं सुखदायक ।। सामायक करतां प्राणी । उपचार मुनी सम जानी । ३७॥
सामायिक दृगजुत करि है । उतकृष्ट देव पद धरि है ॥ अनुक्रम पावै निरवाण ॥ यामैं कछु फेर न जाय । ३८॥
मुनिद्रव्यलिंग को धारी । सामायक चल अनुसारी ॥ कहांलों करियै जु वडाई । नवग्रीवकलग सो जाई ॥३९॥
याते भवि जन तिहूं काल । धरिय सामाक चाल ॥ जातैं फल पावै मोटो । न्हासिजाय करम अति खोटो ।४०॥

अथ द्वितीय शिक्षाव्रत प्रोषधोपवास लिख्यते ॥ चौपाई ॥

सामायक व्रत कह्यो बखानि । अब प्रोषध व्रतकी सुनि बानि ॥ एक मासमें परब जु चार । दुइआठैं दुइ चौदस धार ४१
इनमें प्रोषध विध विस्तरैं । ते बसुकर्म निर्जरा करैं ॥ वे जिन धर्मविष अति लीन । व श्रावक आचार प्रवीन ॥४२॥
अब प्रोषध की विधि सुनि लेह । भाष्यो जिन आगममें जेह ॥ सातैं तेरसिके दिन जानि । जिनश्रुत गुरु पूजाको ठानि ॥४३॥
पूजा विधि करि श्रावक सोइ । भोजन बेला मुनि अवलोइ ॥ जिनमन्दिर तें तब निज गेह । एकठाम असणपीती लेह ॥४४॥
मध्यान्हक समये को धार । करे प्रतिज्ञा सुविधि विचार ॥ पोड़स पहर लेहु मरयाद । चौविहार छांड मरयाद ॥ ४५ ॥
खादि स्वाद लेह अरु पय । अतीचार त सबहि तजेह ॥ दुटुपटी धोवत विधवत लेह । और वस्त्र तनसों तज देह ४६
स्नानादि भूषण परिहरै । अंजन तिलक हूती नांहि करै ॥ जिन मन्दिर उपबन बन ठाहि । अथवा भूमिमसानहि जाहि ४७
पोड़स जाम ध्यान जो धरै । धरम कथाजुत तहं अनुसरै ॥ पंच पाप मन वच क्रम तजै । श्रीजिनआज्ञा हिरदै धरै ४७॥
धरम कथा गुरु सुखतं सुनै । आप कहै निज आतम मुनै ॥ निद्रा अल्प पाछिली रात । है नौमी पून्यौ परभात ४८ ॥
मरयादा पूरब गुण धार । जिन मन्दिर आवे निज द्वार ॥ द्वारा पेषण परिचित धार । खड़ो रहै निज घरके बार ॥४९॥
पात्रदान दे अति हरषाइ । एकाभुक्त करै सुखदाइ ॥ पारण दिन पिछली छा जाम । त्याग अहार तजै अभिराम ॥५०॥
इह उत्कृष्ट कह्यो उपवास । करे कर्मगण के अति नाश ॥ सुर सुख लहि अनुक्रम सिव लहै ॥ सत्यवाइक इह जिनवर कहै ५१
कहूं मध्यम उपवास विचार । षट्कर्मोपदेश अनुसार ॥ प्रथम दिवस एकांत करेय । घरी दोय दिनतं जललेय ॥ ५२॥
जिन मन्दिरअथवा निज गेह । प्रोषह द्वादश पहर धरेय ॥ धर्म ध्यान में बाराजाम । गमिहै घरके तजि सब काम ५३॥
जाविधि दिवस धारणै जानि । सोही दिन पारणै बखान ॥ तीन दिवसलौं पालै शील । सो सुरके सुख पावे लील ।५४॥
जघन्यवास भवि विधिसों करौ । प्रथम दिवस इह संख्या धरौ ॥ पछिलो दिवस घड़ी दो रहै । तापीछे पाणी नहिं गहै ५४॥
निशिको शीलव्रत पालिये । प्रात समय पोसोही धारिये ॥ आठ पहर ताकी मरयाद । धरमध्यान जुत तजि परम द ५५

दिवस पारणौ निशि जल तजै। वासर तीन शील व्रत भजै ॥ प्रोषधतो उत्कृष्ट हि जानि। मध्यम जघन उपवास वखानि ॥५६॥
त्रिविधि वासकों जो निरवहै। सो प्राणी सुरके सुख लहै॥ अव याको जो है अतीचार। कहूं जिनागम जे निरधार ५७

॥ अथ प्रोषधोपवास अतीचार ॥ छन्दचाल ॥

पोसो धरिहै जिहि भूपरि। देखै नहिं ताहि नजर भरि ॥ इह अतीचार इक जानी। दूजेको सुनो वखानी ॥५८॥
जेती पोसहकी ठाम। प्रतिलेखै नांही ताम ॥ दूषण लागै है जाको। सुनि अतीचारती जाको ॥ ५९ ॥
पोसो धरणकी वार। मोचै न मल मूत्र विकार ॥ मरजादा विन सौं डारै। संथारो जो विसतारै ॥ ६० ॥
बेठ उठै तजि ठामै। तीज दूषण को पावै ॥ पोसो धरता मन माहीं। उच्छवकों धारै नाहीं ॥ ६१ ॥
विनु आदरही सों ठानैं। मरज्यादा मनमें आनैं ॥ चौथो इह है अतीचार। अव पंचम सुनि निरधार ॥ ६२ ॥
पढि है जो पाठ प्रमाण। ठीक न ताको कछु जाण ॥ इह पाठ पढ्यो इक नाहीं। अव पढिहो एम कहांही ॥ ६३ ॥
ए अतीचार भणि पंच। भाषै जिन आगम संच ॥ पोसो जो भविजन धरिहै। इनको टालो सो करिहै ॥ ६४ ॥
फल लहै यथारत सोई। यामें कछु फेर न जोई ॥ प्रोषध व्रतकी यह लीक। माफिक जिन आगम ठीक ॥ ६५ ॥
अरु सकल कीर्ति कृत सार। ग्रन्थहू श्रावक आचार ॥ तामांहै भाष्यो ऐसे। सुनियें ज्ञाता विधि जैसे ॥ ६६ ॥
उपवास दिवस तजि वीर। छान्यो सचित्त जो नीर ॥ लेतं दूषण वहुथाई ॥ उपवास वृथा सो जाई ॥ ६७ ॥
पीवे सो प्रासुक करिकै। दुतियोजुद्रव्य मधि धरिकै ॥ वैहू विरथा उपवास। लेनो नहिं भविजन तास ॥ ६८ ॥
अरु सकतिहीन जो थाई। जलतें तन ह्व थिरताई ॥ तौ अधिक उसन इम वीर। विन हुकम किये जो नीर ॥ ६९ ॥
अन्नादिक भाजन केरो। दूषण नहीं लागै अनेरो ॥ ऐसो आवै जे पाणी। ताकी विधि एम वखाणी ॥ ७० ॥
उपवास आठमों वांटो। वहिहै इम जाणि निराटो ॥ इनमें आछी विधि जाणी। करियेसो भविजन प्राणी ॥ ७१ ॥
संशो मन इहै न कीजै। प्रोषध में कवहु न लीजै ॥ पोसह विन जो उपवासे। तामें ऐसी विधि भासे ॥ ७२ ॥

उत्तम फलको जे चाहै । ते इहविधि नेम निबाहै ॥ उपवास दिवस में नीर । सङ्कटहू में तजि वीर ॥ ७३ ॥
अब सुनहु कथन इक नीको । अति सुखकरि ब्रत धरि जीको ॥ एकांत दिवसकी सांझ । धरिहु तिय दरव जलमांझ७४
प्रासुक करि पीवै नीर । तामै अति दोष गहीर ॥ एकासण जब सुकराहि । जल असन लेई इक ठांहि ॥ ७४ ॥
जिन आगम की इह रीत । उपरांत चलण विपरीत ॥ जल लेन साच ठहरायो । सबही मांन योंही भायो ॥ ७५ ॥
तो दूजो दरव मिलाई । लैनो नहिं योग्य कहांही ॥ ताको दूषण इह जानो । भोजन दूजा जिम छानो ॥ ७६ ॥
भोजन जिहि विरियां कीजै । पानी तव उसन धरीजै ॥ वैमासुक पानी लीजै । नहीं शक्ति जानि तजि दीजै ॥
कुमती ढुंढ्यादिक पापी । जिन मतते उलटी थापी ॥ हांडी को धोवण लेई । चावल धोवै जल लेई ॥ ७७ ॥
तिन कौ प्रासुक जल भाखै । ले जाय सांझ कौ राखै ॥ एक तो जल का चौजानी । अन्नादिक मिलि तसु आनी ॥७८॥
तामैं घटि का दोय मांही । प्राणी निगोदियाथाही ॥ ताके अघ को नहिं पार । मिथ्या मत भाव विकार ॥ ७९ ॥
गाथाउक्तंच ॥ अन्नजलं किंचि ठिई । पच्चखाणंन भुंजणभिक्खु ॥ घड़ीदोय अंतरिया । णिगोइया हुंति बहुजीवा ॥ ८० ॥
दोहा ॥ जो पोसह विधि आदरै । ते सुख पावै धीर ॥ प्रमाद सेवै ते मुगध । किम लहिहै भवतीर ॥ ८१ ॥
इति प्रोषधोपवास त्रिविध वा सामान्य वर्णनं संपूर्णं ॥

अथ भोगोपभोग तृतीय शिष्या व्रत कथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

व्रत भोगोप भोग जे धरै । दोय प्रकार आपडी करै ॥ जिममरयाद मरण परयंत । नियम सकति माफिक धरिसंत ॥८२॥
अन्नपान आदिक तंबोल । अंजन तिलक कुंकुमारोल । अतर अरगजा तेल फुलेल । तेसहु वस्तु भोग के खेल ॥८३॥
एक वारही आवै काम । बहुरिन दीसै ताको नाम ॥ ते सब भोग वस्तु जानिये । ग्रंथ कथन लखि इम मानिये ॥८४॥
वस्त्र सकल पहिरनके जिते । निज वरमैं आभूषण तिते ॥ रथ वाहन डोली सुखपाल । वृषभकूंभ हयगय सुविसाल ॥८५॥
वनिता अरु सज्या को साज । भाजन आदिक वस्तु समाज ॥ वार वार उपभोग विजेह । सो उप भोग नहीं संदेह ॥ ८६ ॥

तिन दोन्यूं में सकतिं प्रमाण । जंमवानियम करै जो जान ॥ जनम पर्यन्त त्याग यम जानिं । वरसंमास परिवनियम वखानिं ॥८७॥
दिनको पांच घड़ी मरयाद । करै सदैव तजै परमाद ॥ कियै प्रमाण महा फल सार । विन संख्या फल नहीं लगार ॥८८॥
दोहा ॥ सुनहु भोग उपभोग के । अतीचार प्रणतेह ॥ इनहि टालि व्रत पालि है । वरती श्रावक जेह ॥ ८९ ॥

॥ छंद चाल ॥

भोलैंजु सचित जो आंही । भोगन की वस्तु जु मांही ॥ उपभोग वसन भषण मैं । कुमादिग है दूषण मैं ॥ ९० ॥
एहं अतीचार मणिएक । दूजे सुनि धरि सुविवेक ॥ भोजन पातरि परि आवै । अरु सचित थकी ढकि ल्यावै ॥९१॥
अथवा वस्त्रादिक जांनीं ॥ धरि ढकि अर आणै माणी ॥ वह दूजो दोष गणीजै । तीजो अव भवि सुणि लीजे ॥९२॥
जे सचित अचित वहु वस्तु । भेलैं मिलि जाल समस्त ॥ जाको लेकै भो गीजे । इह अती चार गणि लीजे ॥ ९३ ॥
मॆरयाद भोग उप भोग । कीनो जो वस्तु नियोग ॥ तिहतैं जो लेय सिवाय । चौथो येह दूषण थाय ॥ ९४ ॥
कछु कोरो कछु यक सीजै ॥ अथवा आस्यो गह लीजै ॥ लघु भर्ख लेई अधिकाई । अति दुपकारी असन पचाई ॥ ९५ ॥
दुहु पंक अहार सु जानी । पंचम अती चार वखानी ॥ भोगोप भोग व्रत पारीं । टालौ इन कौं हित भारी ॥ ९६ ॥

दोहा ॥

कथन भोग उपभोग कौ । कीयो यथाव्रत सार ॥ आगैं अतिथि विभागको ॥ सुनियो भवि निरधार ॥ ९७ ॥

इति भोगोप भोग शिक्षा व्रत ॥

अथ चतुर्थ शिक्षा व्रत अतिथि संविभाग कथन ॥ ॥ चौपाई ॥

प्रथम आहार दान जानिये । दुतीय दान उपद मानिये । तीजो शास्त्रदान है सही । अभय दान पुनि चौथो कही ॥ ९८॥
लहै अहार थकी वहु भोग । औषध तैं तनु होय निरोग ॥ अभय थकी निरभय पद पाय । शास्त्र दानतैं ग्यानीथाय ॥९९
अवपात्र कौ सुनहु विचार । जैसो जिन आगम विस्तार ॥ पात्रकुपात्र अपात्र हजाण । दीजैजिम तिम करहु वखाण ॥१००॥

पात्र प्रकार तीन जानिये । उत्तम मध्यम जघन्य मानिये ॥ मुनिवर श्रावक दरशन धारं । कहै सुपात्र तीनं विधिसारं
तीन तीनं तिहु भेद प्रमान । सुनहु विवेकी तास बखान ॥ उत्तम में उत्तम तीर्थेश । उत्तम में मध्यम है गणेश ॥१॥
मुनि सामान्य अवर हैं जिते । उत्तम मध्यम जघन्य है तिते ॥ मध्यम पात्र तीनपरकारं । तिहमाहे उत्तम मुनिसारं ॥२
पुल्लिक अर्त्लि दुहु ब्रह्मचार । अरुद समी प्रतिमा व्रत धार ॥ मध्यम मांहि उत्तम जानि । मध्यममांहि मध्यम कहूंबखानि ॥३
सात आठ नव प्रतिमा धार । मध्यम में मध्यम पातर सार ॥ पहिली से षष्ठी पर्यंत । मध्यमनें पात्र जघन्य भणि सन्त ४
दरसन धारी जघन्य मझार । उत्तम क्षायक समकित धार ॥ क्षयोपशमी मध्यम गनि लेहु । जघन्य उपशमी जानो एहु ५

॥ दोहा ॥

उत्तमपात्र सुतीनविधि, तिनही भेद नव जाम ॥ फुनि कुपात्र तिहुं भेद को, वरणन कहौं बखान ॥ ६ ॥

॥ छन्द चाल ॥

गुन मूल अठाइस धार । चारित तेरह परकार ॥ मुनिवर पदको प्रतिपाल । तप करे कठिन दरहाल ॥ ७ ॥
समकित सिव बीजन जाको । मिथ्यात उदै है ताको ॥ ऐसो कुपात्र तिक माहीं । उतकृष्ट कुपात्र कहाहीं ॥ ८ ॥
व्रत धर श्रावकहै जेह । मध्यम कुपात्र भनि तेह ॥ गुरु देव शास्त्र मनि आनै । आपापर कबहू न जानै ॥ ९ ॥
वाहिज कहै मेरे ठीक । अंतर गति सदा अलीक ॥ तेजघन कुपात्र जानों । सरधानी मन में आनो ॥ १० ॥

दोहा ॥

कह्यो कुपात्र विशेषइह । जिनवायक परमान ॥ अब अपात्र के भेद तिहु । सो सुनि लेहु सुजान ॥ ११ ॥

छन्द चाल ।

अंतर समकित नहिं जाके । वाहिर मुनि क्रिया नहिं ताके ॥ विपरीत रूप नहिं धारी । जिह्वादिक लंपट भारी ॥ १२ ॥
उतकृष्ट अपात्र जैसलच्छिन । परखै अति परम विचच्छन ॥ ऐसेही मध्यम जानो । समकित विनुव्रत मनि आनो ॥ १३ ॥

तनु स्वेत बसन के धारी । मानै हम हैं ब्रह्मचारी ॥ दूजौ अपात्र लखि योहीं । सुनि जघन्य अपातर जोंही ॥ १४ ॥
ग्रहपति सम वसन धराहीं । मिथ्या मारग चलवाहीं ॥ नर नारिनकों निज पाय । पाड़ै अति नवन कराय ॥ १५ ॥
वचन आश चिरंजी भाखै । मननें निज गुरु पद राखै ॥ मिथ्यात महाघट व्यापी । ए जघन्य अपात्र जु पापी ॥ १६ ॥
वाहिज अभ्यन्तर खोटे । नित पाप उमावै मोटे ॥ श्रुत देव विनौ नहिं जानै । नव रसयुत ग्रन्थ वखानै ॥ १७ ॥
रुलि है भवसागर माहीं । यामें कछु संशय नाहीं ॥ इनके वन्दक के जीव । दुरगतिमहि भ्रमहिं सदीव ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पात्र कुपात्र अपात्र के, भेद मने सब पांच । तिनकी साखा पंच दस, विहन कहे सब सांच ॥ १९ ॥
अब इनको आहारजू, श्रावक जिहि विधि देय । सो वर्णन संक्षेप तें, भवि चित धरि सुनि लेय ॥ २० ॥
दोष छियालिस टालिकै, श्रावक के घर माहिं । वरती जनिपजे असन, सुखकारी सक नाहिं ॥ २१ ॥

छन्द चाल ।

दिनपति की घटिकासात । चढ़िया श्रावक हरषात ॥ द्वारे पेषण की वार । फासू जल निजकर धार ॥ २२ ॥
मुनिवर आयो पड़िगाहै । अति भक्तिवन्त उरमाहै ॥ दातारतने गुणसात । तामाहे है विख्यात ॥ २३ ॥
फुनि नवधा भक्ति करेहि । अति पुन्य महा सञ्चेइ ॥ निज जनम सफल करि जानै ॥ बहुविधि मुनि स्तुति वखानै २४
मुनिवर वन गमन कराई । पीछे आतही सुखदाई ॥ भोजनशाला में जाई । जीमें श्रावक सुचिपाई २५ ॥
जो द्वारापेषण माहीं ॥ मुनिवर नहिं जोग मिलाई ॥ तो निज अलाभ करि जानै । चिन्ता मनमें अति आनै २६ ॥
हिय में ऐसी ठहराय । हम अशुभ उदै अधिकाय ॥ करिहै श्रावक उपवास । अथवा रसत्याग प्रकास २७ ॥

सोरठा ।

दान थकी फलहोय, जो उतकृष्ट सुपात्रकों सो सुनियो भवि लोय अति सुखकारी है सदा २८ ॥

सवैया ३१.

तीर्थङ्करदेवन को प्रथम आहार देय वह दान पति तदभव मोक्ष जाय है । पीछें दान देनहार दृग को धरैया सार श्रावक सुव्रतधार ऐसो नर थायहै ॥ जो पै मोक्ष जाय तो तो मनै न कहाया कहूं निश्चयहूं नाहिं देवलोकको सिधाय है ॥ पायके अनेक रिद्धि नर सुरकी स्पृद्ध निकट सुभव्य निर्वाण पद पाय है २९ ॥

उतकिष्टपात्रनिमें उतकिष्टतीर्थङ्कर तिनिदानको तो फल प्रथम वखानियो । अब उतकिष्टत्रिकमांहि रत्नै मध्य फुनि जयन्नि मुनीस दान फल ऐसो जानियो ॥ दानो दृगव्रत धारी तिनही असन दिये कलप वसैया सुर हैहै सही मानियो ॥ अवर विशेष कछु कहनो जरूर इह तेऊ सुनो भव्य सुखदाई मनि आनियो ३० ॥

प्रथम मिथ्यात भाव मध्य बंध मानवके परयो पीछें दृग पायव्रत धारी लयो है ॥ फनि मनिराजनिको त्रिविध सुविधिजुत दोप अन्तराय टालि असन सुदीयोहै ॥ ताँह बंधसेती उतकिष्ट भोग भूमिजाय जगल्या मनुजथाय पुण्य उदै कीयो है । तहां आय पूरी कर देवपद पाय अहो मुनिनको दान देति ताको धनि जीयो है ३१ ॥

सुन उतकिष्ट भोग भूमी क कछुकओजों कहूं तीन पल्ल तहां आयु परमानिये ॥ कोमल सरल चित्त पाइये कलप निति दस परकार नानाविधि भोगविधि दानिये जुगल जनम थाय मातपिता खिरजाय छींक औजमाहीं पाय ऐसी विधि मानिये ॥ निज अंगूठा को सुधारस पान करि दिनक ईस मांझ तनु पूरनता ठानिये ३२ ॥

दोहा ॥

तीनदिवस वीते पछै, लघ वदरी परिमाण । लेय अहार सुखी महा अरु निहार नहिं जाण ॥ ३३ ॥
उत्तम पात्र आहारको दाता फल अति सार। पावे अचरज कछु नहीं. अब सुनियो निरधार ३४ ॥
कृत कारित अनुमोदना तीनहुं सम सुखदान । कही भली ताकी कथा कहों यथा जिनवैन ॥ ३५ ॥

छप्पय छन्द ॥

वज्रजंघ श्रीमती सर्प सरवरकैउपरि । चारण जुगल सुमुनिहि भक्तजुत दियो असनि परि ॥
तहां सिंह अरु शूर नकुल बानर चहु जीवहि । करि अनुमोदन बंध लियो सुख युगल अतीवहि ॥
सुरहोइ भुगति नर सुर सुखह पुत्र वृषभतीर्थेशके । हूई धरि उग्र तपको भए सिवतिय पति नववसके ३६ ॥
वज्रजंघ नृप आप अवर श्रीमति त्रिया भनि । भोग भूमि है जुगल भुगति सुरसुखहि त्रिविधिनी ॥
फुनि दिववासी देव नपति रिधि भुगति सुखदायक ॥ दशमें भव नृपजीव तीर्थङ्कर वृषभ सुखदायक ॥
श्रीमतीयजीव श्रेयांसहु ऋषभनाथको दानदिय । दुहूपात्र दान पतित पवि भव करि होयसिद्ध सुख अमित लिय३७

दोहा ।

कृतकारित अनुमोदि की कही सुनी चित धारि ॥ अति विशेष इच्छा सुनन महा पुराण मझारि ॥ ३८ ॥
इहां प्रसन कोऊ करै । मिथ्यादृष्टी कोय ॥ बाहिज श्रावक पद क्रिया ॥ कहीयथावत होय ॥ ३९ ॥
भाव लिंग मुनि तासधरि । जुगत आहारक नाहि ॥ सो मुझकू समझाय कहु । जिम संशय मिटि जाहि ॥४०॥
अथवा श्रावक दृग सहित किरिया पात्र सार ॥ द्रव्य लिंग मुनि राज कौं ॥ देयक नहीं आहार ॥ ४१ ॥

॥ छंद चाल ॥

ताके भेद न संदेह । अवसुनियै कथन सु एह ॥ जैसे सुनियो जिन बानी । तैसे मैं कहूं बखानी ॥ ४२ ॥
श्रावक की किरिया सार । मिथ्यात न छाडी लार ॥ चरया किरिया मुनि राई । आई जो लेइ घटाई ॥ ४३ ॥
मुनि ग्यानवान जो थोय । निर दोष आहार गहोय ॥ द्रव्य श्रावक को जानि । ताकीनहिं दूषन मानि ॥ ४४ ॥
मुनिअसन नियम नहिं एह । दृगव्रत धारिकहि कै लेह ॥ किरिया सुध जाकी होई । तहलेई आहार संक खोई ४५॥
दरसन जुत श्रावक होई । द्रव्य मुनि आवै कोई ॥ जानै बिनु देय अहार । ताकौं नहीं दोष लगार ॥ ४६ ॥

श्रावक जानै जो तेह । मिथ्या दृष्टी मुनि एह ॥ जाकों मूलन पड़ि गाही । समकित गुण तामैं नाहीं ॥ ४७ ॥
निज दरशन को भवि प्राणी । दूषण न लगावै जाणी ॥ जिन के नित इह व्यापार । चालै निज बुद्धि विचार ४८॥
कोऊ बूझै फिर ऐसे । विनु ग्यान सरावग कैसे ॥ मुनि क्षेम परीक्षा जानी । यम हिरदै यान समानी ॥ ४९ ॥
ऊतर सुनि अव अति ठीक । यामैं कछु नांहि अलीक ॥ प्रथमहि श्रावक गुण पालै । पातर लखि ले ततकालै ५०॥
अथवा ग्यानी मुनि पास । मुनि है तिन को परकास ॥ श्रावक श्रावक निज माहीं । लखि पात्र कुपात्र बताहीं ॥ ५१॥

॥ छप्पय ॥

अणागार उतकृष्ट पात्रकी जो विधि सारी । कही यथारथ ताहि धार चित मैं अति प्यारी ॥
सुन भवि अव धारि करहु अनुमोदन जाको । निश्चय तसु श्रद्धान किये सुरपद है ताको ॥
अब मध्य जघन्य दुहुपात्रको, कहै दान अर फल यथा । जिन आगम मध्य कह्यो तिसो सुनो भवि इह कथा ॥ ५२ ॥

॥ चौपाई ॥

मध्यमपात्र सरावग जान । व्योरो पूरव कह्यो वखान । इनमें भेद कहे हैं तीन ॥ उत्तम मध्यम जघन्य प्रवीन ॥५३॥
श्रावक मध्यम पात्र मझार । भेद एकादश सु तहु विचार ॥ जाहि यथा विधिजोग अहार । त्यों श्रावक देहै सुखकार
इनको दान तणो फल जान । मध्यम भोग भूमि सुवखान ॥ जनमत मात पिता मरिजांय । जुगल्या छींक जंभाकी पाय ५५
तनु निज अमृत अंगुठा थकी । तीस पांच दिन पूरणथकी ॥ उचित कोस दुदिन जाय । कहै आहार निहार न थाय ५६
कलपद्रुम दशविधि के जास । नाना विधि दे भोग विलास ॥ दुयपल आयु भुंजि सुर होय । मध्यपात्र फल जानो लोय ५७
अरु इह कथन महा सुखकार । ग्यारा प्रतिमा में निरधार ॥ आगे कहिये प्रथम सुजान । पुनरुक्तको दोष वखान ५८॥

दोहा ।

मध्यपात्र आहार फल, कह्यो यथावत सार । अव जघन्य की पात्रविधि, सुनहु दान फल कार ॥ ५८ ॥
क्षायक क्षय उपशम तृतिय, उपशम तीन प्रकार । इनही गृही आदरे, यथा योग्य सुखकार ॥ ५९ ॥

चौपाई ।

जघन्य पात्रके दाता जान । जघन्य युगलया होत प्रमाण ॥ छींक जंभाई ते पितु माय । मरै आपपूरण तनु पाय ६० ॥
दिन गुणचासे कोस प्रमाण । आयु पल्य इक भुगते जाण ॥ एक दिवस बीतैं आहार । लेई बहेडा समन निहार ॥
कल्पवृक्ष दसविधि सुखकार। नाना विधि दे भोग अपार ॥ पूरण आयुक रविसुरथाय ॥ नाना सुख भुगतैं अधिकाय ६१।

दोहा ।

जघन्य सुपात्र आहार फल, कह्यो जेम जिन वानि । अबैं कुपात्र आहार फल, सुनलो भवि निज कान ॥ ६२ ॥

चौपाई ।

द्रव्य मुनी श्रावकहू एह । विनु समकित किरियाहूं तजेह ॥ वाहर समकित कीसी रीत । दरशन विन सरधा विपरीत॥
इन तीनहूं कुपात्रको दान । देहि तास फल सुनहु सुजान । जाय कुभोग भूमिके माहिं । उपजै मनुष्यहीन अधिकाहिं ६४
अवर सकलमानव की देह । मुख तिरयंच समान है जेह । हाथी घोड़ा बैल वराह । कपि गर्दभ कूकर मृग आह ६५ ॥
लंबकरण अरु इकटंगीया । उपजै युगल बराबर भिया । एक पल्य आयुर्बल पूर । माटी मीठा तृण अंकूर ॥ ६६ ॥
तिनहि खाहि निज उदर भरेय । रहै नगनही मन्दिर केह । मरि विन्तर भावन जो यसी । होभुगतै सुख सुराविधि जिसी

दोहा ।

अब अपात्र के दानते, जैसो फल लहवाय । तैसो कछु वरनन करूं, सुनहु चतुर मनलाय ॥ ६८ ॥
जो अपात्र को चिन्ह हैं, पूरव कह्यो वनाय ॥ दोष लगै पुनरुक्तको, यातें अब न कहाय ॥ ६९ ॥

सोरठा ।

जो अपात्रको दान, मूढ़ भक्तिकर देत हैं । सो अतीव अघ थान, भव भ्रमिहैं संसार में ॥ ७० ॥

छन्दचाल ॥

जैसे ऊखर में नाज । वाहै विन उपजन काज ॥ मिहनत सव जावै योंहीं । कण नाजन उपजै क्योंहीं ॥ ७१ ॥
तिम भूमि अपातर खोटी । पावे विपदादिक मोटी । दुरगति सुखकारण जाणी । तिन दानन कबहु ठानी ७२॥
धेनुनं तृण चरवावे । तावैं तो दूधहि पावै ॥ अति मिष्ट पुष्ट कर भारी । बहुते जिय को सुखकारी ॥ ७३ ॥
तिम पात्रहि दान जो दीजे । ताको फल मोटो लीजे ॥ सुर गति में संसय नाहीं । अनुक्रम शिवथान लहांहीं ॥७४॥
सरपहि जो दूध पियावे । तापें तो विषको खावै ॥ सो हरे प्राण ततकाल । परगट जानो इह चाल ॥ ७५ ॥
जिम दान अपात्रह देई । वह भवते नरक लहेहि ॥ फिरि भवमें पंच प्रकार । आवर्त्तन करे अपार ॥ ७६ ॥
लखि एक जाति गुण न्यारे । तावो दुय भांति करारे । इकतो गोलो बनवावे ॥ दूजं पातर घडवावे ॥ ७७ ॥
गोलो डालै जल माहीं । ततकाल रसातल जाही ॥ पातर जलतर है पारे । औरन को पार उतारे ॥ ७८ ॥
तिम भोजन तो इकसाहीं । निपजै गृहस्थ घर माहीं ॥ दीजे अपात्र को जेह । ताते नरकादि पडेह ॥ ७९ ॥
वह उत्तम पात्रह दीजे । सरधा रुचि भक्ति करीजे ॥ इह भवते ह्वै दिव वासी । अनुक्रमतें शिवगति पासी ॥ ८० ॥
इक वाय नीर चलवाई । नींवरु सांठा सिंचवाई ॥ सो नींव कटुकता थाई ॥ सांठा रस मधुर गहाई ॥ ८१ ॥
तिम दान अपात्र जो करो । दुखदाई नरक बसेरो । भोजन उत्तम पातरको ॥ दीपक सुर शिवगति घरको ८२ ॥
इह पात्र अपात्रह दान । भाख्यौ दुहवन को मान ॥ सुखदायक ताहि गहीजे । बुध जन अब ढील न कीजे ॥८३ ॥
दुखदायक जाण अपार । ततखिण तजिए निरधार ॥ फलपात्र अपात्तर ठीक । इनमें कछु नाहिं अलीक ॥ ८४ ॥
जो धन घर में वहुतेरो । खरचनको मन है तेरो ॥ तो अंध कूप के माहीं । नाखै नहिं दोष लहाहीं ॥ ८५ ॥
दीयो अपात्र को सोई । भव भव दुखदायक होई ॥ सरपहि पकड़ै नरकोई । काटे ताको अहि वोई ॥ ८६ ॥
इक वार तजै वहि प्राण । वाको दुख फेर न जाण ॥ अरु भक्ति अपातर केरी ॥ ताते फिर है भवफेरी ॥ ८७ ॥
य.तें अहि गहियो नीको । खोटे गुरुतें दुख जीको ॥ तातें पोटो परहरिये । नित सुगुरु भक्ति उर धरिये ॥८८॥

अडिल्ल छन्द ॥

जो पात्तर के तांई दान दे मानतें । अरु अपात्र कों कवहु न दे निज जानते ॥ पात्र दान फल सुरग क्रमाहि शिवपद लहै । भोजन दिए अपात्र नरक दुख अति सहै ॥ ८८ ॥ दया जानि मन आन दुखित जन देखिकै । रोग ग्रसित तन जानि सकति न विशेष कै । मन मैं करुणा भाव विशेष अनाइकै । यथा योग जिह चाहे सुदेह वनाइकै ॥ ८९ ॥

फलवर्णन चौपाई ॥

लहै संपदा भूपति तणी । नाना भोग कहां लों भणो ॥ उत्तम जाति लहै कुलसार ॥ इह फल पातर दान अहार ९० ॥ अतिनीरोग होय तन जास । हरै और कों व्याधि प्रकास ॥ अति सरूपता औषध जान । दियो पात्रको तस फल जान ९१ ॥ दीरघ आयु लहै सो सदा । जगत मान तिहकी शुभ मदा ॥ सुर नर सुखकी कितियक वात । अभय थकी तद्भव शिवपात ९२ शास्त्र दान देवातें सही । भवि अनक्रमतें केवल लही । समवशरण विभवो अविकार । पावै तीर्थंकर पद सार ९३ ॥ दया दानतें कीरति लहै । सगरे भले २ यों कहै ॥ निज भावा माफिक गति थाय । दान दियो अहलो नहि जाय ९४ ॥

दोहा ।

पात्र कुपात्र अपात्र को, पूरो भयो विशेष । अवै अन्य मत दान दस, कहों कथन अवशेष ॥ ९५ ॥

सवैया ३१

गऊ हेम गज गेह वाजि भूमि तिल जेह, क्रिया दासी रथ इह दस दान थाय है । इनकों कथन करें यांहि सठ जानिलेह, दान को दिवाय नरकादिक लहाय है ॥ हिंसादिक कारण अनेक पापरूप जाणि, अवर लिवैया दुरगति को सिधाय है । अतिही कलंक निंद्यधाम पुन्यको न लेस मति मान लेन देन दुहूको तजाय है ॥ ९६ ॥

दोहा ।

दसों दान अनमति तणा, जैनी जन जो देह । अघ हिंसादि वढायकैं । कुगति तणा फल लेह ॥ ९७ ॥

इतिचतुर्थ शिष्यात्रत अतिथि संविभाग कथन संपूर्णम् ।

अथ आहार दानके दोष को व्योरा ॥

छन्द चाल ।

निपज्यों ग्रह मध्य आहार । तिह लेय सचित परिहार ॥ अथवा सचित मिल जाई ॥ इह अतीचार कहवाई ९८ ॥
प्राशुक धरियो जो दर्व । ढांके सचित्तसों सर्व ॥ दूजो गनिये अतीचार । याहू कूं बुधजन टार ॥ ९९ ॥
आपण नहिं देय अहार । औरन को कहै एम विचार । ऐही आहार दो भाई ॥ तीजो दूषण इह थाई ॥ ६०० ॥
मुनिको कोइ देई आहार । चित में ईर्षा इह धार ॥ हम ऊपर है क्यों देई । चौथो इह दोष गनेई ॥ १ ॥
द्वारावेषण के कालै । गृह काज करत तहां हालै ॥ लंघिगए गेह में आवै । पंचम अतीचार कहावै ॥ २ ॥

दोहा ।

इह अतिथि विभाग कै, अतीचार भनि पांच । इनहि टाल भविजन सदा, जिन वच भाषै सांच ॥ ३ ॥
व्रत द्वादश पूरण भये, पांच अणुव्रत सार । तीन गुणव्रत सार फनि, शिक्षाव्रत निरधार ॥ ४ ॥
जैसी मति अवकास मुझ, कियो ग्रन्थ अनुसार । किसन सिंह कहि अब सुनो, कथन विधि परकार ॥ ५ ॥

इति अतिथि संविभाग संपूर्णम् ।

अथ सतरानेमोंका व्योरा ।

दोहा ।

जे श्रावक आचारजुत, नित प्रति पालै नेम । मरयादा दस सात तसु, मन वच क्रम धर प्रेम ॥ ६ ॥

श्लोक ।

भोजनेपट्रसेपाने कुंकुमादिविलेपने । पुष्पताम्बूलगीतेपु नृत्यादौब्रह्मचर्यके ॥ ७ ॥ स्नानभूपणवस्त्रादौ वाहने शयनासने । सचित्त वस्तु संख्यादौ प्रमाणं भज प्रत्यहं ॥ ८ ॥

चौपाई

भोजन की मरयादा गहै। राखै जेती वारह लहै॥ परके घरको जीमण जोइ। प्रात समय में राख्यौ होइ॥ ९॥
अन्नअवर नीठादिक वस्तु। भोजन माहे जान समस्त॥ असन चवीनी अर पकवान। गिनती माफिक ख य सुजान॥ १०॥
षटरसमें जो राखै तजै। तिहि अनुसार सु निति प्रति सजै॥ पानी सरवत दूधरू मही। दरव जिते पीवे के सही॥११॥
ता मधि बुध राखै जे दर्व। ताविनु सकल त्यागिए भव्व॥ चोवा चंदन कुंकुम तेल। मुखधोवो रु अरगजा मेल॥१२॥
औषध आदि लेप है जेह। संख्या राख भोगिएतेह॥ पुष्प गंध सूंघियै तेह। जाप समैं के राखे जेह॥ १३॥
कर मुकती जो फल इतनी। सचित्त मध्य तेऊ राखनी॥ सचित्त मांहि राखो नहिं जाय। जिह दिन मूलन करहिं गहाय १४॥
पान सुपारी डोडा गही। लोंगादिक मुख सोध जुकही॥ दालचीनी जावंत्री जान। जातीफल तंबोल बखान॥१५॥
पानआदि सचित्त सु थाय। सचित्त मांहि राखे तो खाय॥ सचित्तमांहि राखत बी सरै। तोवह दिन खांनी नहि परै॥१६॥
गीत नाद कोतूहल जहां। जेवो राख्यो जैहै तहां॥ मरयादा न उलंघे कदा। जो उप सर्ग आयव्है जदा॥ १७॥
एक भेद यामे है और। आप आपनी वैठै ठोर॥ गावत गीत तिया नीकली। सुनकर हरष्यो चित धररली॥१८॥
तामैं दोष लगै अधिकाय। मध्यस्थभावरहै तिहिं ठाय॥ पातर नृत्य अपारे मांहि। नटवा नट जिहिं नृत्यकरांहि॥१९॥
वादीगर विद्या जेवीर॥ मुकती राखै जावे धीर॥ पर वनिताको तो परिहार। निज नियमे जिम कर निरधार २०॥
पांचों परवी में तोसोह। अवर दिवस जैसी चित गोइ॥ तजै सरवथा तोपर हरै। राखै अंगी कार सु करे॥ २१॥
सेवत विषै जीव की घात। उपजै पाप महा उतपात॥ जिह जागै राखै मरयाद। सोनिरवाहै तजि परमाद॥ २२॥
स्नान करन राखै तो करै। सो हथको कबहू नहिं टरै॥ आभूपण पहिरे है जिते। घरमें और धरे हैं तिते॥ २३॥
पहरन की इच्छा ज होई। सो पहरै सिवाय नहिं कोई॥ भूपण अन्य तनें की रीत। राखै मांम पहर कर प्रीति २४॥
कपडे अगले पहरे होइ। वेही मुखते राखे सोइ॥ अथवा नये ऊजरे होइ। राखे सोपहरै मन दोइ॥ २५॥

सुसुरादिक मित्रन के हिए । नृपआदिक जे वकसीस किए ॥ मुकते राखे व्है सो गहै। निज मरयादा की निरवहै ॥ २६॥
पहरण पांवतणी पाहणी । तेल मस्तु निमाहे गणी ॥ नई पुराणी निज परतणी । राखै सो पहरै इम भणी ॥ २७ ॥
इत्यादिक वाहन जे होइ । जो असवारी मुकती जोई ॥ काम वड़ै चढ़िहै तिह परी । और न काम नेम जो धरी २८ ॥
सोवे कोपालिक जो जान । सोड तुलाई तकियो मान ॥ जेतो सयन करनको साज । व्रत धर संख्या धर सिरताज२९
खाट पराई इक दुय चार । काम पड़े बैठे सुविचार ॥ विनु राखै बैठे सो नही । यह जिन आगम सांची कही ॥ ३० ॥
गादी गाऊ तकियो जाण । चौको चौकी माटी आण ॥ सिंहासण आदिक हैं जिते । आसन माहिं कहावैं तिते ॥३१॥
गिलम दुलीचा सतरंजणी । जाजम सादी रूई तणी ॥ इनहि आदि बिछोणा होय । आसनमें गिनलीजे सोय ॥३२॥
निज घरके अथवारे ठाम । मुकते राखे जे जे धाम ॥ तिनपर बैठे वाकी त्याग । जाको व्रत ऊपर अनुराग ॥३३॥
सचित्त वस्तुकी संख्या जान । धान वीज फल फूल बखान ॥ पाणी पात्र आदि लख जेह । मिरच सोपारी डोड़ाएह३४॥
सारे फल सगरे हैं जिते । सचित माहिं भाखे हैं तिते ॥ मरजादा मुकती जे माहिं । वाकी सबको भेटै नाहिं ॥ ३५ ॥
संख्या वसत तणी जे धरे । सकल दरवकी गिणतीकरे ॥ खिचड़ी लाडू खाठो खीर । औषध रस चूरण गिन धीर३६
वहुत दरव मिल जो निपजह । गिणती माहि एक गणिलह ॥ राखै दरव जिते उनमान । सांभलग गिणिले वुधिमान३७
सांझ करे सामायक जवै । सतरह नेम संभारे तवै ॥ अतीचार लागे जो कोय । सक्ति प्रमाण दंडले सोय ॥ ३८ ॥
वहुरि आखड़ी जे निशिजोग । धार निवाह करे भवि लोग ॥ इहविधि नित्यनियम मरयाद । पालैधरि भविचित्त अहलाद३९
महा पुन्यको कारण सही । इह भवते शुभ सुरगति लही । अनुक्रमते ह्वै है निरवाण ॥ वुध जन मन संसय नहिं आण ४०

दोहा ।

नित्य नेम सत्रह तणो, कथन कियो सुखदाय । अंतराय श्रावक तणा, अवभवि सुनि मन लाय ॥ ४१ ॥

। इतिसत्रह नेम संपूर्णम् ॥

अथसातअंतरायका कथन ॥ चौपई ॥

जिन मत अंतराय जे सात । श्रावक का भापा विख्यात ॥ रुधिर देखिवो नाम सुनेइ । तवबुधजन आहार तजेइ ४२ ।
मांस नजर देख सुन नाम । भोजन तजै विवेकी राम ॥ नैंनन देखे आलो चर्म । आसन तजे उपजै बहु धर्म ॥४३ ॥
हाड राध अरु मूवोजीव । नजर निहार श्रवण सुनलीव ॥ ततपिण अन्न छांडि सो देइ । अंतराय पालक जनजेइ ।४४।

दोहा ।

सोह करे जिह वस्तुकों, प्रथम हसों फिर कोइ । सोले थालो में धरे, अंतराय जो होय ॥ ४५ ॥
श्लोक एक में सातए, कह्यो सबन को भेव । तिह सिवाय धापे अवर, सोव्योरो सुनिलेव ॥ ४६ ॥
चंडालादिक नर जित, हीन करम करतार । तिनहि लखित वचनहि सुनत, अतराय निरधार ॥ ४७ ॥
मल देखत फुनि नाम सुनि, असन तुरत तजि देह । सोव्रत धारी श्रावक सही, अन्य दुष्टतागेह ॥ ४८ ॥
जिन प्रतिमा अरु गुरुनकों, कष्ट उपद्रवथार्य । सुनि श्रावक जन आसन तज, उपवासादि कराय ॥ ४९ ॥
पुस्तादिक जल अगनि को, उपसर्गहूवो जांन । भोजन तज फुनि करय भवि, उपवासादि बखांन ॥ ५० ॥
नित प्रति श्रावक कों कहै, अंतराय तहकीक । पालें ते शुभगति लहैं, यह जिन मारग ठीक ॥ ५१ ॥

इति अंतराय समाप्तम् ॥

अथ सात परकार मौंन ॥ दोहा

मौंन जिनागम में कहो, सात प्रकार बखान । तिनको वरनन भविक जन, सुन मन वच क्रम ठान ॥ ५२ ॥

चौपई

प्रथम मौंन जल स्नान करंत । दूजी पूजा श्री अरहंत ॥ भोजन करता बोले नहीं । चौथी सतवन पढते कही ५३ ॥
सेवत काम मौंन को गहै । यही वचन जिन आगम कहै ॥ मल मूत्रहि क्षेपै जिहिवार । एलखि सात मौंन निरधार ॥ ५४ ॥

अडिल्ल ।

द्वादशांग मयअंक सकल जानो सदा। असन स्थान मलमूत्र अवर तिय संग सदा ॥
वरण उचार करणन भाख्यो जैन मैं ॥ यातें गहिये मौंन सपत विरियां समैं ॥ ५५ ॥

॥ चौपाई ॥

मौन बरत के धारक जीव । चेष्टा इतनी न करि सदीव॥ भौंह चढ़ाइ नेत्र टिमकारि । करै जु सैन्याकाम विचारि ।५६।
सीस हलाय करै हुंकार । खांसै खंखारै अधिकार ॥ कर अंगुल तें सैंन बताय । अथवाअंकों में लांखवाय ॥ ५७ ॥
इतनी किरिया करिहै सोय॥ मौंन बरत तसु मैलो होय ॥ अरु जो सैंन समस्याकरी। मतलब सम जैनहिं तिहिं धरी ।५८।
मनमैं अकुलायर है क्रोध। क्रोध थकी नासै सुभ बोध ॥ यातैं जे भविजन मति मान । मौंन धरो आगम परवान ।५९।
अरु तिह समय करै सुभाव । तातें कहै पुन्य प्रढ़ाव ॥ पुन्य थकी लहि है सुरथान । यामैं कछु संसै नहीं आन ॥ ६० ॥

अंतराय संपूर्णम् ॥

अथसंन्यासमरणकी विधि॥

सवैया । ३१

दृगधारी श्रावक व्रत पालै पीछैही संन्यास सहित अंतकाल तजे निज प्राणही । संन्यास प्रकार दोइ ए कहे कषाय नाम दूतिय आहार त्याग प्रगट वखानही॥ आराधना च्यारि भावेदरसन प्रथम दूजी ज्ञान तीजी चरण चिशेषतप जानही जैसी विधि कषाय सन्यास को विचारै जैसे कहूं भव्य सुनि मनमांहि ठीक आनही ॥ ६१ ॥

दोहा ।

सकल स्वजन पर जननितैं । मन वच काय त्रिशुद्ध ॥ सल्य त्यागि छिम है छिमा । करि परिणाम विशुद्ध ॥ ६२ ॥
अति नजीक निजमरन लखि । अनुक्रम तजय अहार ॥ पाछैं अनसन लेय कै। नियम असन चहुंकार ॥ ६३ ॥

चार आराधन कों तवें । आराधैं भवि सार ॥ दर्शनज्ञान चरित्र फुनि । तप द्वादश विधि सार ॥ ६४
देव शास्त्र गुरु ठीकता । तत्वारथ सरधान ॥ निसंकादि गुण जो सहित । लखि दर्शन मति मान ॥ ६५ ॥

सवैया । ३१

धरम में संका नांहि निसंकित नाम ताहि वांछातैं रहित निकांक्षत गुण जानियै । ग्लान त्याग निरविचिकित्स देव गुरुश्रुत मूढ, तात जैवासौं अमोढ्यग्यान मानियै । परदोष ढांकै उपगूहन धरैया सोई भ्रष्टकों स्थापै स्थिति करण वखानियै । मुनि गृही धर्म को जु कष्ट टारै वात्सल्य है मारग प्रभावना प्रभावत मवानियै ॥ ६६ ॥

सन्यास मरण संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टप्रकार ज्ञानको आराधना ॥

दोहा ।

आठप्रकार सुज्ञानको, आराधै मति मान । तस वरणन संक्षेपते, कहै ग्रन्थ परमान ॥ ६७ ॥
प्रगट वरण लघु दीर्घ जुत, करि विशुद्ध उपचार । पाठ करे सिद्धांत को, व्यंजन ऊर्जित सार ॥६८ ॥
आगम अरथ सुजाणि कै, सुद्ध उचार करेहि । अरथ समस्व संदेह विनु, जो सिद्धांत पढ़ेहि ॥ ६९ ॥
अर्थ समग्र सुनाम तसु, जानि लेहु निरधार । सब दारथो भय पूरण को, आगे सुनहु विचार ॥ ७० ॥
व्याकरणादि अरथकों, लखि विनाम अभिधान । अंग पूर्व श्रुत सफल को: करे पाठ जे जान ॥ ७१ ॥
पूर्वान्हिक मध्यान्ह फुनि, अपरान्हिक तिहु काल । विनु आगम पढ़िये नहीं, कालाध्ययन विसाल ॥७२॥
सरस गरिष्ट अहारको. तज करि आगम पाठ । गुण उपधान समृद्धि इह महा पुन्यको पाठ ॥ ७३ ॥
प्रथम पूज्य श्रुत भक्ति युत, पढ़ि है आगम सार । सुखकर जानो नाम तसु, प्रगट विनयआचार ॥ ७४ ॥
गुरु पाठक श्रुत भक्ति युत, पठत विना संदेह । गुरांग्यत पन्हव प्रगट ॥ सत्यनाम सुसंदेह ॥ ७५ ॥

पूजा आसन मान बहु; चित धरि भक्ति प्रसिद्ध । श्रुत अभ्यास सुकीजिये; सो बहु मान समृद्ध ॥ ७६ ॥

इति अष्टप्रकार ज्ञानको आराधन संपूर्णम् ।

अथ पंचमहाव्रत तीनगुप्त पांच सुमति ये तेरह विध चारित्रका वरणन ॥

अडिल्ल ॥

धरत अहिंसा अनृत अचौर्य तीसरो । ब्रह्मचर्य व्रत पंचम आकिंचन खरो । मन वच तन तिहु गुपति पंच सुमति जु सही । ए साधन आराधन तेरा विधि कही । ७७ ॥ अनसन आमोदर्य वस्तु संख्या गनी । रस परत्यागी रुविवकत सय्यासन भनी । काय क्लेश मिलि छह तप वाहिज के भये । षट् प्रकार अभ्यन्तर आगम वरणये ॥७८॥ प्रायश्चित अरु विनय वैयावृत जानिये । स्वाध्यायरु व्युत्सर्ग ध्यान परमाणिये । मिलि वाहिज अभ्यन्तर बारा विधि लिखी । तप आराधन एह जिनागम में अखी । ७९॥

दोहा ।

दरसन ज्ञान चारित्र तप, आराधन व्यवहार । अति समय भावे व्रती, सुरसुख शिव दातार ॥ ८० ॥

इति तप १२ चारित्र १३ संपूर्णम् ॥ व्यवहार आराधना संपूर्णम् ॥

निश्चै आराधना लिख्यते ॥

दोहा ।

अब निश्चै आराधना, वरणो चार प्रकार । आराधक शिव पद लहै, यामें फेर न सार ॥ ८१ ॥

सवैया ॥ ३१

आतम के ज्ञान करि अष्ट महागुण धर, दरसन ज्ञान सुख बीरज अनन्त है । निश्चै न ये न आठ करमनि सो विमुक्त ऐसो आतमा को जानि कहिये महंत है ॥ ताहि सुधी चेतन उपरि श्रद्धा रुचि परतीतचित अचल करत जे वे

सन्त हैं ॥ निश्चय आराधना कही है दरशन याहि भावै अन्त समय सुकेवल लहंत है ॥ ८२ ॥ पुनः ॥ निज भेद ज्ञान करि सुधा तम तत्वनिकों चेतन अचेतन स्वकीय परमाणी है ॥ सप्त तत्व नव पदारथ षट् द्रव्य पंचासति काय उत्तर प्रकृति मूल जानी है ॥ इनको विचार वारंवार चित अवधार ज्ञानवान सुधचेतना को उरि आनि है ॥ संन्यास समये अन्तकाल ऐसे भाई ऐतो निश्चय आराधना सुबोध यों बखान है ॥ ८३ ॥ पुनः ॥ प्रथमहि अठाईस मूल गुण धार पंचप्रकार निरग्रंथ गुण हिय धारिये। सताइसपंच इन्द्रिनके विषयोंको त्याग वाहिज अभ्यन्तर परिग्रहको टारिये ॥ सङ्कलप विकलप मनते सकल तजि आतमीक ध्यानते सुधातमायों धारिये । परकरमादि सेती जुदो यासोंकमंजुदो निश्चय चारित्र यों आराधना विचारिये ॥ ८४ ॥

अडिल्ल ।

जो कोऊ नर मन में इच्छा धरतु है । फिरि परिणाम सङ्कोच निरोधहि करतु है ॥
सो आराधन निश्चय नय परमानिये ॥ तप इच्छादि निरोध यही मन आनिये । ८५ ॥

दोहा ।

निश्चै चहु आराधना, ग्रन्थ प्रमाण बखान । किसनसिंह धरिहै सुधी, सो शिव लहै निदान ॥ ८६ ॥
ए चहुंविधि आराधना धरै कौन पसतान । सो भविजन सुनिलीजिये, मन वच बुध करि भाव ॥ ८७ ॥

अडिल्ल छन्द ॥

जो कोऊ उपसर्ग मरण सम आय है । कै दुरभक्त पड़ै कछु कारण पाय है । जरा अधिक बल जर जर सकि न सहै तवै ॥ कै तन रोग अपार मृत्यु सम दुख जबै ॥ ८८ ॥ इतने जोग मिलाय उपाय न कछु वहै ॥ मरण निकट निज जानि विचारै मन तहै ॥ ध्याय आराधन धर्म निमत तिनकों तजै ॥ सोनर परम सुजान स्वर्ग शिवसुख भजै ॥ ८९ ॥

आराधना के अतीचार ॥

छंदचाल ॥

संलेषण कीं जो बार । जीवनकी आसा धार ॥ लोगनि के मुख अधिकाई । निज महिमा लखि हरषाई ॥ ९० ॥
निजको लखि दुख अरलोक । करिहैं न प्रतिष्ठा थोक ॥ महिमा कछु सुनय न कांनि । मरवो जवही मनआंनि ॥ ९१ ॥
मित्रनि सों करि अति नेह । पूरव क्रीडा की जेह ।। करियादिगित्र जुत रागैं । अतिचार तृतीय सुलागैं ॥ ९२ ॥
भुगत्या सुख इह भवमाहीं । निज मन ही याद कराहीं ॥ चौथो अतीचार सुजानी । पंचम सुनिये भवि प्रानी ॥ ९३ ॥
संलेषण धारि जान । मन में इन करय निदान ॥ हूंइंद्रतणो पद पाऊं । मस्तक किनही नविनाऊं ॥ ९४ ॥
चक्रवर्ती संपदा जेती । त्रिय सुत जुत व्है मुझ तेती ॥ ऐसो जो करय निदान । तप सुरतरु देहौं दान ॥
संलेषण पण अतिचार । भाष्यो इन को निरधार ॥ ए टालि संलेषण कीजै । ताकौ फल सुर सिव लीजै ॥ ९५ ॥

सवैया ॥ ३१

अन सन तप नाम उपवास कीजै जाको आभोदर्य तप लघुभोजन लहीजिए । वस्तु परिसंख्या जे तें द्रव्यनकी संख्या की जे रस परत्याग तेरस छांडिदीजिए ।। विवकत सय्यासन व्रत धारि भवि मुनि कायक्लेश उग्रतप मन कों गहीजिए ॥ ए ईपटतप कहे वाहिज के आगम में सुर सिव सुखदाई भवि वेग कीजिए ॥ ९६ ॥ प्रायश्चित्तकहैं दोष गुरु प खमाय तव विनैतप गुण वृद्धि को जोविनो कीजिये ।। वैय्यावृत्त तप गुरु धारी वैय्या वृत्तकीजै स्वाध्याय जिनागम त्रिकाल में पढीजिये ॥ व्युतसर्ग खड़ाहोय ध्यान धरिवे कों नाम ध्यान निज आतमीक गुण निरखीजियैं ।। वाहिज अभ्यंतर के तप भेद जानि पालि अनुक्रम भि यातैं गुण थानक चढ़ीजियैं ॥ ९७ ॥

दोहा ।

द्वादश तप वरनन कियो । जिनवर भाष्यो जेम ॥ कछु विशेष सम भावकों । कहूंयया मति तेम ॥ ९८ ॥

इति द्वादश तपः ।

अथ सम भाव कथन ॥

सवैया ॥

अनंतानु बंधी क्रोध पाषाणकी रेखा सम मान थंभ पाहन समान दुखदाय है। वंस विडावत माया लोभ लाख रंग जांनि इनके उदैतैं जीव नरक लहाय है॥ जव लग अनंतानुबंधी चौकडी कों धरे जनम प्रयंत जाको संग न तजायहै। याके जोरसेती जीव दर्शन सुधताकौ लहै नांही ऐसें जिनराज जी वताय है ॥ ९९ ॥ क्रोध जो अप्रत्याख्यान हल रेखावत जानि मान अस्थि थभ मांनि दुष्टता गहाय है माया अजा शृंगजानि लोभ है मजीठ अङ्ग इनके उदैतें जीव तिरयंच थाय है जवहीअप्रत्याख्यान चौकडी को उदै होय जाकै एक वरष लौं थिरता रहाय है ॥ तोलौं याको वल जोलौंश्रावक के व्रत निकों धरसकै नाहि जिनराज जी वताय है॥ ७०० ॥ प्रत्याख्यान क्रोध धूलि रेखा परमान कह्यो मान काठ थभ माया गोमूत्र समान है ॥ लोभकसु भाको रग ए ई चारयौ प्रत्याख्यान इनके उदैतें पावैं नरक पद थान है ॥ प्रत्याख्यान कषाय प्रगट उदै होत अंते च्यारि मास पर जंत रहै जानो जान है ॥ याही को विपाक सोन सकति प्रकट होत मुनि राज व्रत धरि सकैन प्रमान है ॥ १ ॥ संज्वलन क्रोध जल रेखावत कह्यौ जिन मान वेतलता कीसी नवनि प्रधान है ॥ माया है चमर जैसी लोभ हरदीको रंग इनके उदैते पावै सुरग विमान है ॥ चौथीहु कषाय चौकरी को उदै पाय ताकै च्यार पच्च ताऊ जाके प्रवल महान है। यथाख्यात चारित्र कों धरिसकै नाहि मुनि तीर्थंकर गोत्रहू जो बांधै यौं वखान है ॥ २ ॥

चौपाई।

सोलह कषाय चौकरी च्यार। नौकषाय नव नाम विचार॥ हासि अरति रति सोक वखान। भय जुगुप्सा ए षट्जान॥ ३॥
वनिता पुरुष नपुंसक वेद। ए नव मिले पचीस जु भेद॥ इनको उपसम करिहै जवै। समकित हियैं सुभ किरिया तवै ४॥

इति समभाव संपूर्णम्।

अथ एकादश प्रतिमा वर्णन लिख्यते ॥

चौपाई ॥

अव एकादश प्रतिमा सार। जुदो जुदो तिनको निरधार ॥ सो भाष्यौ आगम परवान। सुनि चितधारो भरमसुजान ।५।
दर्शन व्रत सामायिक कही ।पोसह सचित्त त्याग विध गही ॥ रयनि असन त्यागी ब्रह्मचार । अष्टमआरभको परिहार॥
नवमी परिग्रहको परिमान । दशमी आद्य उपदेशन दान ॥ एकादशमी दोय परकार । चुल्लक दुतिय अवलि व्रत धार६॥
श्रेणिक पूछै गौतम तणी । दरसन प्रतिमा की विधिभणी । गौतम भाष्यो श्रेणिक भूप ।दरशन प्रतिमा आदिसरूप ७
एकादशकी जो विध सार । जुदी जुदी कहिहों निरधार ॥ याहै सुनि करि धरिहै जेय । श्रावकव्रत धारीहै सोय ८॥
प्रथमहि दरशन प्रतिमा सुनो। त्यों निज आतम सहजै मुनो ॥ दरशन मोक्ष बीजहै सही। इहविधि जिनआगममें कही९
दरशन सहित मूल गुण धरे ।सात दिवस मन वचन न हरे । दरशन प्रतिमाको सुविचार। कछु इक कहौं सुनोसुखकार१०
देव न मानै बिनु अरहन्त । दसविधि धर्म दयाजुत सन्त । तपधर मानै गुरु निग्रन्थ । प्रथम सुध यह दरशन पंथ ११॥
संवेगादिक गुण जुत सोय । ताकी महिमा कहीहै कोय ॥ धरम धरमके फलको लखै । सो संवेग जिनागम अखै ॥१२॥
जो वैराग भाव निरवेद । गरहा निन्दाके दुइ भेद ॥ निज चित निंदै निंदा सोय । गरहा गुरुढिगजा आलोय॥१३॥
उपसम जे समता परिणाम । भक्ति पंच गुरु करिए नाम ॥ धरमरु धरमो सो अतिनेह । सोवाछल महागुण गेह ॥१४॥
अनुकंपा नितिही चित रहै। एव सुगुण जो समकित गहै । दरशन दोपलगै पणवीस । सुनियो जो कथितागणईश १५
तीन मूढ़ता मदवसुजान । अर अनायतन षट् विधि ठान ॥ आठ दोष शंकादिक कही। दोष इते तजि दरशनगही१६
भो श्रेणिक सुन इस संसार ।जीव अनन्त अनंती वार ॥ सीसमुडाय कुतप बहु कीयो । केस लोंच अरु मुनिपद लीयो १७
कीये अनन्तकाल बहु खेद । आतम तत्व न जानेउ भेद ॥जवलों दरसन प्रतिमा तणी । प्रापतिभई न जिनवर भणी१८
तातें फिरयो चवुगति मांहिं । फुनिभवदधि भ्रमिहै सक नाहिं । प्रावर्तन कीये बहु वार। फिरकरिहै जिसकेनहिं पार१९

आठ मूलगुण प्रथमही सार । वरनन कीयो विविधि परकार ॥ तातैं कथन कियो अब नाहिं । कहै दोष पुनरुक्त लगाहिं२०
कुविसन सात कह्यो विस्तार । जुवा मांसभखो बो अविचार ॥ सुरापान चोरी आखेट । अरु वेश्यासों करिये भेट २१
इनमें मगन होइ करि पाप । फल भुगते लही अति सन्ताप ॥ तिनके नाम सुनो मतिमान । कहिहों यथा ग्रन्थ परिमाण२२
पांडु पुत्र जे खेले जुवा । पांचुराज्य भ्रष्ट ते हुवा ॥ वारह वरष फिरे वनमांहि । असन वसन दुख भुगत ताहि ॥२३॥
मास लुवधराजा वक भयो । राजभ्रष्ट कै नरकहि गयो ॥ तहां सहे दुख पंच प्रकार । कवित्त न कहिसकै विसतार ॥२४॥
प्रगट दोष मदिराते जान । नाश भयो यदुवंश बखान ॥ तपधर अरु हरि ज्वलिनीकले । वाकी अगनि द्वारिका जले२५
वेश्या लगन करि हित लाय । चारुदत्त श्रेष्ठी अधिकाय ॥ कोडि बत्तीस खोई दीनार । द्रव्यहीन दुखसहे अपार २६॥
षट्‌खंडी सुभूमि मतिहीन । विसन अहेडा में अति लीन ॥ पाप उपाय नरक सो गयो । दुख नानाविधि सहतो भयो२७
पर वनिताकी चोरी करी । रावण मति हरि निज मति हरी ॥ रामरु हरिसों करि संग्राम । मरिकरि लह्यो नरक दुखधाम२८
पर युवतीको दोष महन्त । द्रुपदसुता सों हास्य करन्त ॥ कीचक फल पायो ततकाल । रावणनेहु गनिये इहचाल २९
आठ मूल गुण पाले तेह । विसन सातको त्यागी जेह ॥ अरु सम्यक्त शुद्धता धरै । पहिली प्रतिमा तासों परै ॥३०॥

दोहा ।

प्रथम प्रतिज्ञा इह कही, श्रावक के मुख जान । अब दूजी प्रतिमा कथन कछु इक कहों बखानि ॥ ३१ ॥

छन्दचाल ।

तह पांच अणुव्रत जानो । गुणव्रत फुनि तीन वखानो ॥ शिष्याव्रत मिलिकै च्यारी । दूजी प्रतिमाको धारी ॥३२॥
बाराव्रत वरनन आगे । कीनो चित धरि अनुरागे ॥ पुनरुक्त दोष तैं जानी । दूजा नहिं कथन कथानी ॥ ३३ ॥
तीजी प्रतिमा सामायक । भविजनको सुर शिवदायक ॥ आगे बारा व्रत मांहीं । वरननकीनो सक नाहीं ॥ ३४ ॥
चौथी प्रतिमा तिहि जानो । प्रोषध तस नाम वखानो ॥ वरनन मुनिवे को चाव ॥ द्वादशव्रत मधि दरसाव ॥३५॥

पंचम प्रतिमा वड़भाग । मुनि सचितकरो परित्याग ॥ काचो जल कोरो नाज । फल हरित सकल नहीं काज ॥३६॥
सव पत्रशाक तरुपान । नागर बेलि अघथान ॥ सहुकंदमूल हैं जेते । सूके फल सारे तेते ॥ ३७ ॥
अरु बीज जानिये सारे । माटी अरु लूण विचारे ॥ करित्याग सचित व्रत धारी । पंचम प्रतिमा तिहिंपारी ॥३७॥
दिन चढ़े घड़ी दोय सार । पछिलो दिन बाकी धार ॥ इतने मधि भोजन करिहै । छठी प्रतिमा सो धरिहै ॥३८॥
मरयादा धरवि आहार । चारयौ को करि परिहार ॥ तियको सेवे दिन नाहीं ॥छठी प्रतिमा सो धरांही ॥३९॥
प्रतिमा छहलों जो जीव ॥ समकित जुत धरै सदीव ॥ तिह श्रावक जघन्य सुजाणि । भाषै इम जिनवर वाणि ॥४०॥
श्रेणिक नृप प्रसन कराहीं । श्री गोतम गणधर पाहीं ॥ ब्रह्मचर्य नाम प्रतिमाको । कहिये प्रभु कथन सु ताको ॥४१॥
सुनिये अब श्रेणिक भूप । सप्तम प्रतिमा जो सरूप । मन क्रम वच धारि त्रिसुद्ध । नवविधि जो शील विसुद्ध ॥४२॥
निज पर वनिता सब जानो । आजनम पर्यन्ततजानी ॥ अब नव विधि शील सुनीजे । नितही तनु हृदय गणीजे ॥४३॥
मानवणी सुरतिय जाणी । तिरयंचणी त्रितय बखाणी ॥ ये तीनों चेतन बाम । मन क्रम वच तजि दुखधाम ॥४४॥
पाषाण काठ चित्राम । तजिये मन वच परिणाम ॥ नव विधि ब्रह्मचर्य धरीजे । सप्तम प्रतिमा आचरीजे ॥४५॥
निज घर आरम्भत जेई । परको उपदश न देई ॥ भोजन निज पर घर माहीं । उपदेश्यो कवहुं न खाहीं ॥ ४६ ॥
व्यापार सकल तजि देई । सो स्वर्गादिक सुख लेई ॥ प्रतिमा इह अष्टम नाम । आरम्भ त्याग अभिराम ॥ ४७ ॥
नवमी प्रतिमा मुनि जान । नाम जु परिग्रह परिमान ॥ निज तनत वसन धराहीं । पठने को पुस्तक ठाहीं ॥ ४८ ॥
इन विन सब परिग्रह त्याग । मध्यम श्रावक वड़ भाग ॥ दिवलातव अरकापिष्ठ । तह लों सुख लहै गरिष्ठ ॥४९॥
प्रतिमा अनुमति दस नाम । दशमी दायक सुखधाम ॥ उपदेश निज घरि परिग्रह । लेजाय असन को जेह ॥५०॥
तिनके सों भोजन लेहै । उपदश्यो कवहु न खैहैं ॥ निज परियन परजन सारे । उपदेशन पाप उचारे ॥ ५१ ॥
ताको परिग्रह मुनि लेई । पीछी कमडल सु धरई ॥ कोपीन कणगती जाके । छह हाथ वसनफुनि ताके ॥५२॥

एती परिगृह मरजाद । गहि है न अवर परमाद ॥ एकादशप्रतिमा धारै । भाखै जिन दुय परकारै ॥ ५३ ॥
प्रथमहि क्षुल्लक ब्रह्मचार । उतकिष्ठ अवल निरधार ॥ क्षुल्लक संख्या परमाण । कपडो षट हाथ सुजाण ॥ ५४ ॥
इकपटो न सीयो जाकै । कोपीन कणगतीताकै ॥ कोमल पीछी कर धारै । प्रति लेखिर भूमि निहारै ॥ ५५ ॥
सोचादि निमित्त के काजै । कमंडल ताकै ढिग राजै ॥ आहार निमित्त तसुजांनी । भ्रुकतेघर पंच वखानी ॥ ५६ ॥
उतकिष्ट अलप व्रतधारी । जिनकी विधि भाख्यो सारी ॥ मठ मंडप वन के माहीं । निस दिन थिरता ठहराहीं ॥ ५७॥
कोपीन कणगती जाके । पींछी कमंडल है ताके ॥ परिगह एतोही राखे । इम कथन जिनागम भाखे ॥ ५८ ॥
भोजन सो करय उदंड । घर पंच तणी थिती मंड ॥ चित धरम ध्यान मैं राखे । आतम चितवन रस चाखे ॥ ५९ ॥
सुनियें श्रेणिक भूपाल । दर्शन प्रतिमान विसाल ॥ तिहविनु दस प्रतिमा जानी । निरफल भाषी जिन वाणी ॥६०॥
वासन की वोलि करीजै । ऊपराउपरीज धरीजै ॥ नीचै हुई जर जर वासन । उपर ते भाजनकी आसन ॥ ६१ ॥
सब फूटि जाय छिन माही । समरथ विनु कवन रखांही ॥ प्रथमहि दर्शन दिढ कीजै । पीछै व्रत और धरीजै ॥ ६२ ॥
एकादश प्रतिमासारी ॥ ताकी गति सुनि सुखकारी ॥ जावे षोडश मैं स्वर्ग । भवदुइ तिहुं लहि अपवर्ग ॥ ६३ ॥
दशमी प्रतिमा को धारो । क्षुल्लक अरु अवल विचारी ॥ उतकिष्ट सरावक एह ॥ भाषे जिन मारग तेह ॥ ६४ ॥

दोहा ।

प्रतिमा ग्याराको कथन, जिन आगम परमाण । परिपूरणकीनों सवै, किसनसिंघ हित जाण ॥ ६५ ॥

इतिप्रतिमा ग्याराकों कथन ।

अथदानाधिकार लिख्यते ॥

दोहा ।

आहार औषध अभय फुनि, शास्त्र दान ए चार ॥ श्रावक जन नित दीजिए, पात्र कुपात्र विचार ॥ ६६ ॥

आगैं अतिथि विभाग में, वरनन कीनो सार ॥ इहां विशेष कीनो नहीं, दूषण लगैं दुबार ॥ ६७ ॥
जो इच्छा चित इनन्की, पूरब कह्यौ वृतंत ॥ देखि लेहिं अनुराग धरि, तातैं मन हरषंत ॥ ६८ ॥

इति दानाधिकारः ॥

अथ जलगालन कथन ॥

दोहा।

अबजल गालण विधि प्रगट। कही जिनागम जेम ॥ भाषौं भविजन सांभलो। धारो चित धरि पेम ॥ ६९ ॥
दोय घडी के आंतरे। जो जल पीवै छान ॥ परमविवकी जुत दया। उत्तम सरावग जान ॥ ७० ॥

छंद चाल ॥

नौतन वस्तरकै मांही। छानो जल जतन कराहीं ॥ गालन जलजन जिहिंवारै। इक बूंद मही नहिं डारै ॥ ७१ ॥
कोहूमतिहीन पुराने। वस्तर माहं जल छानै ॥ अर बून्द भूमि पर नाषे। उपजै अघ जिनवर भाषे ॥ ७२ ॥
तिन माहीं जीव अपार। मरि है संसै नहिं धार ॥ जाके करुणा न विचार। श्रावक नहीं जानि गंवार ॥ ७३ ॥
धीवर सम गनिए ताहि। जलको न जतन जिहि पाहि ॥ दुय दुय घटिका में नीर। छाणि मतिवंत गहीर ॥ ७४ ॥
अथवा प्रासुक जल करि के। राखे भाजन में भरि के ॥ अन्नकाज रसोई माहे। प्रासुक जलही वरता है ॥ ७५ ॥
अणछाएयो वरतै नीर। ताको मुनिपाप गहीर ॥ इक वरष लगै जो पाप। धीवर करिहैं सो आप ॥ ७६ ॥
अरु भील महा अविवेक। दां अगनि देय दस एक ॥ दौंवनिको अघ इक वार। कीये है जो विसतार ॥ ७७ ॥
अणछाएयो वरतै पानी। इस सम जो पाप वखानी ॥ ऐसो डर धरि मन धीर। विनु गाले वरतिन नीर ॥ ७८ ॥

॥ श्लोक ॥

संवत्सरेणमे कत्वं कैवर्तकस्यहिंसकः। एकादशदवाहेत अपूत जलसंग्रही ॥७९॥
सूतास्यतंतुगलितेयेविंदौसंतिजंतवः। सूक्ष्माभ्रमरमानापिनैवमांनिंत्रविष्टपे ॥ ८० ॥

अडिल्लछंद ।

मकड़ी का मुख थकी ततनिकसै जिसो । तिंह समान जल बिंदतणो मुनि एकसो ॥
तामें जीव असंख उडै व्है भ्रमरही । जम्बूदीप न माय जिनेश्वर इम कही ॥ ८१ ॥

तथाचोक्तं ।

षट्त्रिंशदंगुलंवस्त्रं चतुर्विंशतिविस्तृत । तद्वस्त्रंद्विगुणीकृत्य तोयंतनतुगालयेत् ॥ ८२ ॥
तस्मिन्मध्यस्थितान्जीवांजलमध्येतुस्थाप्यते । एवंकृत्वापिबेत्तोयंसयातिपरमांगतिं ॥ ८३ ॥

अडिल्ल ॥

वस्तर लंबो अंगुलछतीस सलीजिये । चौड़ाई चोईस प्रमांण गहीजिये ॥ गढो विना अतिगाढो दौवड कीजिये । इसे नातणे छांणि सदा जल पीजिये ॥ ८४ ॥ तामें है जे जीव जतनकरि केसही । छांणां जलतें अधर नीरमें खेपही ॥ करुणाधर चितनीर एम पीवें जिके । सुरपद संशय नांहि लहै शिवगति तिके ॥ ८५ ॥

चौपाई ।

ऐसी विधिजल छाणयातणी । मरयादा घटिका दुइभणी ॥ प्रासुक कीयो पहर दुय जाणि । अधिक उसनवसु जामवखाणि ८६
मिरच इलायची लौंग कपूर । दरव्य कषाय कसेलो चूर ॥ इनते प्रासुक जल करवाय । ताको भाजन जुदो रहाय ८७
इतनो प्रासुक कीजे नीत । जाम दोय मध्य होइ व्यतीत ॥ मरयादा ऊपर जो रहाय । तामें सन्मूर्छन उमशाय ॥८८॥
अरु वे फिरि छान्यो नहिं परै । वांके जीव कहांनों धरै ॥ प्रासुक जलके भाजन मांहिं । जो कहुं नीर अंगालित आहि ८९
ताके जीव मरै सब सही । उनको पाप कोई न इच्छही ॥ ताते बहुत जतन मन आनि । प्रासुक करि वरतो सुखदानि ९०
छाण्यो जल घटिका दुय मांहिं । सन्मूर्छन उपजै सकनाहिं ॥ आज उसनकी विधि सब ठौर । व्यापिरही अति अघकी दौर ९१
व्यालू निमति असनकरि धरै । तापीछे खीरा ऊवरे ॥ तिनमें जल ताती करवाय । निसि संधारलेसें सो निरवाहि ९२

मरयादा माफिक नहीं सोय। ताको वरतो मत भवि लोय ॥ कीजे उसन इसो विधि नीर। जो जिन आज्ञा पालनवीर ९३
भात वोरिये जिह जल माहिं। वैसो जल जो उसन कराहिं ॥ आठ पहर मरयादा तासे। संन्मूर्छन पीछे है जास ९४॥
जो श्रावक व्रतको प्रतिपाल। तिहको निसिजलकी इह चाल ॥ छाण्यो प्रासुकता तौ नीर ॥ मरयादा में वरतो नीर ९५

छन्दचाल ॥

बीछे कपड़े जो नीर। छानें श्रावक नहीं कीर ॥ मरयाद जिती कपड़ाकी। तासों विधि जल छणवाकी ॥९६॥
यातें सुनिये भवि प्राणी। जलकी विधि मनमें आनीं ॥ बहुधर विवेक जल गालें। मन वच तन करुणा पालें ॥९७॥
पंचन में सो अति लाजै। अर जिन आज्ञा सो त्याजै ॥ सो पाप उपावे भारी। जाणौ तसु हीणाचारी। ९८॥
याते ल्यो वसन सुफेद। छानौ जल किरियावेद ॥ औरन उपदेश जुदीजे। विनु छाणे कवहूं न पीजे ॥९९॥
श्रावक बनिता घरमाहीं। किरियाजुत सदा रहाहीं ॥ वह जतन थकी जल छानें। ताको जस सकल वखानें ॥१००॥
लघु त्रिया प्रमाद प्रवीण। जलकी किरियामें हीन ॥ तापै न छणावे पाणी। बनितास्यो जाण्यो स्याणी ॥१॥
तजि आलस अरु परमाद। गालै जलधरि अहलाद ॥ औरनि सों नहिं बतलावें। जलछाणनहिं पडिवापव ॥२॥
नल बुन्दज तनुमें परिहै। अपनी निन्दा वहु करिहैं ॥ ले दंड सकति परमाण। पाले हिरदे जिन आण ॥३॥

दोहा।

जिह निवाणको नीर भरि, घर में आवे ताहि। छांनि जी वाणी भेजियो, वाहिं निवाण जमांहि ॥४॥
इह जल गालण विधि कही, जिन आगम अनुसार। कहिहों कथा अणथमी, सुनियो भवि चितधार ॥५॥

इति जलगालण विधिः॥

अथ अणथमी कथन ॥

दोहा।

घड़ी दोय दिन चढ़े जब, पछिलो घटिका दोय। इतने मध्य भोजन करै, निश्चै श्रावक सोय ॥ ६ ॥

सोरठा ।

सुनिये श्रेणिक भूप, निसि भोजन त्यागी पुरुष । सुर सुख भुगति अनूप, अनुक्रमि शिव पावे सही ॥७॥
दिवस अस्त जब होय, तापीछें भोजन करै । वे नर ऐसे होय, कहूं सुनो श्रेणिक नृपति ॥ ८ ॥

नाराचछन्द ।

उलूक काक औ बिलाव गृद्ध पक्षि जानिये । बघेरु डोडु सर्प सूर सांवरो बखानिये ।
हवंति गोहिरो अतीव पाप रूप आइहै । निसी आहार दोषते कुजोनिको लहाइये ॥ ९ ॥

दोहा ।

निसिवासर को भेद बिन, खात नृपतिनहीं होइ । सींग पूछ ते रहतही, पसू जानिये सोइ ॥ १० ॥
दिन तजि निसि भोजन करै, महा पाप मति मूढ़ । बहु मोल्यो माणिक तजै, काच गहै घरेरूढ ॥११॥

छन्दचाल ।

निसि माहे असन कराहीं । सो इतने दोष लहाहीं ॥ भोजन में कीड़ी खाय । तसु बुद्धि नाश होजाय ॥१२॥
जू उदर माहिं जो जाय । तह रोग जलोदर थाय ॥ माखी भोजनमें खैहै । ततछिण सो वमन करैहै ॥ १३ ॥
मकड़ी आवे भोजन में । तो कुष्टरोग है तनमें ॥ कंटकरुकाठको खंड । फसिहै सो गलै प्रचण्ड ॥ १४ ॥
तसुकंठ विथा विस्तारै । हैहै नहिं ढील लगारैं ॥ भोजन में खैहै वाल । सुरभंग होय ततकाल ॥ १५ ॥
अरु असन करत निसिमांही । वज्जादिक मैं उपजांही ॥ इनि आदि असन निसि दोष । सबहीकों है अघकोंप ॥१६ ॥

सोरठा ॥

निसि भोजन में जीव, अति विरूप मूरति सही । तिन तें विकल अतीव, अलप आयु अर रोग युत ॥ १७ ॥

दोहा ।

भाग्यहीन आदर रहित, नीच कुलहि उपजाय ॥ दुख अनेक लहै है सही, जो निसि भोजन खांहि ॥ १८ ॥

एक हस्तनागपुर ठांम, तस जसोभद्र नृप नाम । रानी जस भद्रा जानों, श्रेष्ठी श्रीचंद बखानों ॥ १९ ॥
तिय लिखमी मती तसु एह । नृपप्रोहित नाम सुनेह । द्विज रुद्रदत्त तसु तीया, रुद्रदत्ता नाम जु दीया ॥ २० ॥
हरदत्त पुत्र द्विज नाम । तिन चरित सुनो दुख धाम ॥ बीतोभादों को मास । आसोज प्रथम तिथ जास ॥ २१ ॥
निज पित्र श्राद्धदिन पाय । द्विज पुरका सकल बुलाय ॥ ब्राह्मण जीमण कों आए । बहुअसन थकी जुअथाए ॥ २२ ॥
द्विज पिता नृपति के तांई । पोषे बहु बिनोधराई ॥ पीछैं नृप मंदिर आयो । राजा बहु काम करायो ॥ २३ ॥
तसु राज काज के मांही । भोजन की सुधि न रहांही ॥ बहुपुध्याथकी दुख पायो । निसि अर्ध गया घरि आयो ॥२४॥
निसि पहर गई जब एक । तसु वनिता धरि अविवेक ॥ रोटी जीमन कूं कीनी । बेंगण करनें मन दीनी ॥ २५ ॥
हांडी चूल्है जु चढ़ाई । पाडोसी हींग को जाई ॥ इतने में हांडी माहीं । मींडक पडियो उछलाहीं ॥ २६ ॥
तिय बेंगन छोंके आय । मींडक मूवो दुख पाय ॥ तब हांडी लई उतारी । रोटी ढकणी परि धारी ॥ २७ ॥
कीडी रोटी में आई । घृतसन मधितें अधिकाई ॥ निसि बीति गई दोजाम । जीमण बैठो द्विजताम ॥ २८ ॥

दोहा ।

निसि अंधियारी दीप विनु, पीडित भूख अपार ॥ जो निसि भोजी पुरुष हैं, तिन के नहीं विचार ॥ २९ ॥
रोटी मुख में देतही, चींटी लगै अनेक ॥ विप्र होंठ चटको लियो, बड़ो दोष अविवेक ॥ ३० ॥
बैगण कों लखि मींडको, विस्मय आएयो जोर ॥ तातैं अघउपज्यौ अधिक, महा मिथ्यात अघोर ॥ ३१ ॥

अडिल्ल ।

कालांतर तजि प्राण भयो घू घू जबै । तहांमरण लहि सोई नरक गयौ तबै ॥
पंच प्रकार अपार लहै दुख ते सही । निकलि काक परजाय ठई दुखकी मही ॥ ३२ ॥
तिह वायस चउ पद अनेक जु संताइया । विष्टादिक जे जीव चित तै पाइया ॥
प्रचुर आयु तें पाप उपाय मूवो जदा । नरकि जाय बहु आय समुद भुगतै तदा ॥ ३३ ॥

तिहते निकलि बिलाव भयो पापी घनो । मंसा मींडक आदि भखे कहलौं गनो ॥
नरक जाय दुख भुंजि गृध्रपक्षी भयो । प्राणी भखे अनेक नरक फिर सो गयो ॥ ३४ ॥
निकसि नरक तें पाप उदै सेवर भयो । तिह भखी जीव अपार नरक पंचमगयौ ॥
निकल सूर है जाव भखै तिनकों गिनै । अघ उपाय मरि नरक जाय सहि दुख घनै ॥ ३५ ॥
अजगर लहि परजाय मनुष तिरयग ग्रसे । नरक जाय दुख लहै कहे वांणी इसे ॥
निकलि बघेरो थाय जीव बहु खाइया । पाप उपाय लहाय नरक दुख पाइया ॥ ३६ ॥
गोंधा तिरयग जाति निकसितह तैं भयो । बहुत जंत कौं भखि नरक फुनि सो गयो ॥
मच्छ तणी पर जाय लई दुख की मही । लघु मच्छादिक पाप उपाए अघ सही ॥ ३७ ॥
सो पापी मरि नरक गयो अति घोर में । स्वासति निमिष न लहै कहूं निसि भोर में ॥
तहं भुगते दुख जीवयादि जो आवही । निसि न नींद दिन नीर असन नहिं भावही ॥ ३८ ॥

चौपाई

निसिभोजनलंपट द्विज भयो । महापापको भाजन थयो ॥ दसभव तिरयग गति दुखलह्यो । तिमदसभवदुखनरक निसरयो ३९॥
नरक थकी नीकलि के सोई । देस नाम कर हाट सुजोई ॥ कौसल्या नगरी नरपाल । है संग्राम सूर गुणमाल ॥ ४० ॥
तसु पटतोया वल्लभा नाम । राजा सेठ श्रीधर है ताम ॥ श्रीदत्ता भार्या तिह तणी । राज पुरोहित लोमस भणी ॥ ४१ ॥
प्रोहित वनिता लोभा नाम । महीदत्त सुत उपज्यो ताम ॥ सात विसन लंपट अधि कांनी । रुद्रदत्तद्विज को वरजांनी ॥४२॥
महीदत्त कुविसन तैं जास । पिता लक्ष्मि सब कियो विनास ॥ जूवा वेश्यारमि अधिकाय । राजदण्ड दे निरधनथाय ॥ ४३ ॥
घरमें इतो रह्यो नहीं कोय । भोजन मिलिनेहूं नहीं जोय ॥ तब द्विज काढि दियोघरथकी । गयो सोपि मांमा घरतकी ॥ ४४
मामें तसु आदर नहिं दीयो । बहु अपमान तासको कीयो ॥ भाग्यहीन नर जहं जहं जाय । तहं २ मानहीनता थाय ४५

सवैया २३ सा ।

जानरकै सिर टाट सदा रवितापथकी दुख जोरि लहैहै । पाद पचीलतवी तकि छांह गए सिर चीलकी चोट सहैहै ॥ ता फलतें तसु फाटिहै सीस वेदनि पाप उदै जु गहैहै । भाग्य विना नरजाय जहां तहं आपद थानक भरिही रहैहै ४६ मातुल तास महीदत सीस नवाय दियो अबही ! पूरव पाप किए मैं कौन सुभाषिये नाथ वहै सबही ॥४७॥

दोहा ।

कौन पाप तें दुख लह्यो, सो कहिये मुनि नाह । सुख पाऊं कैसे अबै, उहै बतावो राह ॥४८॥

मुनि उत्तर ॥ सवैया २३ सा ॥

सो मुनिराज कह्यो भो वत्स सुपूरव पाप कहों तजयाहीं ! प्रोहित नाम यो रुद्रदत्त महीपतिके हथनापुर माहीं ॥ सो निसि भोजन लंपट जोर पिपील ककीट भखै अधिकाहीं । सो जन रात समय इक मींडक बेंगण साथ दियो मुखमाहीं ४९

अडिल्ल ।

तास पापके उदय मरिवि घघू भयो । नरक जाय फुनि काग होय नरकहि गयो । है बिलाव लहि नरक जाय गंवर भयो ॥ नरक जाय है गृद्ध पत्त नरकहि लह्यो ॥५०। निकल सूकरो होय नरक पद पाइयो । है अजगर लहि नरक बघरो थाइयो ॥ सुभ्रजाय फिर गोधा तिरियग गतिपई । नरक जाय हो मच्छ नरक प्रथवी लई ॥ ५१ ॥ नरक महीते निकल महादत्त थाइयो । उलूकादि दस तिरयग भव दुख पाइयो ॥ नरकवार दसजाय महा दुखते सह्यो । निसि भोजनके भखें सुभ्र दुख अति लह्यो ॥ ५२ ॥

दोहा ।

महीदत्त फिर पूछवे, निसि भोजनतें देव । नर भवमें दुख किम लहे, सो कहिये मुझ भेव ॥ ५३ ॥
मुनि भापें द्विज पुत्र सुण, निसि में भोजन खात । जीव उदरि जैहे तवै, बहु विधि है उतपात ॥५४॥

सवैया इकतीसा ।

मारवीते वमन होय चीटी बुद्धि नास करै, जूकाते जलोदर होय कोटी लूत करि है । काटफांस कंटकतैं गले मेंव थावै व्यथा वाल सुर भंगकरे कंठहीन परि है ॥ भ्रमरीते सूना होई कसारीतें कम्पवाय विन्तर अनेकभांति छल उर धरि है । इन आदिक कथन कहांलौं कीजे वछ सुन नरक त्रयंच थाय कहे जो उपरि है ॥५५॥

दोहा ।

जो कदाचि मर मनुप है, विकल अंग विनु रूप । अलप आयु दुर्भग अकुल, विविध रोग दुख कूप ॥५६॥
इत्यादिक निस असनतें, लहिहै दोप अपार । सुन विमहीदच मुनिप्रतै, कहे देहु व्रतसार ॥ ५७ ॥
मनि भापैं मिथ्यात तज, भवि सम्यक्त रसाल । पूरव श्रावक व्रतकहे, द्वादश धरि गुण माल ॥ ५८ ॥
दरशन व्रत विधि भाषिये, करुणा कर मुनिराज । तुभ अनन्त भव उदधित, तारणहार जहाज ॥ ५९ ॥

सोरठा ।

दोप पचीस न जास, संवेगादिक गुण सहित । सप्त तत्व अभ्यास, कहे मुनीश्वर विप्र सुन ॥ ६० ॥

दोहा ।

इस दरशण सरधान करि, निरवे अरु व्योहार । पूरव कथन विशेपतैं, कह्यौ ग्रन्थ अनुसार ॥ ६१ ॥
सात व्यसन निसि असन तज, पालो वसु गुण मूल । चरम वस्तु जल विनु छण्यो, त्यागै व्रत अनुकूल ॥६२॥

चौपाई ।

इत्यादिक मुनिवचन सुनेइ । उपदेश्यो व्रत विधिवतलेइ ॥ हरपित आयो निजघरमाहिं । तासु कुयालखि सब विसमाहिं अहो सात विमनी इह जोर । अरु मिथ्यातों महा अघोर ॥ ताको चलन देखिये इसो । श्रीजिन आगम भाष्यो तिसो ६४ मात पिता तसु नेह करेइ । भूपति ताको आदर देय ॥ नगर माहिं मानें सब लोग । त्रिविध तणे वहु भुंजे भोग ॥ ६५॥

पुण्य थकी सबही सुख लहै। पाप उदै नाना दुखसहै।। ऐसो जान पुण्य भवि करो। अघतै डरपि सबै परिहरो ॥६६॥
महोदत्त बहु धन पाइयो । ततछिण पुन्य उदै आइयो ॥ पूजा करे जपै अरिहंत । मुनि श्रावकको दान करन्त ॥६७॥
जिन मन्दिर जिन बिम्ब कराय । करी प्रतिष्ठा पुण्य उपाय ॥ सिद्धक्षेत्र वन्दे बहुभाय ॥ जिन आगम सिद्धांत लिखाय ६८
आप पढ़ै ओरनिको देय। सप्तक्षेत्र धन खरच करेय।। निसदिन चालै व्रत अनुसार। पुण्य उपायो अति सुखकार ॥६९॥
कितेक काल गयो इह भांति । अंति समय धारी उपसांति।। दरशन ज्ञान चरण तप चार। आराधन मनमाहिं विचार।।७०।।
भाई निश्चै अरु व्योहार । धर सन्यास अन्तकी वार ।। शुभभावते छांड़ै प्रान । पायो षोडशस्वर्ग विमान ॥ ७१ ॥
रिद्धि आठ अणिमादिक लही। आयु बीस दुय सागर भई ॥ पांचों इन्द्री के सुख जिते। उदै प्रमाण भोगिए तिते॥७२॥
समकित धरम ध्यान जुत होइ। पूरण आयु करइ सुर लोय ॥ देस अवंती मालव जाण । उज्जैनी नगरी सुवखाण ॥७३॥
पृथ्वी तल तसु राज करेय । प्रेम कारिणी तिय गुण गेह ॥ समकित दृष्टी दंपति सही। जिनआग्याहिरदयतिनगही ॥७४॥
स्वर्ग सोलमेतें सुर चयो । प्रेमकारणी के सुत भयो ॥ नामसुधारस ताकोदियो। मातपिता अतिआनंद कियो ॥ ७५ ॥
दियो दान जाचक जन जितो। मोपै कथन होय नहिं तितो।। विधिसों पूजे जिनवरदेव । श्रुतगुरुवंदन करि बहुसेव ॥७६॥
अधिक महोछौ कीनो सार। जैसो श्रावक को आचार ॥ वस्त्रादिक आभरण अपार । सवपरियनसंतोषेसार ॥ ७७ ॥
अनुक्रम वरस सात को भयो। पण्डित पास पठन कों दयो।। शास्त्रकलामैं भयो प्रवीन। श्रावक व्रतजुतसमकित लीन ॥७८॥
जोवनवंत भयो सुकुमार । व्याहन कीनो धरम विचार।। एक दिवस वन क्रीडा गयो । वडतरुछाजरी तैं पैभयो ॥७९॥
देख कुमर उपजो वैराग । अनुप्रेक्षा भाई बड़भाग ।। चंद्रकीर्तिमुनि के ढिग जाय । दिक्षालीनी शिव सुखदाय ॥८०॥
बाहिर आभ्यंतर चोवीस । तजग्रंथ मुनि नामे सीस ॥ पंच महा व्रत गुपति जु तीन । पंच समितिधारीपरवीन ॥८१॥
इमतेराविधि चारित सजं । निश्चय रत्न त्रय सुभजे ॥ सुकल ध्यान वलिमोह निवास । केवल ज्ञान उपज्यो तास ॥८२॥
भनिउपदेशे बहुविधि जहां । आयुकरम पूरण भयो तहां ॥ सेप अघातिय को कर नास । पायो मोक्षपुरी सुखवास ॥८३॥

सवैया । ३१

मोह कर्म नास भये प्रसमत्त गुणथये ज्ञानावर्णनास भये ज्ञानगुण लयो है । दंसण आवरण नास भयो दंसण सुअंतराय नासतें अनतवीर्यथयो है ॥ नामकर्मनास भये प्रगटयो सुहुमत्तगुण आयुनास भये अवगाहण जुपायो है ॥ गोत्रकर्मनास कीये भयो है अगुरु लघु बेदनी के नासे अव्यबाध परिणयोहै ॥ ८४ ॥

दोहा ।

विवहारे वसुगुण कहे, निश्चै सुगुण अनंत । काल अनंतानंतविते, निवसे सिद्धमहंत ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

इह विधि भविदर्शन जुत सार । पाले श्रावक व्रत आचार ॥ अर मुनिवर के व्रत जो धरै । सुरनर सुख लहि सिवतियवरै ॥ ८६ ॥
निसि भोजन तें जे दुख लये । अरुत्यागे सुखते अनुभये ॥ तिनके फल कोवरनन धरी । कथाअणथमी पूरणकरी ॥ ८७ ॥

छप्पय ॥

दिवसउदय दुय घड़ी चढत पीछैं ते ले करे । अस्तहोत दुयघडीरहै पिछलो एते पर ॥
भोजन जे भवि कर तजे निसिच्यारिआहारही । खादिम स्वादिम लेप पान मन वचकर वारही ॥
सो निसि भोजन तजन वरत नितिप्रतिजो जिनराजवखानियो । इहविधिनितप्रती चित्तधरश्रावक मनजिहिमानियो ॥ ८८ ॥
चित्रकूट गिरि निकट ग्राम मातंग वसे तहे । नाम जागरी जान कुरंग चंडार तियातहै ॥
तिहिनिसि भोजन तजन वरत सेठ णिपैलियो । मन वचक्रम व्रतपालिमरन शुभ भावनि कियो ॥
वहसेठ तिया उरि ऊपनि सुता नागश्रिय जांनिये । जिन कथित धर्म विधि जुत गहि विभरगतणा सुख तिन लिये ॥ ८९ ॥
तिरयग एक सियाल सुणिवि मुनि कथित धरमपर । रखनिसि भोजन तजन वरत दियो लखि भविवर ॥
त्रिविधि शुद्ध व्रतपालिसेठ सुतहै प्रीतंकर । त्रिविध भोग भोगए नृपति पुत्रीपरणवि वर ॥

मुनिराज पास दीक्षालई । उग्रघोर तप ध्यान सजि ॥ वसु कर्म खेपि पहुंचे मुकति सुखअनंत लहि जगत महि ॥९०॥
याही व्रत को धार पूर्वही बहुत पुरुष तिय । तद्भवसुर पद लहे त्रिविध पालिउ हरषित हिय ॥
अनुक्रमी मोक्षहिगए धरिसुदीक्षा जिनि भारी । सुख अनन्त नहि वोर सिद्ध पद के जे धारी ॥
नरनारी अजहुं व्रत पालिहै । मनवचकाय त्रिशुद्धिकर ॥ लहि धर्म देवगतिका अधिक क्रम तें पहुंचे मुक्तिधर ॥९१॥

इति अणथमीकथन ।

अथदर्शन, ज्ञान, चारित्र कथन लिख्यते ॥

दोहा ॥

त्रेपन किरया के विषै, दंसणणाणप्रमाण । अवरत्रितयचारित तणो, कछुएक कहो बखाण ॥ ९२ ॥
निज आतम अवलोकिये, इह दर्शन पर धान । तस गुण जान पणो विविध, वहैज्ञान परवान ॥ ९३ ॥
तामैंथिरता रूपह्वै । रहै सुचारित होई ॥ रत्नत्रयनिश्चै इहै, मुकति बीज है सोई ॥ ९४ ॥
अवविवहार वखाणिये, सप्ततत्वपरधान । निःशंकादिक आठ गुण, जुत दर्शन सुख थान ॥ ९५ ॥
ज्ञान अष्टविधिभाखियो, व्यंजन ऊर्जित आदि, जिन आगम को पाठ बहु, करैत्रिविधि अहलादि ॥ ९६ ॥
पचमहाव्रत गुप्तित्रय, सुमति पञ्चमलिसोय । विधि तेरा चारित्र है, जाणों भविजन लोय ॥ ९७ ॥
इनको वर्णन पूरवही, निश्चै अरु विवहार । मति प्रमाण संक्षेपतें, कियोग्रन्थ अनुसार ॥ ९८ ॥

चौपाई ।

त्रेपन किरयाकी विधि सार । पालो भविमन बच तन धार ॥ सो सुरनर सुख लहि शिव लहैं । इमगणधर गौतमजीकहैं ॥९९॥

इति त्रेपन क्रियाकथन सं पूर्णम् ॥ अथ और वस्तुहैं तिनकी उत्पत्ति वगैरे कथन चले है ॥

अथ गूंदकी उत्पत्ति ॥

दोहा।

गूंदहलद अरु आंवला, निपजन विधि जे थाहि ॥ क्रियावान पुरुषनि प्रतैं, कहूं सकल समजाहि ॥ ९०० ॥

चौपाई।

गून्द खैर के लागो होय। भील उतार लेतु हैं सोय ॥ अरु अंगुली के राल लगाय। इह विधि गूंद उतारत जाय ॥१॥
कोडी माछर आहि अतीव। लागा रहै गून्द के जव ॥ भील विवेकहीण अति दुष्ट। करुणा रहित उतारैं भ्रष्ट ॥२॥
दूना मेंधरते सो जाय। जीव कलेवर तामें आय ॥ इहविधि जाण लेहु जन दक्ष। नरनारी सब खात प्रतक्ष। ३।
भील जूठ इहजाणों सही। क्रियावांन नरखावैं नहीं ॥ जो खैहै सो क्रिया नसाय। अवरवरत को दोष लगाय ॥४॥

अथ अफीमकीउत्पति ॥

चौपाई।

अरुउतपत अफीम जु तणी। झूठी दोष गूंदहि जिमभणी ॥ इह अफीम में दोष अपार। खाए प्राण तजै निरधार। ५।

अथ हलदकी उत्पति।

हलदभील निज भाजन मांहि। अपने जलतैं ते औटांहि ॥ तापीछें सोदेंयसुकाय। हलदविकै तेसवहीखाय ॥ ६ ॥
कंदमूल तैं उपज्यो सोय। भाजन भील नीर मैंजोय ॥ यामैं है इतनो लखि दोष। धरम भ्रष्ट शुभ क्रिया नपोष। ७॥

आंवलाकी उत्पत्ति ॥

वरडि मांझ आंवला अपार। हीण कृया ताम अधिकार ॥ हरयो आंवला भील लहाय। अपने भाजन माहिं डराय ॥८॥
निज पाणीमें लै औटाय। जमीं माहिं फिर डारैं जाय ॥ पहरि पाहनो तिनपर फिरैं। फूटत तिन गूटरी नीकरैं ॥९॥
अरु भीलनके बालक ताम। तिनकी गुठली बीनत जाम ॥ लूण साथिले खाते जाहिं। झूठ होत तामें सक नाहिं ॥१०॥
जल भाजनको दोष लहन्त। पाटा पाहनी से खदंत ॥ ऐसी उत्पति बुध जन जान। धर्म फलै सोई मन आन ॥११॥

अथ पानकी उत्पत्ति ॥

काथ खातहैं पानहिं मांहिं। तिसके दोष कहेना जाहिं ॥ प्रथम पान साधारण जान। राखे मास वरषलों आन ॥१२॥
सरद रहै तिनमें अति सदा। त्रस उपजै जिनवर यों वदा ॥ हिन्दूतुरक तंबोली जान। नीर निरन्तर निज छटकान॥१३॥
जल भाजन अशुद्ध अति जान। सारा नर मूततहि थान। पूंगी लौंग गरुगिरि विदाम॥ डोडादिक फुनिलावैं ताम ॥१४॥
चूनो काथ इत्यादि मिलाहिं। सबै मसालो पानन माहिं ॥ धरके बीड़ा बांधै सोइ। सब जन खात खुसी मन होइ ॥१५॥
धरम पाप नहिं भद लहन्त। ते ऐस बीड़ा जुगहन्त ॥ अरु उत्पत्ति काथकी सुनो। अघदायक शुभ है तिम गुणो ॥१६॥

अथ काथकी उत्पत्ति ॥

विंध्याचल तहभील रहन्त। खैररूखकी छाल गहन्त ॥ अघटावें निज पाणी डार। अरुण होय तब लेय उतार ॥१६॥
तामें चून जु मंडवा तणो। तंदुल ज्वार सिंघाडा तणो। नाखखैर जलमाहीं जोय॥ रांधराबड़ी गाढ़ी सोय ॥१७॥
ताहि सुकावे कुण्डा मांहिं। उत्पति काथ कहिसक नाहिं। कहुं कहां लों वारम्वार। होयपाप लखकरि निरधार॥१८॥
सुखदायक सिख गहिये वीर। दुखद पाप की छांड्यो धीर॥ छांड़ मन वच सुख सो लहै। विनुछांडे दुरगतिको गहै १९
तातें सब बरनन इह कियो। सुनहु भविक जनद निज हियो॥ जिभ्या लंपटता दुखकार। संवरतें सुखद है सार ॥१३॥

दोहा।

व्रतधारी जे पुरुष हैं, अन्नर क्रया धर जेह। तजहु वस्त जो हीण हैं ॥ त्यों सुखलहो अछेह ॥ २० ॥

अथ वरणोडीखीचलाकूरेडी फली हरी उत्पत्तिवर्णन चौपाई ॥

क्रियावान श्रावक हैं जेह। वस्तु इती नहिं लेहै तेह ॥ रांधे चून बाजरा तणा। और जवारि चावलको भणो २१॥
वरनोडीखीचला करै। कूरेडी फूलै हरिधरै॥ माटे शूद्र सुकावे खाट। सील अटवायो सुनि राट ॥ २२ ॥
इह विधि वस्तु नीपजे सोई। ताहि तजो व्रत धरि अन्न लोई॥ अरु लेजाइ रसोई माहिं। सेके तलै क्रिया तस जाहिं २३

अथभड़भुंज्या के चबीणों सिकावें ताका कथन ।

भड़भुंजो सेकैं जो धान । तास क्रिया सुनिये मतिमान ॥ रांधा चावल दैय सुकाय । तस चिड़वा मुरमुरा बनाय ॥२४॥
गेहूं बाजराकी घूघरी । रांधनुरमुरा से कैधरी ॥ मका जवार उकालैं जाण । फूलाकर बेचे मन आण ॥२५॥
कर मूगड़ासेके चणा । मूंग मोठ चौलादिक घणा ॥ इत्यादिक नाजहि सिकवाय । बिकै चवीणी सब जन खाय ॥२६॥
शूद्र तुरक भुज भुंज्या न्हालि । तिनके भाजनमें जल घालि ॥ करैचबीना ताजा जानि । सबै खाय मनभ्रांति न आन ॥२७॥
जो मन होय चबीणो परै । तोखइये इतनी विधिकरी ॥ निज घरते लीजे जल नाज । तिनहि सिकावे व्रतधरि साज २८
पीतल लोह चालणी मांहिं । छांणि लेय बालू कढ़वाय ॥इह करिया नीकी लखि रीति । खाहु चबीणी मन धरप्रीति २९

चौलांकीफली कैर करेली सांगरी वगैरह तिनको कथन ॥

चौलहरी चौलाकी फली । आवै गांव गांव ते चली ॥ तिनको शूद्र सिजाय सुकाय । बेचे सो सगरे जन खाय ॥३०
जल भाजन शूद्रनको दोष । वासी बटवोयो अघ कोष । बहुदिन राखे जिय उपजाय । तिनहि विवेकी कबहुं न खाय ३१
कैर करेली अरु सांगरी । शूद्र उकाले ते निज घरी ॥ पड़ कुंथवा वरषा काल । यह खैंचो मतिहीनी चाल ॥ ३२ ॥
अबहलि कैरीकी जो करे । जतनथकी राखे निज घरे ॥ जल वरष अरु नाहीं मेह । तबलों जोग खाय वो गेह ॥३३॥
वरपाकाल मांहि निरधार । उपजे लटकुंथवा अपार ॥ इन परिचोमासो जय जात । तार्हिविवेकी कबहु न खात ॥३२॥
नईतिली तिल उपजे जबै । फागुण लौं खइयें जब सबै ॥ सो मरजादा तेल प्रमाण । होली पीछे तजहु सुजाण ३३॥
होली पछिलो है जो तेल । तिसमें जीव कलेवर मेल ॥ यातैं होली पहिलो गही । ले राखे श्रावक घर मही ॥ ३४ ॥
सोवरते कातिक लौं तेल । तिन भवि सुनको लखिवो मेल ॥ चरमतणी जो दे ताकडी । बुध जन घर राखे नहिघडी ३५
तामें तौलें चूनरु नाज । चमरवस्तुको दोरव समाज ॥ कागद काठ वांस अरधात । राखे क्रियावंत विख्यात ॥ ३६ ॥
सिंघाड़ा अति कोमल आंहि । होली गए जीव उपजांहि ॥ ताकी होइ मिठाई जिती । सबोजोगन भाखी तिती ३७

केऊ करवि घघरी खाय । केऊकसीरो पुडीवणाय ॥ होली पहिली तो सब भली । खैबो जोग्य कही मनरली ॥३८॥
पीछे उपजै जीव अपार । क्रिया दया पालक नर सार ॥ तबइनकौं तोभीटै नांहि । कही धर्मसाधै तिनखांहि ॥३९॥
दूधगिंदोडी के गजरी । दोहे पीछे जाय वडुघरी ॥ निजत्रासण में धर ले जाय । करै गिंदोडीमावो ताहि ॥ ४० ॥
दोप अधिक कान्वा पयतणा । ताको कथन कहां लौंभणो ॥ अविवकी समझै नहिं ताहिं । समजाए हमतिनहीआहि४१।
इतनी तो निजरत्यांलखि लेहु । मावोकरता प्रथमें तेहु ॥ पडैजीव उसमें लघु जाति । अरुफिर रात तणीकावात ॥४२।
ताहूमें फुनि वरषा काल । पडै जीव तिहि निसि दरहाल ॥ मांछर डांस पतंगाआदि । मावो इसोखात शुभवादि ४३।
सदापाप दायक है सही । पापथकी दुरगति दुखलही । लंपट भख छूटे नहिं जदा । निसि को कियो न खइयेकदा ।४४
जोखेरा विन रह्यो न जाय । तोपय जतनथकी परलजाय ॥ मरयादा बोतै नहिंजास । क्रियासहित मावोकरि तास ।४५।
जिह्वालंपटता वसिथाय । तो ऐसी विधि करि कै खाय ॥ कोऊ कलप करेंगो एम । उपदेस्यो आरंभ कहुकेम ॥४६ ॥
वामें काचा पयको दोप । अरुत्रस जीव कलेवर कोप ॥ यातें जतन थकीजो करे । जतन साधि आप्यौहै सिरे ॥४७॥
जतन थकी किरियाहू पलै । जतन थकी अदयाहू टलै ॥ जतन थकी सधिहै विधिधर्म । जतनमुख्य लखिथावककर्म ।४८।

इति चोल की फली आदि सबका कथन संपूर्णम् ॥

शोधिकाभित की मरयादा । दोहा ।

मरयादा सब शोधकी, कही मूल गुणमांहि । जिहिं मत में भोजन करे, धरत शोध को ख हिं ॥ ४९ ॥

छंदचाल ॥

धर्म तो निपजैनाही । विकलतालपि मोल गहांही ॥ तिहशोध वखाणे कूर । शुभक्रिया न तिनके मूर ॥ ५० ॥
वाण्यालघुग्रामावास । जल आदि क्रियानहिं तास ॥ तिनके घरको जो घीव । धर भाजन मलिन अतीव ॥ ५१ ॥
लेआवे शहर मझार । बेचेउ लाभ विचार ॥ ड्योढा दुगुण ले दाम । लखि लाभ खुसी है ताम ॥ ५२ ॥

तीलग परिहै तह माखी । करतै काढि दे नाखीं ॥ जीवत कई नहि जांनै । तिहि जतन न कबहूं ठानै ॥ ५३ ॥
परगांवतणो इह रीति । सुन शहर तणी विपरीति॥ वेचै दधि छाछि विनाणी । तिनकैं घरको घृतआणी ॥ ५४ ॥
खावत है जे मति हीण । तसुसकल क्रियाव्रत चीण ॥ निसि सोतिय दूध मंगावै । तरतहि नहिं अगनिचढावै ॥ ५५ ॥
इहते अघ उपजै भारी । फुनितिहमहि व्रत बहु डारी ॥ देजावण दही जमावै । दधि मथ के घीव कढावै ॥ ५६ ॥
लएयों बहु बेला राखे । उपजै अघ नाणी भाखै ॥ बेचे ले बहुत पईसा । पुनि पाप जिहीं नहि दीसा ॥ ५७ ॥
सो घिरत शोधिको मांनैं । व्रत में जो खैबो ठानैं ॥ दूषण ऐसो लखि ताम । जैसो घृत धरियो चाम ॥ ५८ ॥
सुनिये अब अत्र कर बात । जानत जन सकल विख्यात ॥ निरमाय लखे है माली ॥ भोजग सुनि लेह विचारी ॥५९ ॥
तिन्नपास मंगावे घीव । अरु शोध गिने जे जीव ॥ तिनकी छूई जो वस्त । दोपीक गिणो सुसमस्त ॥ ६० ॥
आचार कहो शुध भाय । तिनकों जो वस्तु मिटाय ॥ आचरिये कबहू नाही । जिनवर भाष्यो श्रुत मांही ॥ ६१ ॥
लघु ग्रामकोस दस वास । निज समधि तहां निवास ॥ किंकर भेजे तापांई । व्रतजोग घिरत मंगवाई ॥ ६२ ॥
जाता आता बहु जीव । विनसै मारग में अतीव ॥ त्रसघात मगावत होई । सोशोधि कहो किम जोई ॥ ६३ ॥
कोई प्रश्नकरै इह जाग । श्रावक होते जे आग ॥ घृतखाते अककछ नांही । हम मन इह शंका आंही ॥ ६४ ॥
ताके समजावन लायक । भापे अति ही सुखदायक ॥ श्रावक बहुते व्रतधारी । तिन घृतविध सुनि यह सारी ॥ ६५॥

चौपाई ॥

जाकें घर महिषी या गाय । पके ठाम तिनही बंधवाय ॥ सरद रहै नहि ठाम मझार । वालू रेत तहां दे डार ॥६६॥
किंकर एक रहै तिन पर । सोतिनकी इम रक्षा करे ॥ देय बुहारी सांज सवार । उपजै नहीं जीव तिन ठार ॥६७॥
दोय तीन दिन बीते जबै । प्रासु कजलहि न्हवावे तबै ॥ परनाली राखै तिह ठांहि । बहै मूत्र तिनकेढिग नाहि ॥६८॥
वासनधर राखे तिहि तले । तामें परे मूत्रमा डले ॥ सूके ठाम नापिहै जाय । जहां सरद कबहू न रहाय ॥ ६९ ॥

गोबर तिनको है निति सोय। आप गेह थावे नहीं कोय ॥ औरन को मांग्यो नहीं देय। त्रससितावतामेंउपजेय ॥
वलूरेत नापी जामाहि। करडोकरि सो देय सुकाय ॥ चरबेको रोन न खिदाय। जलपीव निवाण नहीं जाय ॥ ७०॥
धरि बांधे राखे तिन सही। हरयो घासतिन नीरे नहीं ॥ सूको घास करवखाखलो पालो इत्यादिक जो भलो ॥ ७१॥
लेराखे इतनो घरमाहि। दोष रहित नहीं जीय उपजांहि ॥ नीरेझाड़ि उपरिजो वीर। अरुविधितें जो छांणयोनीर ॥ ७२॥
पीवे भाजन धात मजारि। सरद न राखै माजैमारि ॥ ईंधण कुंडि बालतो जाय। रांधिकाक डापलि जु मिलाय ॥ ७३॥
खीर चूरभूंविरिया जेह। देय खवाय जतन तें तेह ॥ स्यालैतापर जूठ डराय। जतन करे जिम जीव न थाय ॥ ७४॥

छंद चाल ॥

जवमझिपी गाय दुहावे। जलतेंकर थनहि धुवावे। कपडो चरई मुख राखे। दोहत पय तापर नाखे ॥ ७५ ॥
ततकाल सुअगनि चढ़ावे। लकडी वालिर अवटावे ॥ सखरो जीमण जहं होई। तहं दध करे नहीं सोई ॥ ७६ ॥
पय करणें की जो ठाम। सीलो करिहै पय ताम ॥ भाजन जु भरतका माहीं। जावनदे वेग जमाहीं ॥ ७७ ॥
जावणकी जधिविजारी। भाखो गुरु सूत्र मझारी ॥ बेलाजी जांवणदीजे। वहै टालि न ओर गहीजे ॥ ७८ ॥
इह प्रातजणी विधि जानू। अव सांजतणी सुवखानू ॥ सव किरिया जानो वाही। इह विधि सुन्दरही जमाहीं ७९ ॥
जांवणीय वरणकी जागे। तहं हाथ न सखरो लाग ॥ सोभी विधि कहहुं वखाणी। सुणज्यो सव भविजन प्राणी ॥
खिड़की इक जुदी रहाही। तिह धारि किवाड़ जड़ाहीं ॥ है प्रात जवै दांध आनी। मथिहै सो मेलि मथानी ॥ ८० ॥
जो सगरी किरिया भाखी। गोरस विधि आग आखी ॥ लूण्यो निकसे ततकाल। अवटावै सो दरहाल ॥ ८१ ॥
वासणमें त्यांनि भराहीं। कै खवन जिनो कवाहीं ॥ कहां वरत कहां सुदभाय। घृत शूद्री सोधिको खाय ॥ ८२ ॥
एसो घृत खेवे वालो। आगम सुनीति प्रतिपालो ॥ यह कथन कियो सव सांच। यामें न अलिकी वांच ॥ ८३ ॥
एसी विधि निपजे नाहीं। गोरसलेय न मगाहीं ॥ गोलिन नैणो नहि राई। घृतखाय सुदेग वनाई ॥ ८४ ॥

विधि वाही जिम ल्यावै । किरिया जुत ताहि जमावै ॥ दध छाडि घिरत पय लूनी । विधि कही करय नवि ऊनी ८५
निज घर जो घृत निपजाहीं । व्रत धरि श्रावक सो खाहीं ॥ कर छूवै न माली व्यास । हिंसाऽस व्है नहीं तास ॥८६॥
प्राणी न परै जिह माहीं । सोतो घृत सोधि कहाहीं ॥ घृतसो निज घर निपजइये । व्रतधर सो व्रतमैं पइये ॥ ८७ ॥
निज घर व्रत विधि न मिलाहीं । व्रतधरि तव लूखो खाहीं॥ अरु घिरत सोधिको खावे । व्रतमें वहु हरी मंगावे ॥ ८८ ॥
इह सोधि म कहिये भाई । जामैं करुणा न पलाहीं ॥ करुणाजुत कारिज नीको । सुखदाई भवि सवहीको ॥ ८९ ॥

दोहा ।

घिरत सोधि काकी सुविध, कही यथारथ सार । आछी जाणि गहीजिये, बुरी तजहु निरधार ॥

चौपाई ।

अव कछु क्रियाहीन अति जोर । मगट्यो महा मिथ्यात अघोर ॥ श्रावक सो कवहू नहीं करैं । आनमती दरपित विस्तरैं ॥९०॥
जैन धर्म कुल केरे जीव । करे क्रिया जो हीण सदीव ॥ तिनके संवोधनको जाण । कहै तासकी चाल वखाण ॥९१॥
तिहको तजै विवेकी जीव । करवेते भवभमें अतीव ॥ अव सुनियो बुधिवंत विचार । क्रियाहीन वरणन विस्तार॥९२॥

इति सोधिका घिरतकी मरयादा का कथन संपूर्णम् ।

अथ मिथ्यामत कथन ॥ दोहा ॥

मिथ्यामति विपरीत अति, ढूढा प्रकटा जेम । तिनि वरनन संक्षेपते, कहौं सुनो हो नेम ॥ ९३ ॥

चौपाई ।

स्वामी भद्रवाहु मुनिराय । पंचम श्रुत केवलि सुखदाय ॥ मुनिवर अवर सहस चौवीस । चउप्रकार संघहै गणईश ॥९४॥
उज्जैयनो में जिनदत सार । ताके भद्रवाहु मुनि तार ॥ चरज्याकों पहुंचे तहंगणी। जुलत बालक वच इम भणी ॥९५॥
गच्छ गच्छ विधि नहीं अहार । वारे वरपलगै निरधार॥ अंतराय मुनिवर मन आनि। पहुंच संघ जहां वनथान ॥९६॥

स्वामी निमत लख्या ततकाल। पाड़हैं बारा वरष दुकाल ॥ मुनिवरधर्म सधै न विसही। अवंइहां रहनो जुगतो नहीं ॥९७॥
कितेक मुनि दक्षणको गए। कितक उज्जैनी थिरहे॥ तहां काल पड़ियो अति घोर। मुनिवर क्रिया भ्रष्ट व्हैजोर ॥९८॥
मत श्वेतांबर थापियो ज्ञान। गही रीत उलटी जिनवान ॥ तिनकों गच्छ बध्यो अधिकार। हुंडाकार दोष निरधार ९९
तिन अतिहीण चलन जो गह्यो। चरित जुभद्रबाहुमें कह्यो ॥ तापीछे पनरासै साल। कितेकवरषगए इह काल १७००॥
लुकामत प्रगट्यो अति घोर। पापरूप जाको नहिं ओर ॥ तिनमैंत ढूंढा मत थाप्यो ॥ काल दोष गोढ़ो व्हे दाप्यो ॥१॥

छन्दचाल।

पापी नहिं प्रतिमा मानै। ताकी अति निन्दा ठानै ॥ जिनगेह करनकी बात। तिनको नहिं मूल सुहात ॥ २ ॥
जात्रा करवो न बखानै। पूजा करिवो अवगानैं ॥ जिन बिम्ब प्रतिष्ठा भारी। करिवो नहिं कहै जगारी ॥ ३ ॥
जिन भाष्यो जिम अनुसारी। रचिया मुनि ग्रंथ विचारी। तिनकों निंदै अधिकाई। गौतम वचएनकहाई॥ ४ ॥
ऐसेनिर बुद्धी भापे। कलपित झूठे श्रुत आपै॥ सबको विपरीति गहावे। निजपोटे मारग लावे ॥ ५ ॥
जिय उतपत्तिभेद न जाने। समकित हू कौं न पिछाने॥ गुरु देव शास्त्रनहिं ठीक। किरिया अति चलै अलीक ॥६॥
निजको मानै नहिं गुण घान। छठोमुनि पद सरधांन ॥ जामैं मुनि गुण नहिं एक। मिथ्यानिज मति की टेक ॥५॥
मुनि नगन रूप कौं धारै। चारित तेरह विधि पारै ॥ षट काय दया व्रत राखै। नित्य वचन सत्य जुत भाखै ॥६॥
अरुदान अदत्तहिं टारे। सीलांग भेद विधि पारे ॥ त्यागे परिग्रह चौबीस। गोपोतिहुं गुपति मुनीस ॥ ७ ॥
ईर्यापथ सोधत चाले। हित मित भाषादि सम्हालै ॥ श्रावक घरि असन जु होई। विधि जोग जेमनिपजोई ॥ ८ ॥
भोजन के दोष छियाली। निपजावे श्रावक ठाली ॥ चरया को मुनिवर आही। श्रावक तिन लेपडिगाहीं ॥ ६ ॥
मुनि अंतराय चालीस। उपर छहठालीज तीस ॥ पावे तो लेइ अहार। इम एषणा समित विचार ॥ १० ॥
आदान निक्षेपण धारे। पंचम समित विध पारे॥ इम चारित तेरह भापे। जैसे जिन वानी आपे ॥ ११ ॥

गुण मूल अट्ठाइस धारी । उत्तर गुण लख असिचारी ।। गिरि शिखर कंदराथान । निरंजन धरय कुध्यान ॥१२॥
ग्रीषम गिरि सिर रवि ताप । सिला परिठाढ़े आप ॥ वरषा रितु तरु तल ठाढ़ो । उपसर्ग सहै अंत गाढ़ो ॥ १३ ॥
हिम नदी तलाब नजीक मुनि सहस परीषह ठीक ॥ निज आतम सों लव लागी । परवस्तु सकल परत्यागी ॥१४॥
पूजकनिंदक सम भावैं । तृण कनक समान जु ताके ॥ इत्यादिक मुनि गुण धार । कहतें लहिये नहि पार ॥१५॥
इनतें उलटी जे रीत । धारै ढूंढ्या विपरीत ॥ आहार जु सीलो वासी । रोटी रावड़ी सगरासी ॥ १६ ॥
कांजी दुय तिय दिन केरी । वहुत्रसजीवनि की वैरी ॥ तरकारी हरित अनेक । ले पापी धरि अविवेक ॥ १७ ॥
आदो कदो अर सूरण । मूला त्रस थावर पूरण ॥ ए लेय आहार मझारी । वहुके मद्या विनपारी ॥ १८ ॥
अथाणोत्रस जिसधाम । फासूगिनि लेह ताम ॥ फुनि काचो दूध गहाई । वहुवार लगें रखवाई १९ ॥
दुय घड़ी गए तिह माहीं । पंचेंद्री जीयउपजाहीं ॥ महिषी गौतणो जु खीर । तैसे ह्वै जीव गहीर ॥ २० ॥
इह भेद मूढ़ नहिं जानें । अयवाल अगन वखानें ॥ पंचेंद्रि तामें थाइ । मुलोंफासु गणवाई ॥ २१ ॥
जिय अनंतणी दुयदाल । दधि छांछि मांहि दे डाल ॥ सो भोजन विदल कहांही । खायें ते पाप वढ़ाही ॥
अन्न दाल छाछि दधि जेह । मुखलाल मिले तव तेह ॥ उतरता गला मंझारी । पंचन्द्री जिय निरधारी ॥२२॥
उपजै तामाहि जानो । मननैं सशय नहिं आनो ॥ सो खेहै ढूंढ्यो पापी । करुणा तिन निश्चै कापी ॥ २३ ॥
कयखादि अखादि विचारी । ढढ्या समझै न गवांरी ॥ अय उपजे वस्तु जुमाहीं । भाख्यो सुनि लेहु तहांहीं ॥ २४ ॥
ऐसो पापी मुख देखे । है पाप महामुनिभखे ॥ ऐसे कर अघ आचार । तिन माने मूढ़ गवांर ॥ २५ ॥
धोवण जावल हांडीको । तिन लेगिन फासू नीको ॥ सीले जल अन्न मिलाई । तानें वहु जीव उपजाई ॥ २६ ॥
रवि उदय होत तिह वार । घरि घरि भटके निरधार ॥ जल ल्यावे फासू भाखे । तिह सांझलगें धरि राखे ॥ २७ ॥
उपजे ता माहे जीव ॥ घटिका दुइ मांहि अतीव ॥ सो परतें पीवे पानी । करुणा न तहां ठहरानी ॥ २८ ॥

घृत जलधरि तेल सुचाम । सो बहु जीवनको धाम ॥ तिनते निपज्यो जु अहार । सो मांस दोष निरधार ॥ २८ ॥
ऐसो दोष न मन आन । तिनको हो नरक पयान ॥ ढ़ढा अघकरी मूरत । इन माने पापी धूरत ॥ २९ ॥
झूठीको सांच बखाणै । उपदेश सु झूठा ठाणै ॥ झूठो मारग जु गहावै । सो झूठ दोषको पावै ॥ ३० ॥
सालांग हजारअठारा । लागै तिन दोष अपारा ॥ परिग्रहको ठीक न कोई । कपड़ा पात्रादिक होई ॥ ३१ ॥
ऐसो धरि भेष जुहीन । मानें तिन मूरख दीन ॥ ग्यारा प्रतिमा प्रतिपालक । कोपीन कमण्डल धारक ॥ ३२ ॥
कोमल पीछी है जाके । श्रावक व्रत गिनिय ताके ॥ परिग्रह तिल तुस सम होई । मुनिराज धरै सो सोई ॥ ३३ ॥
वह जाय निगोद मझारी । जिनवाणी एम उचारी ॥ सो कपड़ाकी कहाँ रीत । चौथे पात्र विपरीत ॥ ३४ ॥
एभ्रमें जगतके माहीं । दुखको नहिं अन्त गहाहीं ॥ तिन कहै महाव्रतधारी । ते पापी हीणाचारी ॥ ३५ ॥
इन माने ते संसार । भ्रमिहै न लहै कहुं पार ॥ मन वच तन गुपति न गोपै । पापी मुनि धरमहि लोपै ॥ ३६ ॥
पिरथी निज मान लहाहीं । चालै जिम भागे जाहीं ॥ ईर्या समिति जुकिम पाली । प्राणी हिंसा किम टाली ॥३७॥
हित मित वच कबहूं न भाखै । जिन मत तें उलटी आखै ॥ सम निज भाषा न पलैहै । अदया कबहूं न टलैहै ॥ ३८ ॥
किम एषणा समित सधैहै । जिनके इम पाप बंधैं है ॥ जो दोष रहित आहार । नविजानें वसु विध सार ॥ ३९ ॥
मुनि अन्तराय जे होई । तिन नाम न समझे कोई ॥ कुल ऊंच नीच नहिं जाणे । शूद्रनके असन सु आणें ॥ ४० ॥
तमोली जाट कलाल । गूजर अहीर वनपाल ॥ खतरी रजपूतरु नाई । परजापति असन गहाई ॥ ४१ ॥
तेली दरजी अर खाती । छिंपादिक जाति बहु भांती ॥ मांदराहूको जो पीवै । आमिषहु भखै सदीवै ॥ ४२ ॥
भोजन नित भाजन केरो । न्याय अति दोष घनेरो ॥ तिन भींटो भोजन खैहै । ते मांस दोषको पैहै ॥ ४३ ॥
तो भोजन की कहँ बात । जानै सब जगत विख्यात ॥ जिह भाजन असन कराहीं । आमिष तिह मांज धराहीं ॥४४॥
जिन मारग एम कहाहीं । बासन जिह मास धराहीं ॥ सो शुद्ध न व्है चिरकाल । महा है सो भील चंडाल ॥४५ ॥

तिनके घरको जु आहार । पापी ल्यावे अविचार ॥ अरु मुनिवर नाम धरावे । सो घोर पाप उपजावे ॥ ४६ ॥
तेनरक निगोद मभारी । भ्रमिहै संसार अपारी ॥ अपने श्रावक तिन भनि है । कुल ऊंच नीच नविमिनिहै ॥ ४७ ॥
तिनको कछु एक आचार । कहिये विपरीत विचार ॥ निजको माने गुणथान । पंचम श्रावक परधान ॥ ४८ ॥

दोहा ।

खत्री, ब्राह्मण, वैश्य, फुनि, अवर पौसा वहतीस । धरम गहै ढूंढ्या न को, अरु तिन नावे सीस ।
ढूंढा तिन श्रावक गिने, आप साधु पद मान । छ कोकाय रक्षा सवन, उपदेशे इहवान ॥ ५० ॥
कथन कियो ऊपर सवे, लखहु विवकी ताहि । दुहुन चलन है एक से, इहि मारग नहि आहि ॥ ५१ ॥
शूद्र करम करता जिके, निजनिज कुल अनुसार ॥ पेट भरन उद्यम सफल, करै दया किम धार ॥ ५२

चौपाई ॥

गूजर जाट अहीर किसान । खेती सींचे निरनिवान ॥ हलवाहै त्रस को है घात । कहुं वह श्रावक पद किमपात ॥ ५४ ॥
पवे अहाव मजापति गेह । अगनि निरंतर वालत तह ॥ होत घात सब जीवन तनी । तिन कों कैसे श्रावक भनी ॥ ५५ ॥
अवर हीन कुल है अवतार । ढूंढ्या मत चाले निरधार ॥ मदिरा पीवे आमिप भखे । धरम पल तिनके किमअखै ॥ ५६ ॥
वाण्या विन वोधोजोनाज । घृत गुल लूण तेल बहु साज ॥ होय घात त्रस जीव अपार । तिनकों श्रावक कहै गँवार ॥ ५७ ॥
हीन करम करि पेट जुभरे । तिनपे कहुं करुणा किम परे ॥ जैसी जात हीन निजतणी । मानैं आप साध पद भणी ॥ ५८ ॥
तैसेही श्रावक तिन तणे । कुकरम पाप उपावें घणें ॥ एसे मत कों थावो गिणं । ते पापी इम आगम भणे ॥ ५९ ॥

दोहा ॥

सांचे भूटे मत तणी, करिविपरिक्षा सार । सांचो लखि हिरदय धरो, भूटो दीजे टार ॥

अथ श्री प्रतिमाजीकी महिमा वर्णन ॥

दोहा।

श्रीजिनवर प्रतिमा तणी, महिमा जो अतिसार। सुन्यो जिनागम में कथन, मति वरणयो निरधार ॥ ६०॥

चौपाई।

मिथ्यादृष्टी एकहजार। तिनकी जो महिमा निरधार ॥ एक मिथ्याती जैनी भास। सबही सरभर करै न तास ॥६१॥
जैनभास सहस इक जोई। तिन सबही की प्रभुता होई ॥ सम्यक दृष्टी एक प्रमाण। तिसहि बराबर तेतहिं जान ॥६२॥
सम्यग्दृष्टी गिनहु हजार। एक अणुव्रत धारी सार ॥ महिमा गिनहु बराबर सही। इह जिन मारग माहे कही ६३।
अणुव्रती इक सहस सुजान। मुनि प्रमत्त गुणथान प्रमाण ॥ एक बराबर महिमा धार। आगैं सुनहु कथन विस्तार ६४
मुनि प्रमत्तधर एकहजार। तिनको जो प्रभुत्व विस्तार ॥ इकसामान केवली सही। होय बराबर संशय नहीं ॥ ६५ ॥
ऐसे सीमान केवली तेह। महिमा एक सहस्र की जेह ॥ समवसरन धारी जिन देव। तीर्थंकर इकसन शिषि एव ॥६६॥
परतखि समवसरण जुत होय। तीर्थंकर पद धारी सोय ॥ एकहजार प्रमाण बखान ॥ एक प्रतिमासमानता ठान ।६७॥
कोई प्रश्न करै इह जाण। तीर्थंकर इक सहस्र प्रमाण ॥ प्रतिमा एक बराबर कही। इह महिरहै छहरत नहीं ॥६८॥
ताके सम जावन को वैन। कहिये है अतिही सुखदैन ॥ त्यों प्रतिमा पूजन सरधान। अवि गाढो राखो प्रतिमान ६९।

छन्दचाल।

जिन समवसरण जुत राजै। मूरत उतकृष्ट सुछाजै ॥ निरखत उपजै वैराग। बढै शान्त चित्त अनुराग ॥७०॥
परतक्ष तिष्ठ भगवान। समवादि सुरनजुत थान ॥ पेखंतहुलास बढावै। भविजन हिरदय न समावै ॥ ७१ ॥
तिनकी वाणी सुनि जीव। तरिहैं भव उदधि अतीव ॥ जिनवर जन मोक्ष लहाई। तब जिनप्रतिमा ठहराई। ७२।
नरखत प्रतिमाको [illegible] बुधजन हीये उपजै ज्ञान ॥ तिनको निमित्त भविजीव। जगमें लहिहै सुखदीव ॥ ७३ ॥

प्रतिमा आकृति लखि धीर । उपजे वैराग गहीर ॥ मन वीतरागता आनै । तप व्रत संयमको ठानै ॥ ७४ ॥
दरसन प्रतिमा निरधार । भविजनको नित उपगार ॥ जिनमारग धरम बढ़ावै । महिमा नहिं पार न पावे ॥ ७५ ॥
जे प्रतिमा दरशन करिहै । पूरव संचित अघ हरि है ॥ कहिये का अधिक बखान । दायक भविजन सिवथान ॥७६॥
ऐसी प्रतिमा जुत होई । भविजन निश्चै चित सोई ॥ मम वच क्रम धरिहै ध्यान । ज्यों व्है सब विधि कल्यान ॥७७॥
कोऊ पूछै फिर येह । कहु साखि ग्रन्थकी जेह ॥ तिनको उत्तर ये जानी । सुनियो तुम कहूं बखानी ॥ ७८ ॥
साधर्मी द्विज सुखधाम । सहदेव नाम अभिराम ॥ पूरव दिशि सेती आयो । सो सांगानेर कहायो ॥ ७९ ॥
पढ़ियो जो ग्रन्थ अनेक । जिन मत धरे चतुर विवेक ॥ गाथाबंध सततरि हजार । महा धवल ग्रंथ अति सार ॥८०॥
तिहकी टीका सुखदाई । लख साढ़ातीन कहाई ॥ ते श्लोक संस्कृत सारै । तिन कंठ भलीविधि धारै ॥ ८१ ॥
तिह कथन कियो सब पाहीं । महा धवल थकी मुकराहीं ॥ ताकी लखि वापरतीत । पूछी जिनमत बहुरीत ॥८२॥
जिहनीसांकरी विधि सेती । आगम प्रमाण कहि तेती ॥ जैनी पंडित जुवखानी । परतखिए भवि प्रानी ॥ ८३ ॥
प्रतिमा दरसन समलोक । मधि अवर न दूजो थोक ॥ प्रतिमा पूजा जे कारक । तो होइ करम ते फारक ॥ ८४ ॥
प्रतिमा की निन्दा करिहै । ते नरक निगोदे परि है ॥ पावर्त्तन पंच प्रकार । पूरण करिहै नहिं पार ॥ ८४ ॥
श्रावक मत जैन दिगम्बर । कुलधर्म कह्यो जिम जिनवर ॥ मन वच क्रम ताहि गहै है । सुर है अनुक्रम शिव पैहै ॥ ८५ ।
पूजा जिन प्रतिमाकीजे । पात्रन चहु दान जु दीजे ॥ तप सोलभावजुत पारं । अरु कुगुरु कुदेवहि टारै ॥
विनु जैन अवर मतवारे । वातुल सम गनिए सारे ॥ गहलीनर जिसतिम भाखै । कुमती जिम झूठी आखै ॥ ८६
श्रावक कुल जिहि अवतार । जिन धर्महि तजहि गंवार ॥ ढूंढ्या मतको जोलै हैं । ते नरक निगोद परैहैं ॥ ८७ ॥
सांचो झूठो न पिछाणे । अविवेक हियें में आणे ॥ प्रतिमा निंदक ज जीव । तिनको उपदेश गहीव ॥ ८८ ॥
ताके पोते संसार । वाकी कछु वार न पार ॥ चहुंगति दुख विविध भरंतो । रुलिहै बहु जानि धरन्तो ॥ ८९ ॥

यातें जे भविजन धीर। ढूंढामत पाप गहीर॥ छांड़ौ लखि अति दुखदाई। निहचै जिनराज दुहाई॥ ९०॥
जिनमत हिरदय अवधारो। जप तप संयम व्रत पारो॥ ताते सुख लहौ अपार। यामें कछु फेर न सार॥ ९१॥

इति श्रीप्रतिमाजीकी वर्णन तथा ढूंढ्याको मत निषेधन संपूर्णम्॥

चौपाई।

अब कछु क्रिया हीण अति जोर। प्रगट्यो महा मिथ्यात अघोर॥ श्रावककुलां कबहूं नहिं करै। आनमती हरषित विस्तरै।
जैनधरम प्रतिपालक जीव। कर क्रिया जे हीण सदीव॥ तिनके सम्बोधनको जान। कहौं क्रियात हीण वखान॥९३॥
तिनको तजै विवकी जीव। करतत भव भ्रमै अतीव॥ अब सुणियो बुधिवन्त विचार। क्रियाहीन वरणन विस्तार॥९४॥

अथ मिथ्यामत निषेधन॥ चौपाई॥

भादव गए लगै आसोज। पडिवा दिवसतणी सुनि मौज॥ लड़की बहुमिलि गोवर आनि। सांझी मांडै अतिहित ठानि९५
पहर आठलौं राखै जाहि। फिर दूजे दिन मांडै ताहि॥ मांडै दिन नवनव रीति। तेरसका दिन लौं धरि प्रीति॥९६॥
चौदस अमावस दसदिन जाहिं। सांझी बड़ी जुनाम धराहिं॥ मिले पांच दस प्रौढ़ा नारी। मांडै ताहि विचारि विचारी९७॥
हाथपांव मुख करि आकार। गोवरका गहना तनधार॥ ऊपर चिरमी जत पोस लगाय। कोड़ी फूल लगावे जाय ९९।
इम विपरीत करै अधिकाय। तास पापको कहै बनाय॥ खोड्यो वांभण सांझी लेन। आयो भावै वनिता बैन॥१००॥
राति जगावै गावै गीत। ऐसी महा रचै विपरीत॥ करि गुलधाणी देंनाहणा। आवे सो राखै पूर तणा॥ १॥
सुदि पडिवा कौं ताहि उतारि। नदी ताल माहे दे डारि॥ ऐसी प्रभुता देखौ जास। देवमान पूजत है तास॥ २॥
अरुसांझी किसकी है धिया। कोणोड्योद्विज कुण की तिया॥ गोवरकी मांडै किमतिया। वरसावरसी कहुंसमजिया॥३॥
परगट लखि निज रां इह रीति। मानै ताहि धरै बहु प्रीति॥ पापी भेद लहै तसु मांहि। गोवर सरद रहै जा मांहि॥ ४॥
घटका दोय वोतहे जबै। ता मैं त्रस उपजत हैं तबै॥ तिनके पाप तणौं नहि पार। भव भव मौं दुख को दातार॥ ५॥

महा मिथ्यात तणो जे गेह। नरक तणो दायक है जेह ॥ छेदन भेदन तापन जहां। ताडन सूला रोहण तहां ॥६॥
दुखभुगते तह पंच प्रकार इसमिथ्यात थकी निरधार ॥ जिन मतके धारी हैं जेह। सो मेरी विनती सुनि एह ॥७॥
नहीं मांडि मत पूजि लमार। इह संसार वढावन हार ॥ आन मती पूजत मन लाय। तिनसौं कछु कहनो न वसाय ॥८॥

सोरठा ॥

दिनपनरे कें मांहि, मरण दिवस पितमात को। श्रावक कें हरपांहि, जे जिन मारग तें विमुख ॥ ९ ॥

छंद चाल ।

पितमात तृपति के हेत। भोजन बहु जन कों देत ॥ कैसे तृपति है तेह। जिन आगम भाख्यो एह ॥ १० ॥
मुएहुए वरप घनेरे। सुखदुख भुगते भव केरे ॥ तहां ते बहु किम वह आवै। जिन मत में इह न समावै ॥ ११ ॥
सुत असन करै पितु देखे। तृपतिन है परत पयेखै ॥ तौ आन जेनम कहा वात। जानों ए भाव मिथ्यात ॥ १२ ॥
दुयकोस थकी निज वांग। सींचै चित्त धरि अनुराग ॥ रूप न बढवा ी पावें। परभव किम तृपति लहावै ॥ १३ ॥
तातें जिन मत में सार। ऐसो कह्यो न आचार ॥ इह घोर मिथ्यात सुजाणी। तजिए भवि उत्तम प्राणी ॥ १४ ॥
आठें आसोज उजारी। अरु पूजे चैत दिहारी ॥ करि कै नूवरीक सार। बांटै तसु घर घर बार ॥ १५ ॥
गुल घिरत सुपारी रोक। नालेर धरै दे ढोक ॥ निजवहनभुवा कों देहे। धरि लोभ हिए वे लेहै ॥ १६ ॥
लैने देने को पाप। मिथ्यात वढै संताप ॥ तातें जैनी है जेह। पूजो न चढ्यो कछु लेह ॥ १७ ॥
सतियन की राति जगावै। पित्रनहू कौजु मनावै ॥ वीजासण सोकि आराधे। जागरण करै हित साधे ॥ १८ ॥
संजोडा अवरकंवारा। गोरणीय जिमावै सारा ॥ तिनके करितिलक लिलाट। पायनिदे ढोक निराट ॥ १९ ॥
पैसादिक तिनकों देई। वे हरपि हरपि चित लेई ॥ इह किरिया अति विपरीति। छांडो बुध जांणि अनीति ॥ २० ॥

अडिल्ल ॥

बीजासरा को करविंभालरो उरि धरै । सोकिउ घडत घडाय पातरी हिय परै ॥
मूढ मान तिन पूजै घर लछमी जवै । उदै असाता भये वेचिखाहै तवै ॥ २१ ॥

दोहा ॥

सकलाई तिन मैं इसी, अविवेकीन लखांहि । सुरभखमैं बहु मानता, उरभेख सों बिक जांहि ॥ २२ ॥
खेत पालकी थापना, एम बनावे कूर । जिसातिसा पाषाणपरि, डारै तेल सिंदूर ॥ २३ ॥

छंदचाल ॥

वैशाख मैं घर के वारे । पूजे दे जात विचारै ॥ तेल वटरुवांकला तेल । ऐसे पूजा विधि मेल ॥ २४ ॥
दसवीस त्रिया धरि प्रीति । गावें जु गीत विप्ररीति ॥ सेवे तिह मानें देव । सो जांणिमिथ्याती एव ॥ २५ ॥
बहुते खडा पुर माम । इक सेन कही तसुनाम ॥ तातें सकलाई माने । सुखदाता एम बखानें ॥ २६ ॥
दीया सुत जो उपजांही । सुतविन तिय कौंनि रहांहीं ॥ इह भूट थापणा जांणी । तजिय भवि उत्तम प्राणी ॥ २७ ॥
पाहण लघु धरें इक ठाहीं । पथवारी नाम कहांही ॥ तिनि कों पूजत धरि नेह । कवहु न सुखदाता तेह ॥ २८ ॥
मिथ्यात तणों अधिकार । नरकादिक दुख दातार ॥ जिन भाषित परचितदीजै । खोटीं लखि तरत तजीजै ॥ २९ ॥
असोज है आठे स्वेत । घोटक पूजे धरि हेत ॥ जिन राज एम वखानी । तिरयंचते पूजें प्रानी ॥ ३० ॥
सो पाप अधिक उपजावे । कहते कछु औरन आवे ॥ तातें जैनी जो होय । पसु पूजिनें नरभव खोय ॥ ३१ ॥
दुसरा हाकादिन माहीं । लाडू पीहर लेजाहीं ॥ इह रीति तजो भवि जीव । जिन वचे धरि हृदय सदीव ॥ ३२ ॥
जिन चैत्यन वनके माहीं । पेंन्यो दिन सरद कराहीं ॥ आगम में कहुं न वखानी । विपरीत तजो तिंह जानी ॥ ३३ ॥
मंगल तेरसि दिन न्हावे । वसतर तन उजल ल्यावे ॥ आवे जव दिवस दिवाली । दीवा भरे तेल दिवाली ॥ ३४ ॥

निज मन्दिर ऊपर धरिहै । अतिही शोभा सो करिहै ॥ तिनमें बहु त्रसको घात । अघ घोर महा उतपात ॥ ३५ ॥
दीवा थालीमें धरिकै । मिलहै तसु घर घर फिरकै ॥ तिनमें कछु माहि वडाई । प्राणो मरिहैं अधिकाई ॥ ३६ ॥
पापी कछु भेद न जानैं । मनमें उच्छव अति टानैं ॥ सो पापी महा दुख पावे । भव भामरि अन्त न आवे ॥ ३७ ॥
भरि तल काकडा वाले । वालक हींडहि करवाले ॥ घर घर लीये सो डोले । वालक हींडहि वच बोले ॥ ३८ ॥
वो देय पईसा रोक । ढिग करे एकसा थोक ॥ मर्याद घटै ता माहीं । ताकी तो कहा चलाहीं ॥ ३९ ॥
बहु हींडमाहिं त्रस जाव । जलिहैं नहि संख्या कीव ॥ इह पाप न मनमें आवे । सुत लखि दम्पति सुखपाव ॥ ४० ॥
ते पापी जानो जोर । पडि़है जो नरक अघोर ॥ भविजन जो निज हितदाई । किरिया इह हीण तजाई ॥ ४१ ॥
कांती सुदि एकै जानी । गोधन को गोवर आनी ॥ साथ्यो निज वार करावे । गोधन तनु नाम धरावे ॥ ४२ ॥
जब सांझ वैल घर आवे । पूजैं तिन अति हरषावे ॥ सांथ्यो निज पाय खुदावे । मिथ्यात महा उपजावे ॥ ४३ ॥
इन हीन क्रियाको धारी । जैहै सो नरक मंझारी ॥ पकवान दिवाली केरो । करिहै धरि हरष घनेरो ॥ ४४ ॥
दुय चार पुत्र जे थाई । तिनको दे जुदी वनाई ॥ हांडीय भरे पकवान । पितु मात हरष चित आन ॥ ४५ ॥
पुत्रन सिर तिलक करावें । तिनपै तो हाट पुजावें ॥ सिरनाय तवै दे धोक । किरिया इह अघकी कोक ॥ ४६ ॥
व्यापारी वही वणावै । पूठा चमडा का ल्यावै ॥ तिनको पूजत है जह । लखि लोभ नहीं तसु एह ॥ ४७ ॥
तिथि चौथि महावदि मानी । व्रत पाप उदयको ठानी ॥ दिनमें नहि लेय अहार ॥ निशि शशि ऊगे लिहिवार । ४८ ॥
ले मेवो दूध मिठाई । दखो विपरीत वढ़ाई ॥ जे चौथ मास सुदि होई । करिहै ज विवेक खोई ॥ ४९ ॥
इम पाप थकी अधिकाई । दुरगति में बहु भटकाई ॥ पदरह तिथि में इह जानी । तसुकहि संकट की रानी ॥ ५० ॥
पद देव मान करि पूजै । सो अति मूरखता हूजै ॥ जैनी जनको नहि काम । मिथ्यात महा दुखधाम ॥ ५१ ॥
संकराति मकर जब आवे । तब दान देय हरपावे ॥ तिल घाणी मांहि भराई । द्विज जन कों देय लुटाई ॥ ५२ ॥

मूलां का पिंड मंगावे । ब्राह्मण के घरहि खिनावै ॥ खीचड़ी वांट हर खावे । गिन है हम पुन्य बढ़ावे ॥ ५३ ॥
जहँ त्रस थावर है नाश । तहं किम है शुभ परकाश ॥ अति घोर महा मिथ्यात । जैनी न करै ए बात ॥ ५४ ॥
फागुण वदि चौदस दिनको । बारह मासन मैं है तिनको ॥ शिवरात तनो उपवास । कीए मिथ्या परकास ॥५५॥
होली जाजै जिहिं वारै । पूजै सब भाग निवारै ॥ जाको देखन नहिं जइये । कर जाप मौन ले रहिये ॥ ५६ ॥
पीछे बहु छार उडावे । जल ते खेले मन भावे ॥ छाएय अण छाएयाकी नहीं ठीक । लंपट न गिनं तहकीक ॥५७॥
करि चरम पोटली डोल । राखै मन करत किलोल ॥ यदवात दवा सुख भाखे । लघु बृद्ध न शंका राखे ॥ ५८ ॥
जल नाखै आपस मांही । नर तियनहीं लाज गहांही ॥ न्हावण के दिन सब न्हावें । कपड़ा उजरे तन भावै ॥५९ ॥
सनबंधी गेह जुहार । करिहै फिरि है हित धार ॥ विपरीत लखण लखि एह । तामैं कछु नहिं संदेह ॥ ६० ॥
मिथ्यात तणी परि पाटी । क्रिया लागे जिन वाटी ॥ सो भव भव की दुखदाई । मानों जिन राज दुहाई ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

चैत्रसित आठै दिवस, जाय सीतला थान । गीत विविध वादित्र जुत, पूजै मूढ अयान ॥ ६२ ॥
भाष्यो रोग मसूरिया, जिन श्रुत बेदक मांहि । करवि कांकरा एकठा, धरी थापना आंहि ॥ ६३ ॥

सोरठा ।

लखौ बड़ाई एह, वाहन गदहो तासको । लहै हीन पद जेह, जो लघु नर हचढ़ाइये ॥ ६४ ॥

दोहा ।

बालक याही रोग ते, मरै आत्र जिह छीन जाकी दीरघ आयु है, सो सारै नकि सीन ॥ ६५ ॥

सोरठा ॥

प्रगट भई कलिकाल, इह मिथ्यात कि थापना । जे जैनी त्रिशाल, याहिन मांनै सरवथा ॥ ६६ ॥
मंले जे नर जांहि, नहीं गीत सुनि कै खुसी । टका गांठि का खहिं पाप उपावे अधिकवे ॥ ६७ ॥

गीताछन्द ।

जे चैत वदि पडवा थकी गण गौरि की पूजा सजै ! परभाति लड़की होय भेली गीत गावै मन रुचै ॥
माली तणी वाड़ी पहूंचेरु फूल दो बहलैं कर । हरषात मन उछाह करती आसह ते निज घरी ॥ ६८ ॥
पूजे तहां तिह दिवस सो ले फूल दोय चढायकै । पाछे बनावे हेत धरि गण गोरि गारि अणायके ॥
ईश्वर महेश्वर करे मूरति आंखि कोड़ी की करे । देखो वडाई नजर इमहो चित्र की अयना धरे ॥ ६९ ॥

छंद माराच ।

वणायतीज कौं मुणो चढाइ पूजि कै सही । बड़ी तियारु कन्य काइ कंत व्रत्त को गही ॥
करे ।वठाम भोजना अनेक रूप मानि है । सुहाग भाव वत्त नाम जोपिता वखानि है ॥ ७० ॥

गीता छंद

गण गौरि की पूजा किएजो, आयु पति को विस्तरे ॥ तो लखहु परतछि आयु छोटी प्राय मानव क्यों मरे ॥
कन्या कुवारी पणाही तें तास पूजा आचरै । वारह वरप की होय विधवा क्यों न तसु रत्ता करे ॥ ७१ ॥
साहिब तणी जो करैं सेवा दिवस निशि मन लायकैं । धिकार तसु साहब पणो कुछु दन सेव कराय कैं ।
दायक सुहागनि विरद को गहि । सकति तसु अति हीनता ॥ सेवा करती वाल विधवा होय लहि पद हीनता ॥ ७२ ॥

तोटकछन्द ।

सिगरी नर नारि इहै दरसे । अरि मूरखता फिरि कै परसे ॥ कछु सिद्ध लहै नहिं तास थकी । तिह तें तजिएतसु पूजनकी ७३

गीताछन्द ॥

भूपन वसन पहिराय वहुविधि अधिक तिय मिलिकै गही । लेजाइ पुरसे निकसि वाहर पहुंचिहै जल तीरही ॥
गावै विनोद अनेक विनती नीरमें तसु डारही । अतिहरप धरतो हरप करती आय गेह सिधारही ॥

दोहा।

इह प्रभुता सहु देखि कै, गौरी ईश महेश। वाकूं जल में खेयतें, डर न कियो लवलेश ॥७५॥
रहत सकत तिह देखिये, कर थिापना मूढ़। महा मिथ्याती जान तिन, धारें दोष अगूढ़ ॥७६॥

सोरठा।

इत पूजै फल येह, कुगति अधिक फल भोगवे। यामें नाहिं सन्देह, जैनीको इह योग्य नहिं ॥ ७७ ॥
दुरलभ नर भव पाय, जैन धरम आचार जुत ॥ ताको चित बिसराय, पूज करे गण गौरिकी ॥ ७७ ॥
सो मिथ्यातको मूल, त्रिबिधि तजो तिन दुखद लखि। होय धरम अनुकूल, ताते भव भव सुख लहै ॥७८॥

सवैया ३१ ॥

चांवडा बराही खेतपाल दुरगा भवानी पथवारी देव ईंट थापना बखानिये ॥ सत्तनाशी नाभिग ललितदास पथी आदि नाना परकार भेव परगट जानिये ॥ झाझाकलवानी डाल मेव दीप वो मुगाकी मंत्रते उतारै भूत डाकिनी प्रमानिये। एती विपरीत घोर थापना मिथ्यात जोर अहो जैनी इन्हें कष्ट आएहू न मानिये ॥ ७९ ॥

सोरठा ॥

पीपर तुरसी जान, एकेंद्री परजाय प्रति। नहीं देव पद ठान, पूजै मिथ्यादृष्टिजे ॥८०॥

सवैया।

ख्वाजे मीर साह अजमेर जाकी जाति बोलै पुत्रके गले में बांधी घालै चाम पाटकी ॥ मेरे सुत जीवै नाहिं याते तम पाय अहो सात वर्ष भए नीत पायनते चाटकी ॥ जलालदीय पंचपीर और बड़ी परिजे जाय करे चूरिमो कुबुद्धि जिन राटकी। फातिहा पढ़ावैं जिंदा दरवेशको जिमावें इह कलिकाल रीति मिथ्यातके थाटकी ॥८१॥

दोहा।

तुरक आनके देवको, मानत नाहिं लमार। हिन्दू जैनी मूढ़मती, सेव वारम्वार ॥ ८२ ॥

या समान मिथ्यात जग, और नहीं है कोय। दुखदायक लखि त्यागिहै ॥ महा विवेकी सोय ॥८३॥

सवैया ३१ ॥

भादों वदि नौमी दिन गारिको बनायघोडो तापरिचढ़ावै चहुवाण गोगो नामही। वावड़ी में मेलि कुम्भकारि तिय कर धर लोभते पुजावत फिरै है धाम धामही ॥ ताको सुखदाई जानि मूढ़मती मानिठानि देत दान पायनमि सेवे गाम गामही ॥ मिथ्यात कीरीति एह करे निरबुद्धी जेह कुगति लहैहै जेह वांका दुखपावही ॥ ८४ ॥ भादों वदि वारस दिवस पूजै वछ गाय रातिको भिजोवें नाज लाहण के कामही। निकसैं अंकूरा तिनि मांहि जे निगोदरासि हरष अधिक धरि बांटैं ठाम ठामही ॥ जीवन को नाश होय मानत तिवहार लोय कैसे सुखपावे सोय पशू पूजे नामही। महा अविचारी मिथ्याबुद्धीचारी नर नारी ऐसी कृया करें शुभ्र लहै दुख धामही ॥८५॥

दोहा।

हलद मांहि रंग सूतको, गाज लेत है तेह। सूर्ण कहानी खोलते, रोट करत है तेह ॥ ८६ ॥

धोक देय पूजै तिसे, कहि सुखदाई एह। नाम ठाम नहिं देवको, भव भवमें दुख देह ॥ ८७ ॥

छन्दचाल।

नारी जो गर्भधरे है। वालक परसूत करे है ॥ जनमें वालक जिहि वार। तसु ओंतिह लेत उतार ॥ ८८ ॥

केउन के ऐसी रीति। गावै त्रिय मन धर प्रीति ॥ गाडै चित अति हरपाई। ते ओंल हाट लेजाई ॥ ८९ ॥

केऊ रोटी के मांही। गाड़े के देत न खाहीं ॥ तामाहीं जीव अपार। गाड़े सो हीणाचार ॥ ९० ॥

ते अदयाके अधिकारी। पावें दुरगति दुखभारी ॥ जिनके करुना मन मांही। ताको दे दूरि न खाहीं ॥ ९१ ॥

दस दिन को है जबवाल । सूरज पूजै तिहकाल ॥ लागै तसु दोष मिथ्यात । जिन मारग ए नहीं घात ॥ ९१ ॥
तीन्है जवन्हवणकरैहै । जलथानिक पूजन जैहै ॥ जलजीवन कों भंडार । एकेंद्रीत्रस अधिकार ॥ ९२ ॥
जैनी जिनके घरमाहीं । संका चित मांहिंधराहीं ॥ जलथानक जाय नदूजे । घरमाहिं परहंडी पूजे ॥ ९३ ॥
ताको है दोष महंत । ततछिण तजिए गुणवंत ॥ दिन तीस तणो व्है वाल । जिन मारग में इह चाल ॥ ९४ ॥
वसुदरव मनोहर लेई । चैत्याले गमन करेई ॥ ते बालक अंकमजारी । तिह साथ चलै बहु नारी ॥ ९५ ॥
गावैं जिन गुण हरखंती । इम मंदिर जिन दरसंती ॥ भगवंत चरण सिर नाय । फुनि नृत्य रचै बहु भाय ॥ ९६ ॥
वाजित्र विविधि के वाजे । जामैं घन अंबर गाजे ॥ जिन भाव हरखि धरि सेवै । तसुजनम सफलता लेवै ॥ ९७ ॥
श्रुतगुरु पूजै बहु भाई । जिन की थुति मैं मन लाई ॥ भाषै अति उत्तम वैन । सब जन मन कों सुख दैन ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

जिन श्रुतगुरु पूजा पढ़े, आवे अपने गेह । यथा सकति अरथी जनहि, दान हरषतैं देय ॥ ९९ ॥
सनमानैं परिवार कों, यथा योग्य परवान । जैनी इह विधि पुत्रकों, जन्म महोछो ठाम ॥ १२०० ॥
आठ बरस लों पुत्र जो, करइपाप विस्तार । तास दोष पितु मातकों, व्है है फेर न सार ॥ १ ॥
यातें सुनि निज कारमैं, राखै जे मति मान । साल पढ़ावै लाभलखि, है तब विद्यावान ॥ २ ॥

छंदचाल ॥

अवब्याह करन की बार । किरिया जे व्हे अविचार ॥ प्रथमहि जब लगनलिखावै । सज्जन दस बीस बुलावै ॥३॥
चावल है जिन कर मांहीं । पूजा सब लगन कराहीं ॥ करि तिलक विदा तिन कीजे । मिथ्यात महा सुगिनीज ॥४॥
मांडै फिरि भीत विनायक । कहि सिद्ध सकल सुखदायक ॥ नर देह वदन तिरयंच । सो तो सिधि देय नरंच ॥ ५॥
तातें जैनी जो होइ । ए जैन विनायक सोइ ॥ साजी अवटावै जेह । पापड करण को तेह ॥ ६ ॥

जल तीन चार दिन ताईं । राखै नहीं संक धराहीं ॥ वसु पहर गये तिन माहीं । सैनमूर्छन जे उपजांहीं ॥ ७ ॥
मांग्यो घर घर पहुंचावै । बहुतो सो पाप बढ़ावै ॥ वसुजाम मांहि वह नीर । बरतै जे बुद्ध गहीर ॥ ८ ॥
उपरांति दोष अति होई । मरयाद तजो मति कोई ॥ अरुबड़ी करण के ताईं । भिजवावै दालि अथांहीं ॥ ९ ॥
सोदालि धोय सब नाखै । बहुविरियां लगन न राखै ॥ घटिका दुयमै उसमांहीं । सन्मूर्छन जीव उपजांहीं ॥ १० ॥
यातैं भवेजन मन लावे । तस तुरतहि ताहि डकावे ॥ धोवण को पानी जेह । नांखे वहु जतन करेय ॥ ११ ॥
वसु संरद रहे नहीं जावैं । बीखरिवानांवै यातैं ॥ सांझै जो दालि पिसावै । वासन भरि राति रखावै ॥ १२ ॥
उपसावै अधिक खटावै । उपजै त्रस वारन पावै ॥ फुनि लूण मसाला डारे । करतैं मंसलैं बहुवारै ॥ १३ ॥
इमजीवनि नास करंती । मनमांहीं हरष धरंती ॥ निजपरतिय बहुत बुलावे । तिनपै ते वड़ी दिवावे ॥ १४ ॥
सो पाप अनेक उपावे । कहतैं कछु ओरन पावें ॥ करुणा जाके मनि आवे । सोइह विधि बड़ी निपावे ॥ १५ ॥
उनहे जलदालि भिंजोवे । प्राशुक जल तैं फिरि धोवे ॥ किरिया को दोष न लावे । सोदिन में कलौ करावे ॥ १६ ॥
ततकाल वड़ी तसु देह । उपजावे पुन्य न छेह ॥ स्याणों जन अवर अयाणो । दुहु व्याह करें इह जाणों ॥ १७ ॥
किरिया में भेद अपार । इकसुखदे इक दुखकार ॥ जाके करुणा मनमांहीं अविवेक न क्रिया कराहीं ॥ १८ ॥
छाणा को गाडो आने । अविवेकी पूजा ठाने ॥ लकडी को थंभ बनावे । ताकों तिय पूजण आवे ॥ १९ ॥
गावती गीत घनेरा । जोजो जिह थानक केरा ॥ भटी पूजें करि टीकी । कारण लखि सबहीको ॥ २० ॥
संकडी राखी दिन ऐहे । तियचाकि पूजणो जैहै ॥ तिसि कों डोरे बंधवावे । परियण सज्जन मिलि आवें ॥ २१ ॥
तह पूज विनायक करिके । रोली पूजे चित धरि के ॥ अरुवार वार विनायक । पूजे जानो सुखदायक ॥ २२ ॥
इन आदि क्रिया विपरीति । करिहै मूरख धरि प्रीति ॥ मिथ्यात भेद नहिं जाने । अघको डर मन नहिं आने ॥ २३ ॥
अघतैं है नरक बसेरा । वोरन आवे दुख केरा ॥ यातैं सुनि बुध जन एह । मिथ्यात क्रिया तजि देह ॥ २४ ॥

या काप ३

तातैं भव भव सुखपावैं । आगम जिन राज बतावैं ॥ यातैं सुख बांछक जीवें । आज्ञा जिमें पालि सदीवें ॥ २५ ॥
करिहै जे क्रिया विवाह । सिव मत माफिक यह राह ॥ मिथ्यात दोष इह जातैं । जैनी कों वरजी यातैं ॥ २६ ॥
पूरब दिस ज्योतिस जैन । कछयक उद्योत सुख दैन ॥ रहियो तिन माफिक व्याह । जैनी भरि करें उंछाह ॥ २७ ॥
तामें मिथ्या नहिं दोषे । सिवमत विधिहू नहीं पोषे ॥ जैनी श्रावक जो पंडित । जिनमत आचार सु मंडित ॥ २८ ॥
ते व्याह करावैं आई । मनमें शंका न धराई । तिनहूं स्यों आपसमांही । सुत बेटी सगपन थाहीं ॥ २९ ॥
प्रथमहिं जो व्याह सचैहै । जिन मंदिर पूज रचैहै ।। बाजित्र अनेक बजावें । सुवती जन मंगल गावैं ॥ ३० ॥
कन्या वर कों लेजांही । जिन चरणनि नमन करांहीं ॥ जिन पूजिरआवे गेहै । पीछे विधि एम करेहै ॥ ३१ ॥
सज्जन परिवार संतोषे । ऊपित भूषित जन पोषे ॥ जिन मत विधि पाठ प्रमाणैं । अपराजित मंत्र वपाणैं ॥ ३२ ॥
वरकन्या दोहु कर जोड़ । फेरा कराय धरी कोड़ ॥ समधी जन असंन करावे । दुहूं तरफहिं हरप बढ़ावे ॥ ३३ ॥
देवो निज सकति प्रमाण । कन्या वर भूषणदान ॥ इह विधि जे व्याह करांही । मिथ्यात न दोष लगाहीं ॥ ३४ ॥
गुरु देव धरम परतीत । धारो जनकी इह रीत ॥ तिनको जस है जगमाहीं । दूषण मिथ्यात तजाहीं ॥ ३५ ॥

दोहा ।

श्रीहणवन्तकुमार की, मूढ़ निधरि चित प्रीति । गांम गांम की थापना, महा घोर विपरीत ॥३६॥

छन्दचाल ॥

मूरति पाषाण घड़ावें । तसु ऐसे अङ्ग बनावे ॥ मानुष कैसे करपाय । बन्दरकोसो मुख थाय ॥ ३७ ॥
लंबी पूंछ जु अधिकाई । मूरति इस भांति रचाई ॥ कहुं इक चात्री जु चुणावे । कहुं मढ़ि रचिकै पधरावैं ॥३८॥
कहुं चोड़े निकटहि गाम । कहुं कांकड़ दूरहि धाम ॥ तिनतेल लगावे पूर । चरचें कांचीरु सिन्दूर ॥ ३९ ॥
कहिहै तसुखड़ा देव । बहु जन तिह पूजे एव ॥ पापी जन भेद न जानें । जिह आगे अदया ठानें ॥ ४० ॥

चौपाई।

जात्री दूर दूर का घणा। आवै पायनमें तिह तणा॥ जीव बद्धकरि तास चढ़ाय। निहचैते नरकहिजाय॥ ४१॥
कामदेव हणमन्त कुमार। विद्याधर कुलमें अवतार॥ तीर्थंङ्कर विनु जग नरजिते। तिहसम रूपवान नहिं तिते ४२॥
वन्दर वंशी खगपतिजान। धुजामाहिं कपि चिन्ह बखान॥ माता अंजनी जाकी जानी। पवनंजयतसु पिता बखानी ४३॥
दादो खगपति नृप पहलाद। जैनधर्म धरि चित अहलाद॥ पाले देव गुरू श्रुत ठीक। महा सीलधारी दृढ़कीक ४४॥
हणु कुमार दीक्षा धरि सार। मोक्ष गये सुख लहे अपार॥ ताको भाषे कपिको रूप। ते पापी पड़िहैं भवकूप॥४५॥
आनमतीसों कछु न बसाय। जैनी जनसों कहुं समझाय॥ जिनमारग मैं भाष्यों यथा। तिह अनुसार चलो सरवथा ४६॥
गंगा नदी महा सिरदार। जाको जल पवित्र अधिकार॥ जिन पपाल पूजा तिह थकी। करिये जिनआगममें बकी॥४७॥
जैनी श्रावक नाम धराय। हाड रुलावे तिह पितु माय॥ धन्य जनम मानै जग आप। गंगा घाले मायरु बाप॥४८॥
आनमती परशंसा करे। तिन वच सुनि चित हरपहि धरे॥ मूढ़ धरम अघ भेदन लहै। वातुलसम जिम तिम सरदहै ४९
पदमद्रह हिमवन ऊपरी। ताइहतें गंगा नीकरी॥ विकलत्रस जलमें नहीं होय। इहु दिन रहैन उपजे वोय॥५०॥
यातें याको जे मतिमान। उत्तम पानी मानैं आनि॥ हाड रोम नाखें अघथाय। अघतें नरकादिक दुप पाय॥५१॥
जिसपरजाय तजै ततकाल। और ठाम उपजै दरहाल॥ हाडरलाए गंगा माहिं। कैसे ताकी गति पलटाहि॥ ५२॥
जैनीजन तिन शिक्षा एह। जैन विरुद्ध कीजे है तेह॥ ते करिये नहीं परम सुजान। तिम उत्तम गति लहै पयाण ५३॥

अथ जनम मरणकी क्रियाको कथन॥

दोहा।

मरण समय कीजे क्रिया, आगमतें विपरीत। पोखक मिथ्यादृष्टिकी, कहूं सुनहु तिन रीत॥ ५४॥

चौपाई ॥

पूरी आयु करवि जे मरे । तेहि सनहती ए विधि करे ॥ चून पिण्डका तीन कराय । सो ताके कर पास धराय ५५॥
भ्रात पुत्र पोताकी वहू । भरि नालेर धोकदे सहू ॥ पान गुलाल कफन पर धरै । एम क्रियाकरित नीसरे ॥ ५६ ।
दग्ध कृया पाछे परिवार । पानी देय तवे तिह वार ॥ दिन तीजो सो तीयो करे । भात सरा इम साथे धरे ॥ ५७॥
चांदी सात तवा परिहारि । चन्दन टिपकी द नर नारि ॥ पानीदे पाथर खटकाय । जिन दर्शन करिकै घर आय ५८॥
सबपरिजनजीमत तिहिंवार । वांवां करते गास निकार ॥ सांझ लगै तिहिढांकरि खाय । गायवछाकं देय खुवाय ॥ ५९॥
जिह थानक मुवो जन होय । लीपै ठाम करै मुख होय ॥ फेरे ताऊपरि के रडी । ए मिथ्यात क्रियाअति वडी ॥ ६०॥
ए सब क्रिया जैन मत मांहि । निंद सकल भाषै सकनाहि ॥ अवरक्रिया जे खोटी होय । सकल त्यागिए बुधजनसोय ॥ ६१॥
जवजिय निज तजि कै परजाय । उपजे दूजी गतिमैंजाय ॥ इक दुय तिन समये के मांहि । लेइ आहार तहां सकनाहि ॥ ६२।
गतिमाफिक पर्यापति धरै । अंतमुहूरत पूरी करै ॥ जिहगतिही में मगन रहाय । पिछले भव कुण यादिकरांय ॥ ६३॥
पिंडमेल्हि तिहि कारण लोय । धोक दिये जैलै नहीं सोय ॥ पांणी देवे कीजो कहैं । मूए कौं कवहु न पहोंचिहै ॥ ६४॥
भात सराई काकै हेत । वहतो आय आहार न लेत ॥ जाकै निमित्त काढ़ियेगास । पहुंचे वहै यहै मन आस ॥ ६५ ॥
सोजाणै मूरख की वाणि । मूवो गास लेय नहिं आणि ॥ गउके रडीगासंहीखाहि । अर मूढ किम पहुंचे ताहि ॥ ६६॥
मृत्यकभूमि फिरै के रडी । सो मिथ्यात भूल अति वड़ी ॥ उलटी क्रिरिया ते है पाप । जो दुरगति दुख लहै संताप ॥ ६७॥
यातै जैनधरम प्रतिपाल । जे सुभ क्रिया अभूठी चाल ॥ तिनइ भलि मति करियोकोय । जोआगम हिरदैदृढहोय ॥ ६८॥
पूरि आयु करि त्रिजिय मरै । तापीछे जैनी इम करे ॥ घड़ी दोय मैं भूमि मसान । ले पहुंचै परिजन सव जान ॥ ६९ ॥
पीछे तास कलेवर माहिं । त्रसअनेक उपजै सक नांहि ॥ मही जीव विन लखि जिह थान । सूको प्रासुक ईंधण आन ॥ ७०॥
दगधकरवि आवे निज गेह । उसनोदक स्नान करेह ॥ वासरतीनवीतिहै जबै । कछु इक सोक मिटणको तब ७०॥

निज कुलके मानुष जे थाय । ताके घरतैं असनलहाय ॥७१॥
स्नान करविआवे जिन गेह । दर्शन करि निज घर पहुंचेह ॥ अष्टद्रव्य तें पूज रचाय । गीत नृत्य वाजित्र वजाय ॥७२॥
दिन द्वादश वीतेहै जब । जिन मंदिर इम करिहै तबे ॥ करवि महोछव इह विधि सार । पात्र दान दे हरष अपार ॥७३॥
सक्तिजोग उपकरण कराय । चंदोवादिक ताहु चढाय ॥ अरु परिजण सूतककी वात । सूतकविधिमें कही विख्यात ७४
परिजन पुरजन न्योति जिमाय । यथाशक्ति इम शोक मिटाय ॥ इह विधि जैनी क्रिया करेय । अवर कुक्रिया सबहि तजेय ७५
ता अनुसार करे भवि जीव । हीए क्याको तजो सदीव ॥

अथ सूतकविधि लिख्यते ॥

उक्तंच मूलाचार उपरि भाषा त्रोटक छन्द ॥

इम सूतकदेव जिनन्द कहै । उतपत्ति विनास विभेदलहै ॥ जनमें दसवासर को गनिए । मरिहै जब वारहकोभनिए ॥७६॥
कुलमें दिन पंचलगी कहिये । जिन पूजन द्रव्य चढे न दिये ॥ परसूत भई जिह गेह मही । वह गाम गली दिन तीस नहीं७७

चौपाई ।

चेरी महिषी घोड़ी गाय । ए घरमें परसूतिज थाय ॥ इनको सूतक इक दिन होय । घर वारे सूतिक नहिं कोय ॥
महिषी छीर पक्ष इक गये । गाय दूध दिनदस गत भये ॥ छेली आठ दिवस परमाण । पाछे पय सबको शुध जाण ७८॥
जनम तणो सूतक इह होय । मरणतणो सुनिये अनलोय ॥ दिन बारह इह सूतक ठानि । पीढी तीनि लगे इक जानि ७९॥
चौथी साखि दिवस दस थाय । पंचम पीढी षट दिन जाय ॥ षष्ठी साखि चार दिन कहे । साख सातमी तिहु दिनरहै७९
अष्टम साखि अहो निसि सोग । नवमी जामहि दोय नियोग ॥ दसमी हीन मात्रही जाणि । सूतकगोत्रनि गेह वखाण॥८०॥
करि सन्यास मरे जो कोय । अथवा रणमें जूझे सोय ॥ दूशांतरमें छोड़े प्रान । बालक तीस दिवसलों जान ॥८१॥
एक दिवस इनको है सोग । आग अवर सुना भवि लोग ॥ पीढो बालक दासी दास । अरु पुत्री सूतक सम भास॥८२॥
दिवस तीनलों कह्यों बखान । इसकी मरयादा म जान ॥ वनिता गरभ पतन जो होय । जितना मासतणी थितसोय८३

जितने दिनको सूतक सधी। पीछे स्नान शुद्धता लही॥ पति का मोह थकी तिय जरे। अथवा अपघातक जू करे ८४॥
अरु निज वरिमरिहै जो कोय। इन तिनहूं की हत्या होय॥ पखवारा सूतक ता तणों। आगे अवर विशेष जो भणों॥८५॥
जाके घरके असनरु नीर। खाय न पीवै बुद्धगहीर॥ अरु श्रीजिम चैत्यालय मही। द्रव्य न चढ़ै रु आवै नहीं॥८६॥
बीति जाय जबही छह मास। जिन पूजाउच्छवपरकास॥ जामें पंच ताहु के गेह। जातिमांहि तव आवै जेह॥८७॥
मरयादा ऐसी को छांड। और भांति करवा नहिं मांड॥ जोजिनआगम भाखी रीत। सोकरिए नित मन धरमीत॥८८॥

कुंडलिया॥

सूतक त्त्री गेह पंचवासर कह्यो। ब्राह्मण गेह मझारि दिवस दसही लह्यो॥
अष्ट रात्रि दस होय बैश्य घर जाणिये। सब सूद्रनि के सूतक पाप वखानिये॥ ८९॥
ऋतुवंती तिय प्रथम दिवस चंडालणी। अघघातिका दिवस दूसरा में भणी॥
त्रितय दिवस के मांहि निंदिसम रजकणी। वासर चोथे स्नान क्रियांसों सुध भणी॥ ९०॥
जाके घर में नारि अधिकहै दुष्टणी। जाकै किरियाहीण सदा पूरव भणी॥
विभिचारणि परपुरुष रमण मति है सदा। ताके घर को सूतक निकसै नहिं कदा॥ ९१॥

सोरठा॥

को कवि कहै बनाय, ताके अवगुण को कथन। प्रायश्चित न समाय, जिहिदिन दिन खोटी क्रिया॥ ९२॥

कुंडलिया॥

अरुजाके घर त्रिया दया व्रत पालनी। सत्य वचन मुख कहै अदत्त टालिनी॥
ब्रह्मचर्यको धरे सती सब जन कहै। पतिवरता पति भक्ति रूप नितही रहै॥ ९३॥

जिनवर की सो पूज करै नित भाव सों। पात्रनि को दे दान महा उच्छाह सों॥
सूतक पातक ताके घर नहिं पाइये। प्रायश्चित तिय तिहि कों क्षेम वताइये॥ ९४॥

दोहा।

इह सूतक वरनन कियो, मूलाचार प्रमान। तिह अनुसार जु चालहै, ता सम और न जान॥ ९५॥

सोरठा॥

भाषा कीनी सार, जोमव संशय ऊपजै॥ देखो मूलाचार, मन संसो भाजै सही॥ ९६॥ इतिसूतक विधि॥

अथ तमाखू भांग निषेध वर्णनं॥ छंद चाल॥

सुनियै वुध जन कलिकाल। प्रगटी हीणी दोय चाल॥ इकप्रथम तमाखू जानो। दूजीविजियाहि वखानो॥ ९७॥
सुनिलेह तमाखु दोष। अदया कारण अघ कोष॥ निपजनकी विधि है जैसें। परगट भाषत हों तैसें॥ ९८॥
तसुहरित तोडि कै पोन। सांजीजलतै छिडकोन॥ गदहा को मूत्र जु नांखै। बांधिरुजूडाधरि राखै॥ ९९॥
दिन घहुत सरदता जामैं। त्रसजीव ऊपजै तामैं॥ तिनकी अदयाहै भूरि। करुणा परिहै नहिं मूरि॥ १३००॥
पिरथी मैं आगि डरांहीं। तिनिके जिय नास लहांही॥ धूवां मुखसेती निकसै। तवघाय जीव बहु विनसै॥ १॥
थावरकी कौन चलावै। त्रसजीव मरण बहु पावै। दुरगन्ध रहै मुख मांहीं। कारे कर है अधिकांहीं॥ २॥
उत्तम जन ढिंग नहिं आवै। निंदासव ठाम लहावै॥ दुरगतिहि दिखाव वाट। सुरगति कौं जाणि कपाट॥ ३॥
अतिरोगवढावे श्वास। ऐसैं नरकीका आस॥ दोषीक जानि करि तजिए। जिन आज्ञाहिरदय भजिए॥ ४॥
उपवास करै दे दान। किरिया पालै धरि मान॥ पीवैहैं तमाखू जेह। ताके निरफल है एह॥ ५॥
अघतरु सिंचन जल धार। शुभ पादप हनन कुठार॥ बहु जनकी भूटि घनेरी। दायक गति नरकहि फेरी॥ ६॥
इह कानन वुधजन लायक। ततछिण तजिये दुखदायक॥ के सूंघे केऊ खैहैं॥ तऊ दूषणको लैहैं॥ ७॥

दोहा।

भांग कसूंभो खातही, तुरत होत वै रोस। काम बढ़ावन अघ करन, श्री जिनवर पद सीस ॥ ८ ॥
अतीचार मदिरा तणों, लागै फेर न सार। जगमें अपजस विस्तरै, नरक लहै निरधार ॥ ९ ॥
लखहु विवेकी दोप इह, तजहु तुरत दुख धाम। पट मतमें निन्दित महा, हनै अरथ शुभ काम ॥ १० ॥

मरहटा छन्द।

इह जगमाहीं अति विचराहीं क्रिया मिथ्यात जु केरी। अदयाको कारण शुभगति वारण भव भटकावन फेरी ॥
करिहै अविवेकी है अति टेकी तजिकै नेकी सार। धरि मन चित आनै अघही जानै कौन बखानै पार ॥ ११ ॥
तामै रमि रहिया ग्रह ग्रह गहिया तिय वच सहिया तेह। मन में डर आनै कहै सुखलानै वचन बखानै जेह ॥
नरपद जिन पायो बृथा गमायो पाप उपायो भूरि। अस मनमें रमिहै कुगुरुन नमि है भवभव भ्रमिहै कूर ॥१२॥
किरिया लखि ऐसी भाषी तैसी तजिय वैसी वीर। ताते सुख पावे अघ नसि जावे जो मन आवे धीर ॥
जिनभाषित कीजे निज रस पीजे कुगतिहै दीजे नीर। भव भ्रमणहि छांडो सकतिह मांडो उतरो भवदधि तीर १३

अथ ग्रहशांति जोतिस बरनन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

जोतिस चक्रतणी सुनि बात। जम्बूदीप माहिं विख्यात ॥ दोय चन्द सूरिज दो कहे। जैनी जिन आगम सरदहे १४॥
इक रवि भरत उदै जब होय। दूजो ऐरावतिमें जोय ॥ दुहुन विदेह माहिं निसि जाणि। जोतिस चक्र फिरे इहवाणि१५॥
भरथ अरु ऐरावति निसि जवै। दुहुनविदेह दुहूं रवि तवै ॥ इक पूरव विदेह रवि जान। अपर विदेह दूसरो भान १६
फिरतं रवि शशिको इहभाव। आदि अन्त थिरता नहिं थाय ॥ एक चन्द्रमाको परिवार। आगम भाष्यो पंचप्रकार॥१७॥
शशि ग्रह नक्षत्र जाणिये। पंचग सहु तारा ठाणिए ॥ तिनकी गिनती इहविधि कही। एक चंद्रमा इक रवि सही ॥१८॥
ग्रह अठ्यासी अवर नक्षत्र। भाषै अट्ठाईस विचित्र ॥ छासठ सहस्र नवसयसही। ऊपरि पचहत्तरिकों गही ॥१९ ॥

अडिल्ल छन्द ।

पंच अंक इन ऊपर चौदह धनिछिये । अंक भये उगणीस सकल मेले किये । छ्यासठ सहस्र नवशय पंचहत्तर भये ॥ कोडाकोडी तारा इतने गए गये ॥ २० ॥

चौपाई ॥

एक चन्द्रमाको परिवार । तैसो दूजाको विस्तार ॥ मेरुतणी परदिक्षणा देई । थिरता एक निमिष ना लेई ॥ २१ ॥
जिन आगममें इह तहकीक । आनमतीके सो नहि ठीक ॥ जिन मत जोतिष विच्छित भई । अट्ठासी ग्रह भेदन लई ॥२२॥

दोहा ।

प्रगट्यो शिवमत जोर अब, पंडित निजबुधि धार । ग्रन्थ कियो जोतिष तणों, तिम फैल्यो विस्तार ॥ २३ ॥
आदित सोमरु भूमि सुत, बुध गुरु शुक्र सुजान, राहु केत शनि ए सकल, नव ग्रह कहे बखान ॥ २४ ॥
चौथो अष्टम बारहो, अरु घातीक बनाय । साढ़े साती सनि कहैं, दान देहु समथाय ॥ २५ ॥

छन्द चाल ।

तंदुलरूपोसित वास । रवि शशिको दान प्रकास ॥ रातो कपड़ो गोधूम । तांबो मुलयो सुत भूम ॥ २६ ॥
बुध कंत दुहू इकसेही । मूंगादि कह्यो इत देही ॥ गुरुज वसन घो हेम । अरु दालि वनन करि प्रेम ॥ २७ ॥
जिम कहे शुक्रको दान । तिमही दे मूढ़ अयान ॥ शनिराहुस्याम भणि लोह । तिलतेल उड़द तद्बोह ॥ २७ ॥
हस्ती अरु घोटक श्याम । जुत श्याम विलरथ नाम ॥ इत्यादिक दान बखाने । ग्रहशान्ति निमित मन आने ॥२८॥
नव ग्रह हरपदके धारी । तिनके नहि कमल अहारी ॥ किहकाज नाज गुल देहै । सुर किम हि नृपतता लेहै ॥ २९ ॥
हाथी घोड़ा असवारी । तिनि निमति देह हर धारी ॥ वनके निमान अति सार । मुकरण नग जड़ित अपार ॥३०॥
भूपरि कछुपायन चाले । किहकारण दानहि भाले ॥ तातें ए दान अनीति । शिवमत भाषे विपरीति ॥ ३१ ॥

बालक जनमें तिय कोई । मूला असलेखा होई ॥ दिन सात बीस परमाणैं । वनिता नहिं स्नान जुठानैं ॥३२॥
पति पहिरे वसन मलीन । बालक निज स्वाद नवीन ॥ सिर दाढ़ी केस न ल्यावे । स्नानहुंकार वो नहिं भावै ३३॥
दिन है सब जाय वितीत । किरिया बहु रचे अनीत ॥ द्विजको निज गेह बुलावे । वह मूलाशांति करावे ॥ ३४ ॥
तरु जाति बीस परसात । तिनके जु मंगावे पास ॥ इतनेही कूवा जानी । तिनको जु मंगावे पानी ॥ ३५ ॥
इतनेही छानि जु केरा । सो फस करै तस मेरा ॥ अरु सताईस कर टूक । सीधा इतनेही अचूक ॥
दिखणा एती जु मंगावे । सामग्री होम अनावे ॥ करि अगिनि बाल अगियारी । घृतआदिक वस्तु जु सारी ॥३६॥
होमें करि वेद उचारे । इह मूलशांति निरधारे ॥ पाछे फिर एम कराई ॥ वह फूस जो देय जलाई ॥ ३७ ॥
बालक पग तेल जुमाहीं । परियणको देहि बुलाई ॥ सबहीनें बालक कै पाय । कहि ढोल धोह सिरनाय ॥ ३८ ॥
सब मुख वच एम कहावे । हमतें तू वडो कहावे ॥ ऐसी विधि शिवमत रीति । जैनी करिहै धरि प्रीति ॥३९॥
धरम न अर्थ भेद लहाहीं । किम कहिए तिनैं शठ पाहीं ॥ ते अघ उपजावे भारी । तिनके शुभ नहीं लगारी ॥४०॥
गुरुदेव शासतर प्रीति । धरिहै जे मन धरि प्रीति ॥ तें ऐसी कथा न मंडे । अघकर लखि तुरतहि छंडै ४१ ॥
सतवीस नक्षत्र जु सारे । बालक है सकल मझारे ॥ जाके शुभ पूरव सार । सो भुगतै विभव अपार ॥ ४२ ॥
जाके अघ बड़े प्राचीन । सोइ यहै दलिद्री हीन ॥ ए दान महा दुखदाई । दुरमति केरे अधिकाई ॥ ४२ ॥
मिथ्यात महाउपजावे । दर्शन सिव मूल नसावे ॥ निज हित वांछक जे मानी । ए खोटे दान वखानी ॥ ४३ ॥
जिन मारग भाष्यौ एह । विधि उदै आय फल देह ॥ तैसो भुगतै इह जीव । अधिको वोछो न गहीव ॥
जाके निश्चो मन माहीं । विकलप कवहूं न कराहीं ॥ मन मांहि विचारे एइ । अपनो लहनो विधि लेह ॥ ४४ ॥

दोहा ।

निमित तास चित पूजसी, अधिकाजे द्रव्य लाय । कोटि जनम करतो रहो, ज्यों को त्योंही थाय ॥ ४५ ॥
ग्रहकी शांति निमित जो, विकलप कुछे नांहि । भद्रबाहु कृत श्लोक में, कहो नेम करवांहि ॥ ४६ ॥

अडिल्ल ।

नमसकार कीरति न जगत गुरु पद लही । सद गुरु मुखतै कथन सुरायो जो होहि सही ॥
लोक सकल सुख निमित कह्यो शुभवेनकों । नवग्रह शांतिक वरणन सुनिये चनकों ॥ ४७ ॥

छन्दनाराच ॥

जिनंद देव पादसेव खेचरीय लायहै । निमित्त तासु पूजि जैन अष्ट द्रव्य लाय है ॥
सुनीर गंध तंदुलै प्रसून चारि नेवजं । सुदीप धूप औफलंअनर्घ सिद्धदं भजं ॥ ४८ ॥

छन्द चाल ॥

सूरज करूर जब थाय । पदमप्रभ पूजै पाय ॥ श्रीचंद्रप्रभु पूजा तैं । सिद्ध दोष न लागै तातैं ॥ ४९ ॥
जिनवासु पूज्य पद पूजत । भाजै मंगल दुख धूजत । बुध क्रूर पण जब थाय । वसु जिन पूजै मनलाय ॥ ५० ॥

अडिल्ल ॥

विमल अनन्त सुधर्म शान्ति जिन जानिए ॥ कुन्थ अरह नमि वर्धमान मन आनिए ॥
आठजिनेसुर चरण सेव मन लाय है । वृद्धतणो जो दोष तुरत नस जाय है ॥ ५१ ॥
रिषभ अजित संभव अभिनंदन वंदिए । सुमति सुपारस सीतल मन आनंदिए ॥
श्रीश्रेयांस जिनंद पाय पजत सही । विसपति दोषनसाग यही आगम कही ॥ ५२ ॥
सुव्रत नाथ पद पूजित शुनसाय है । मुनि सुव्रत कों नमत दोष सनि जाय है ॥
नेमनाथ पद वंदत राहु रहै नहीं । मल्लिरूपारस भजंत केत भजिहै सही ॥ ५३ ॥
जनम लगन के समै क्रूर ग्रह जो परै । अथवा गोचर मांहि अशुभ जे अनुसरै ॥
तिनि तिनि ग्रह के काजि पूजि जिन की कही । जाय करैं जिन नाम लिए दुष रहै नहीं ॥ ५४ ॥

नवग्रह सांतिहं काज जिनेश्वर सों मणी। घंटो होय सिर नाय करैं सो थुति घणी॥
वार एक सो आठ जाप तिनको जवै। ग्रह नक्षत्र की बात कर्म बहु विधि खवै॥ ५५॥
भद्रबाहु इम कही तासु ऊपरि मणी। जो पूरव विद्यानुवाद श्रुति ते भणी॥
इह विधि नवग्रह शांति वखाणो जैनमैं। करि विश्लोक अनसार किसनसिंघ पै नमैं॥ ५६॥
आन धरम के मांहि उपाय इम कहतहैं। विपरीत बुद्धिउपाय न मारग लहत हैं॥
चंडारनिकेदान दियांहै शुद्धता। कथे एम विपरीत ठाखि मति लुब्धता॥ ५७॥
चददाष दोय रवि दोय जिनागम मैं कहै। मेरु सुदरसन गिरिदसदा फिर लेतहै॥
शशिविमाणतलराहु एक योजन वहै। रवि कैं नीचैं केत,एम भमतो रहै। ५८॥
पख अंधियारे मांहि कला शशि की सही। एक दवावति जाय अमावस लों कही॥
शुकल पक्ष इक कला उघरती जाय है। पूरणवासी दिन शशि निरमल थाय है॥ ५९॥
नित्यहि ग्रहकों मिलन इहां होय न सवै। पून्यूं विन विपरीति राहु उलटै जवै॥
देवे शशि जव दान ग्रहण जव ठानहीं। जिन मत मैं सो दान कबहूं न वखानहीं॥ ६०॥
रवि शशि नारचों तणो ग्रहण चहुंजांनियो। ऐरावतअरु भरत मांहि परमाणियो॥
छटैं महीने अंतरपड़े आकाश में। फरि चाल कूं लहै दवावै तासमें॥ ६१॥
तिहंनिवानकी छाया अवर न मानिए। जिन मारग के सूत्रनि एम बखानिए॥
भरत माहिं इक ऐरावत में भी नहीं। इक ऐरावत माहि भरत तिहुंही नाहीं॥ ६२॥
भरत माहिं ऐरावतनहूं मैंनाकहीं। ऐरावत के क्यारि भरत पए नहीं॥
दोय दान दुहुं थान होग तो नहि बनैं। [illegible] ॥ ६३॥

उक्तञ्चगाथा त्रैलोक्यसारे नेम चंद सिद्धांत कृत ॥

राहुअरिहविमाणं किंमूणाकि पिजोयणअधोगंता। छमासे पव्वंत चन्दरवि छादयतिकंमेण ॥ ६४

छंद चाल

ससिराह केत रवि जाण। आच्छादतहै जुविमांण ॥ विपरीत चाल पट् मास। पावत है जब आकास ॥ ६५ ॥
धारयो सुर पदके धार। तिहके कछु नहीं व्यापार॥ देणो लहणो को करि है। फिर है जोजन अंतर है ॥ ६६
चहूं को मिलि वो नही कवही। निज थान कि साहिब सवही। औरनि को दीयोदान। लहैणो नहीं उतरे आन॥
शशिराह चाल इक वारी। शशि वढ़ै घटै निरधारी ॥ षटमास विना नहि दावे। रविको नहिं केत दवावे ॥६८॥

दोहा।

एह कथन सुनि भविक जन, करि चितमें निरधार। कथित आन मत दानजे, तजहु न लावो वार ॥ ६९ ॥
पाप वढावन दुखकरन, भव भटकावन हार। जास हृदय सत जैन दृढ़, त्यामै जानि असार ॥ ७० ॥

इतिनवग्रहशांति विधिः।

अथ निजतनसंबंधी कृयाकथन ॥ चौपाई ॥

निज तनसंबंधी जे कृया। करहु भव्य तामें दे हिया ॥ सैनथकी जब उठिये सवार। प्रथमहि पढ़ै मन्त्रनवकार ॥७१॥
प्रासुक जल भाजन करमाहीं। त्रस भूपित जो भूमि तजाहीं ॥ वृद्धि नीतिको जैहै जबै। अवर वसनसो पहिरैतवै ७२॥
नजरि निहारि निहार करन्त। जीव दया मनपाहि धरन्त ॥ बोत निहार पछय जल लेई। वामांकरतैं सोच करेई ७३॥
फिरि माटी वामांकर माहिं। वारतीनलै धोवै ताहि ॥ अरुतहतै आवै करकरी। वस्त्रादिक पाछे परहरी ॥ ७४ ॥
करधोवनको ईटा खोह। लोहि तथा पद मर्दित सोह ॥ वाम अरुभसमी करधार। हाथ दुहू णोहू तिहुंवार ॥ ७५ ॥
माटीले दुहु हाथ मिलाय। धोवे तीनवार मनलाय ॥ पश्चिमदिशि मुख करिके सोय। दांतनकरे विवेकी जोय ॥७६॥

स्नान करन जल थोड़ो नाख। कीजे इह जिन आगम साख॥ करुणाकर मन माहि विचार। कारज करिए करुणापार ७७॥
प्रथमहि मही देखिए नैन। जहं त्रसजीव न लहे अचैन॥ रहै नहीं करदी बहु बार। स्नान जहांकीजे बुधधार॥७८॥
पूरवदिसा सो म मुखकरै। उजरे वसन उतर दिस धरै॥ जीमनवार धोवती धार। अवर सकलही वसन उतार॥७९॥
सिर डाढ़ी सँवरावै जबै। स्नान करे किरिया जुत तबै॥ लोगाचार उठै किहिं तनै। तबही स्नान करतही बनै ८०॥
तिय सेवै पीछे इह जान। परम विवेकी स्नानहि ठान॥ सयन जुदो सज्यापर करै। इम नितही किरिया अनसरै॥८१॥
रात सुपनमें मदन दबाय। शुक्रखिरै को कारण पाय। कपड़े दूर डार निरधार॥ जल तैं स्नान करै तिहवार॥८२॥
निश सोवनको सदयायान। पलिंग करे दक्षिण सिर ठान॥ अरु पच्छिमदिसि इह सिरकरं। ऊठत दुहु दिस नजर न परे ८३॥
पूरव अरु उत्तर दुहु जाण। उत्तम ऊठए हरषहिठाण॥ इहविधि क्रिया अहो निस करे। सो किरिया विधिकोअनुसरे॥८४॥

इति तत्संबन्धी किरिया समाप्तम्।

अथ जाप पूजाकी विधि ॥ चौपाई ॥

जापकरन पूजाकी बार। जो भाषी किरिया निरधार॥ ताको वरणन भवि सुनि लेह। श्लोकनमें वरणी है जेह॥८५॥
पूरब दिशि मुखकरि बुधवान। जापकरे मनवच तन जान॥ जो पूरब कदाचि टरिजाय। उत्तरसनमुख करि चितलाय॥८६॥
दक्षिणदिस पच्छिम दुहु यथा। जापकरण बरजी सरवथा॥ तीन स्वास उस्वास मझार। जापकरे नवकरि विनिचार८७
प्रथम जाप अक्षर पैंतीस। दूजो सोलह वरण गरीस॥ तृतीय अंक छह अरहंत सिद्ध। असियाउसा तुरीय प्रसिद्ध॥८८॥
पंचमवरण चार अरहन्त। षष्ठी दुय जप सिद्ध महंत॥ वरण एकसोवो ओंकार। जाप भाग ए जपिए सार॥८९॥
कहो द्रव्यसग्रहमें एह। सात जापलखि तजि संदेह॥ और जाप गुरु मुख सुन भ्रात। तेउ जपिए निजहित भ्रात॥९०॥
मेरुविना मणिया सो आठ। जापतणा जिनमत रहै पाठ॥ स्फटिकमणि अरु मोती माल। सुवर्णरूप मूंगापनाल ९१॥
जीया पोता रेशम जान। कमलगटा अरु सूत बखान॥ ए नवभांति जापके भेद। भावसहित जप नज मन खेद॥९२॥

दोहा ।

दिशा विक्षेप तिनको कह्यो, जिन मन्दिर विन थान । चैत्यालय में जापकरि, सनमुख श्रीभगवान ॥ ९२ ॥

चौपाई ।

पूजा निमित्त स्नान आचरै । सो पूरवदिसिमुखको करै ॥ धौत वस्त्र पहिरे तन सजै । उत्तर दिसि मुखकरिहै जजै ॥९३॥

(उक्तंच श्लोक)—स्नानंपूर्वमुखीभूय प्रतीच्यां दंतधावनं । उदीच्यांश्वेतवस्त्राणि पूजापूर्वोत्तरामुखी ॥ ९४ ॥

चौपाई ।

पूरव उत्तरदिशि सुखकार । पूजक पूर्व करे मुख सार ॥ जिनप्रतिमा पूरब जो होय । पूजक उत्तरदिशिको जोय ॥९५॥

जो उत्तर प्रतिमा मुख ठान । तो पूरबमुख सेवक जान ॥ श्रीजिन चैत्यगेहमें एम । करे भविक पूजा धरि प्रेम ॥९६॥

जिनमन्दिर में प्रतिमा धाम । करे तासविधि सुनि अभिराम ॥ घरमें पोलि प्रवेश करन्त । वामभागदिशि रच्चै महन्त ॥९७॥

मन्दिर ऊपर लेखणकी मही । ऊचो हाथ छोड़िकर सही ॥ जिनप्रतिमा पधरावन गेह । परम विचित्र करे धरिनेह ॥९८॥

प्रतिमा मुख पूरवदिसि करे । अथवा उत्तरदिशि मुख धरे ॥ पूजक तिलककरे नव जान । सोसुन वुधजन कहूंवखान ॥९९॥

सीस शिखा ढग करिए एह । दूजो तिलक लिलाट करेय ॥ कंठ तीसरे चौथो हिए । कानपंचमोही जानिए ॥१००॥

छठो भुजा कुखिसातवां । अष्टहाथ नाभि मैं नवो ॥ एह तिलक नवठाम वनाय । अरुगहणा तुम विविध वनाय ॥१॥

मुकुट सीसपर धारे सोय । कंध जनेऊ तहिरे जोय ॥ भुज वाहु सु विराजत करे । कुंडल कानहकंकण धरे ॥ २ ॥

कटिसूत्र कटिमेखल धरे । क्षुद्र घंटिका शब्दहिकरे ॥ रतन जटित सोवन मय जान । दस अंगुलिन मुंद्रिकाठान ॥३॥

पांय सांकला घूघर धरे । मधुर सब्द बाजै मन हरे ॥ भूषण भूपित करनिसरीर । पूजा आरम्भी वरवीर ॥ ४ ॥

पद्धड़ी छन्द ।

पूर्वान्हिक पूजा जो करे । वसु द्रव्य मनोहर करि करे ॥ मध्यानक पूज समय सुएह । मनहरन कुसमवहु खेप देह ॥५॥

अपरान्ह भविजन करिह एवदीपहिं । चढ़ाय बहु धूपखेव ॥ इहविधि पूजाकरि तीनकाल । शुभकंठउचारे जयहमाल ६॥
पूर्वान्हिक रविऊगत कराय । मध्यान्हकवासर मध्यथाय ॥ दिन अस्तहोत पहिली प्रमाण । अपरान्हक पूजाकरयजाण ७॥
जिनठाम अंग धरि धूपदाह । खवै सुगंध शुभ अगरताह ॥ अरहंत दच्छिणकरदिसि जु एह । अतिही मनोज्ञ दीपक धरेह ८॥
जेध्यानधरे अति मनलगाय । जिनदच्छिणभुजदिसिमौनलाय ॥ प्रतिमा बंदन मनवचन काय । करिदच्छणभजदिससीसमाय
इहभांति करै जं ई प्रवीण । उपजै बहुपुण्यरु पाप छीण ॥ पूजामाहीं नहि जोग द्रव्य । तिन नाम वखाणो सुणो भव्य १०॥

द्रुतबिलंबि वृत ॥

प्रथमही पिरथी परजो धरयो । अरुकदा करतैखिसि के परयो ॥ जुगल पायन लागि गयो जदा । दरवसौंजिनपूज नहींकदा,
करन तें फिरियो सिर ऊपरै । वसणहीन मलीन मही धरै ॥ कटित लैं परसैं जय अंगही । दरवसौं जिनपूजन लों नहीं ॥१२॥
वहुजन के करते करसंधरयो । मनुज दुष्टन भीट करै धरयो ॥ त्रसनदिपंत दर्व सबै तजो । भगवंत ते जिन पूज सदासजो ।१३॥

दोहा ।

वसनपहर भोजन करै, सो जिन पूजा माहिं । तनु धारै अघ उपजे, यामैं संशय नाहिं ॥ १४ ॥

कुंडलिया ॥

कबही संधित वसन तैं, भगतिवंत नर जोय । मन वच तन निहचै इहै, पूजा करै न सोय ॥ पूजा करै न सोय, दुगध फटियो है जातैं । पहरो अवरनि तणो कटिहि बंधियो फुनि तातैं । कर छूद्रि लघु नीति भार सेइ तिय जबही ॥ करहिं नांहि भवि जैन वसन संधित तैं कबही ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

कांभनि जन पूजा इह रचे । प्रतिमापरसि पखालहि सबै ॥ मौन सहित मुख कपडो करै । विनय विवेक हरख चित धरै १६
पूजाकी विधि ऊपर कही । करिवे पुन्य ऊपजै सही ॥ नरकौं करनी पूजा तथा । आगम मैं भाषी सरवथा ॥ १७ ॥
जिन पूजा वनिता जो करै । सो पेमी विधि कों अनुसरै ॥ प्रतिमा भींटन नाहीं जोग । ऐसें कहैं सयाने लोग ॥१८॥

स्नान क्रिया करि कै थिर होय। धौत वसन पहिरै तन सोय। विना कंचकीसा नहिं रहै। पूजा करे जिनागम कहै १९॥
बडी साख मैंना सुन्दरी। कुष्ट व्याधि पतितन की हरी॥ गंधोदक सींचित सो देह। सुबरणवरण भयो गुणगेह ॥२०॥
अनंतमती हरविला जांणि। रेवतीय चेलना वखाण॥ मदन सुन्दरी आदिक घणी। तिनकीनी पूजा जिनतणी ॥ २१ ॥
लिंग नपूंसक धारी जेह। जिनवर पूजाकरि है तेह॥ प्रतिमा परसण को निरधार। ग्रंथन में सुन लेहु बिचार ॥२२॥
नर बनितारु नपूंसक तीन। पूजा करण कही विधि लीन॥ अब जिनको पूजन सरवदा। करन योग्य भाषी नहिं जदा २३
ओढरोकांणो भणि अंध। फूलौ धूंध जाति चपि वध॥ प्रतिमा अवै वसूजे नहीं। जाकों पूजा करन न कहीं ॥ २४ ॥
नसा कान कटी आंगुरी। हुई अगनि दाभै वाकुरी॥ षट अंगुलियाकर अरु पाय। पूजा करनी जोग न थाय ॥२५ ॥
घोडो दुहुं पायन पांगुलो। कुबजक गूंगावच तोतलो॥ जाके मैद गांठि तन घणी। ताकों पूजा करत न वणी ॥२६॥
काछ दाग फुनि कोढी होय। दाग सुपेद शरीर हजोय॥ मंगल फोड़ा पांव अदीठ। शील बोंदरी ब्योंची पीठ ॥२७॥
गोसो वधै आंत नींकलै। ताकों पूजा विधि नहिं पलै॥ होय भगंदर कानन सुने। सुन्यापिरदगहलो वच सुने ॥२८॥
खांसी ऊर्ध्व सास है जास। झरै नासिका श्लेपमतास॥ महा सुस्थचाल्यौ नहिं जाय। पूजा तिनही जोग नथाय ॥२९॥
दूतविसन जाकैं अधिकार। अरु आमिष लंपट चंडार॥ सुरा पांन तें कबहु न छटै। सो पापी पूजा नहिं घटै ॥३०॥
वेश्या रमि है लगि न लगाय। अवर अहेडी स्यनहि थाय॥ चोरी करै रमै पर नार। परकुगति की लीक विचार ॥३१॥

दोहा॥

जो जिन पूजक पुरुष हैं, ते दुरगति नहिं जाय। तिनकी मूरत सवनिकों, लागै अति सुख दाय ॥ ३२ ॥

छन्दचाल॥

पूजा तैं सुर है नायक। अपछर सेवै सुर पायक॥ अरुचक्रीपद कौं पावै। षट् खंडही आण फिरावै ॥ ३३ ॥
धरणेंद्र लहै पद नीकों। स्वामी दसभवन पती कों ॥ हरि प्रति हरि पदई थाय। बलिभद्र मदन मुसकाय ॥ ३४ ॥
पूजा फलकों नहिं पार। अनुक्रम तीर्थंकर सार॥ पदई पावै शिव जाई। किसन सिंघ नमैं सिरनाई ॥ ३५ ॥

छप्पय ॥

दोष अठारह रहित चउतीस अति सय करि मंडित । प्रातिहार्य जुत आठचतुष्टय चार अखंडित ॥
समवशरण विभवादि रूढ त्रिभुवन पति नायक । भविजन कमल प्रकाशक करन दिन कर सुखदायक ॥
देवाधि देव अरहंत मुझ भगत तणो भव भय हरो । जयवंत सदा तिहुं लोकमें सकल संघ मंगलकरो ॥ ३६ ॥
तीर्थंकर मुख थकी दिव्य ध्वनि तैं जो बानी । स्यादवाद मयखिरी सपतभंगी सुख दानी ॥
ताको लहैं परसाद गणशिवथानक मुनिवर । अजहुयांहि सहाय पाय तिरहै भव उरधर ॥
तसुरची देव गणधरनिलो द्वादशांग विधि श्रुत धरी । भारतीजगत जयवंत निति सकल संघ मंगलकरी ३७
अठाईस गुणमूल लाख चौरासी उत्तरधरे । करे तपघोर सुधआतमअनुभवपरं ॥
ग्रीषम पावस सीत सहै बाईस परीषह । भवि लावहि सिवपंथ ज्ञान दग चरनन गरिसह ।
निज तिरहआन तारक सदा । यह विरद तिनमें खरी । ऐसेमुनीस जयवन्तजग सकलसंघमंगलकरो । ३८॥

अथश्रीचैत्यालयजी में यह चौरासी कामकी जेतो आछादना लागै तिसका कथन प्रत्येक कहैं हैं ॥दोहा॥

श्रीजिनश्रुतगुरुको नमों, त्रिविध शुद्धता ठान । चौरासी आछादना, कहुं प्रत्येक वखान ॥ ३९ ॥
श्रीजिन चैत्यालय विषे, क्रयाहीण हैं जेह । किये पाप अति ऊपजै, ते सुणि भविजिन देह ॥ ४० ॥

छन्दचाल ।

मुखतें खखार निकारे । हास्यादि केलि निस्तारे ॥ फुनि विविध कला जु वणावे । पात्रादिक नृत्य करावे ॥४१॥
अरु कलहकरे रिसधारी । खैहे तंबोल सुपारी ॥ जल पीवे कुरला डारे । पंखातें पवन छिडारे ॥ ४२ ॥
गारी वचहीण उचारिहै । मल मूत्र गात्र नहिं सरिहै ॥ कर पद धोवे अरु न्हावे । सिर डाढी कच उतरावे ॥४३॥

कर पगके नखही लिवावे । कारीते रुधिर कढ़ावे ॥ औषध वणावावे खार्ही । नाखे पसेव उतराही ॥ ४४ ॥
तनु अंगकी तुचा उतारे । कर वमन कफादिक डारे ॥ दातिण फुनि सिलक कराहीं । डाखे दतन उपराहीं ॥४५॥
बांधे चौपद तनधार । फुनि करिहै जहां आहार ॥ आंखनके गीड़हि डारे । कर पग नख मैलि उतारे ॥ ४६ ॥
जहं कंठ कान सिर जानी । नासा को मैल डरानी ॥ जो वस्तु शरीरकी थाय । बांटै निज थानक जाय ॥ ४७॥
मित्रादिक समधी कोऊ । मिलिजाहि जिनालय दोऊ ॥ ठाढ़े मिल भेट विदेई । फुनि हरष चित्तधारि लेई ॥४८॥
परधान जुभूपति कर । वै गुरु धन वान घनेरे ॥ आए उठिकर सनमाने । इह दोष वडो इक जानै ॥ ४९ ॥
फुनि व्याह करनकी वात । मिलिकै जह जन वतलात ॥ जिन श्रुत गुरु चरन चढ़ावै । ताको भंडार रखावै ॥ ५० ॥
निज घरको माल रखीजै । पदपरि पद धरि बैठीजै ॥ को भय ते जाय छिपीजै । काहू दुखदूर न कीजै ॥ ५१ ॥

चौपाई ।

कपड़ा धोवै धूपति देई । गहणा राव घड़ावै लेई ॥ ले असलाख जंभाई छींक । केस समारि करे तिनठीक ॥५२॥
धोवे दाल वडी देजहां । पापड सोज बनावे तहां ॥ मैदा आनन छपर बंधान । करन कढ़ाई तें पकवान ॥ ५३ ॥
राज घसन त्रयतस करतणी । चारयो विकथाकों भापणी ॥ करण कसीधादिक सीवणो । करनासिकाकों बीधणो ॥५४॥
पंछी डारि पिञ्जरो धरै । अगनि जारि तन तापन करै ॥ सुवरण रज तप हरही जोई । छत्र चमर सिर धारै कोई ॥५५ ॥
वन्दन आवे है असवार । फुनि तन को धारे हथियार ॥ तेल अरगजादिक मिलवाय । वैठक करै पसारिपाय ॥५६॥
बांधे पाघ पेच फुनि देई । आवे तुरगादिक ढांकेय ॥ जूवा खेलै होडवदेय । निद्रा आवै शयन करेय ॥ ५७ ॥
मैथुन करे तथा तिस वात । चाले भोगशरीर सुजात ॥ वात करण व्यापारह तणी । चोपाई परि बैठन गिणी ॥५८॥
पान द्रव्य ले जैहै जोय । जल तें क्रीड़ा करिहै कोई ॥ सबद जुहार परस पर करै । गींडू मनुख खेली चित धरै ॥५९॥
जिन मन्दिर परबेस जो करै । सबद निसहीनबिऊचरे ॥ फुनि करजोड़े विनु जो जाय । एदोन्यों आछादन थाय ॥६०॥
एचौरासीं अघकर क्रिया । करनी उचित नहीं नर त्रिया ॥ जिन मन्दिर श्रुत गुरु लखि आनि । रहनो अधिक विनयउर आनि

दोहा ।

किसन सिंघ विनती करे, सुनों भविक चित आन । क्रियाहीण जिमगृह तजो, सजो उचित सुख दान ॥ ६२ ॥

इति पूजा विधि असातन वर्णन संपूर्णम् ॥

अथ त्रेपन क्रिया तथा अवर क्रिया को वर्णन कीयो तिनको कथन ॥ दोहा ॥

त्रेपन क्रिया को कथन, लिख्यो संस्कृत जोई ॥ गौतम मुख ससि तैं खिरयो, शुद्ध रूप है सोई ॥ ६३ ॥

ताऊपर भाषा रची, विविध छन्द मय ठान । श्रावक को करनो जिसो, किरिया कही बखान ॥ ६४ ॥

दोहा ।

व्रती चार द्वादश करन, लगै तिनहि चिरधार । सूत्रन मैं तैं पाइये, करी भाषा विस्तार ॥ ६५ ॥

कछुक त्रिवरणा चारतैं, जो धरिवे कों जोग । सुणी तेम भाषी तहां, वहिये तिसो नियोग ॥ ६६ ॥

जग मांही मिथ्यातकी, भई थापना जोर ॥ क्रियाहीण तामैं चलन, दायक नरक अघोर ॥ ६७ ॥

ताहि निषेधन को कथन, सुन्यो जिनागम जेह । जिसो बुद्ध अवकास मुज, भाषा रची मैं एह ॥ ६८

मूलाचार थकी लिखी, सूतक विधि विस्तार । श्लोक संस्कृत ऊपरे भाषाकीनी सार ॥ ६९ ॥

विद्यानुवाद पूरवथकी, भद्रबाहु मुनिराय । कथन कियो ग्रहशांतिको, तिह परिभाष बनाय ॥ ७० ॥

निज तन नितप्रतिकी क्रया, अरु पूजा परबंध । श्लोकन पर भाषा धरी, जहं जैसो सम्बध ॥ ७१ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

कथा में कह्यौ पंच इन्द्री निरोधं । कथा में कह्यो पंच पापं निरोधं ॥ कथा मैं कह्यौं त्यागिए लोभ क्रोधं । कथा मैं कह्यौं मान मायाहि सोधं ॥ ७१ ॥ कथामेइ बाईस भाषे अभेदं । कथा मैं कह्यो गोर संभद भष्य ॥ कथा मेंधि कांजी निरधी प्रपञ्च । कथा नैं मुरब्बादि मर्याद तत्त ॥ ७३ ॥ कथामेधिमूलं गुण अष्टभेदं । कथामेधि रत्नत्रयं कर्म छेदं ॥

कथामेधि शिक्षा व्रत भेद चारं ॥ कथामेधि तीनों गुणं व्रत धारं ॥ ७४ ॥ कथामेधि भाषा प्रतिमा सुग्यारा । कथा मेधि भ्रषितपो भेद बारा । कथामेधिभाषे बहु दान सारा ॥ कथामेद्धि भाष निशीहार टारं ॥ ७५ ॥ कथा मध्य संल्लेषणाभेद भाष्या । कथामद्धि शुद्धं समभाव आष्या ॥ कथा मध्य प्राणीक्रियाको विशेषं । कथा मध्य त्यागी कह्यो राग द्वेषं ॥ ७६ ॥ कथामैं कह्यो नेम सत्रा प्रमाणं । कथामैं क्रिया जोपिता धर्म जाण । कथा मैं कही मौन सन्तान कायं कथा मेधि भाषे जिके अन्तरायं ॥ ७७ ॥ कथामद्धि भाषी महाकोशांति । कथा मैं कह्यों सूतक दोय भांति ॥ कथा मध्य देही कृयाको प्रमाणं । कथामधि पूजा विधानं बखाणं ७८

दोहा।

कलीकाल कारण लही, जगत्मांहिं अधिकार । प्रगटी कथा मिथ्यातकी, हीनाचार अपार ॥ ७९ ॥

तिनही निषधनको कथन, सुन्यो जिनागम मांहि । ता अनुसार कथा मही, कह्यो यथारथ आहि ॥ ८० ॥

अथ मन्नोक्तव्रत निषेध कथन लिख्यते।

दोहा।

श्री जिन आगम में कहे, वरत एक सौ आठ । श्रावक कों करनो सही, इह सब जागा पाठ ॥ ८१ ॥

इन सिवाय विपरीत अति, चलन थापियो मूढ़ । सुगम जानि सो चल पड्यो, सुनहु विशेष अगूढ़ ॥ ८२ ॥

छन्द चाल।

वनिता लखिकै लघु वेश । तिनकों इमि दे उपदेश ॥ दिन में जीमैं दोय बार । जल की सख्या नहिं धार ॥ ८३ ॥
दोकन्त वरत धरि नाम । आगमन बखान्यो ताम । तबलों एकान्त कराई । श्रीखण्ड सुनाम धराई ॥ ८४ ॥
तंदुल केसर दधि मांडी । कर गाली बरत गरांही ॥ टीका व्रत नाम सुलेई । बांनता सिरटी की देई ॥ ८५ ॥
अरु तिलक व्रत कों धारे । बहु तिय सिर तिलक निहारे ॥ करि देय टको इकरोप ।तेहै तिन है अघ कोप ॥ ८६ ॥

कोथलीय व्रत धर नाम। वांटै तिन तासांह ठाम ॥ मधि सोंठ मिरच धरि रोक। प्रभुता है भाषे लोक ॥ ८७ ॥
फुनि रोटी व्रतही ठानै। वांटै घर घर मन आनै ॥ अर वरत पोपरा भाषै। एकन्त तीस अभिलाषे ॥ ८८ ॥
नारेल वरतको लेह। वांटै घर घर धरि नेह ॥ खीर जु व्रत नाम धरावै। निज घर जो दूध मंगावै ॥ ८९ ॥
चावल तामाहीं डारी। निपजावै खीर जनारी ॥ भरि ताहि कचोला माहीं। बांटै बहु धरि हरषाहीं ॥ ९० ॥
कांचली व्रततिय धरि है। कांचलो दसवीस जु करिहै ॥ निज सगपण कीजे सारी। तिनको दे हेत विचारी ॥९१॥
तिन पहिरें जु उपजाही। त्रस घात पाप अधिकाहीं ॥ जिनको व्रत नाम धरावै। सो कैसे शुभफल पावे ॥ ९२ ॥
व्रतकरि घृत नाम वखानो। दतदे घर घर मनआनो ॥ वांटत माखो तहँ परिहै। उपजाय पाप दुख भरिहै ॥ ९३ ॥
चूड़ाव्रत नाम धराई। करिकै मनतें हरपाई ॥ वांटत मन धरि अति राग। इसते मुझ वढ़ै सुहाग ॥ ९४ ॥
त्रिन न्योतो परघर जाई। निज करते असन गहाई ॥ भोजन कर निज घर आवै। व्रतनाम धिगानो पावै ॥९५॥
भरि खांड रकेवी तीस। वांटै ते घर दसवीस ॥ व्रत नाम रकेवी तास। करिहै मूरखता जास ॥ ९६ ॥
वनिता चैत्यालय जाही। पाछ विधि एम कराही ॥ धरि असन थाल इकमाहीं। इकजल दुहु ढाक धराहीं ॥ ९७ ॥
तिय चैत्यालय ते आवै। इक थाली आय उठावै ॥ जो असन उघारि तीय। भोजन करि जल बहु पीय ॥ ९८ ॥
जल थाल उघाड़े आई। जल पीव वैठि रहाही ॥ इम वरत करम पत वान्यो। सूत्रनि में नहीं वखान्यो ॥ ९९ ॥
इत्यादि कहांलों ठीक। आगमतें अधिक अलीक ॥ करिकै शुभ फलको चाहे। हियरें तिय अधिक उमाहे ॥१५००॥
जो कलपित वरत जुमान। भाषै तंतें अयवान ॥ जो सकल वस्तु ले आवै। निज पूजा माहिं चढ़ावै ॥ १ ॥
निज सगपन गेह मिलाय। वांटै घर घर फिरि आय ॥ भादों के मास जुमाहीं। तप करन सकुनि हैं नाहीं ॥२॥
इम कहिए करन कराही। जिन उक्त व्रत सो नाही ॥ वांटै जो वस्तु मंगाई। सोई व्रत नाम धराई ॥ ३ ॥
जिनमत व्रत विनु मरयाद। करिये मन उक्त प्रमाद ॥ जिन सूत्रनिमें जैनी है। दुखदायन व्रत सही है ॥ ४ ॥

जिन आज्ञाको जे गोपै । ते निज कृत सब शुभ लोपै ॥ यातैं सुनिये नर नारी । मनमें तिसते अवधारी ॥५॥
जिन भाषित जे व्रत कीजे। मन उक्तन कबहूं लीजे ॥ आज्ञा विधिजुत व्रतधार । सुरपद पावे निरधार ॥६।

सवैया ३१ ॥

त्रेपन क्रिया ने आदि देके नाना भेद भांति क्रिया को कथन साखि ग्रन्थनकी आनिकै ।
अवर मिथ्यात कलिकाल भई थापना जे तिनको निपेध कीयो आगमतैं जानिकै ॥
व्रत मन उकति सुगम जानि चालि परै कहै नहिं नते जिते दुख व्रथा मानिकै ॥
अवै नर नारी मनलाय जो वरत धरे याह समय शील तप व्रतजीय मानिकै ॥ ७ ॥

छप्पय ।

बहुविधि क्रिया प्रसंग कही इह कथा मझारी । अब उछाह मनमाहिं आनि इह बात विचारी ॥
क्रिया सफल जब होइ वरतविधि यामें आए । मन्दिर शोभा जेम शिखर पर कलश चढ़ाए ॥
इहजान वासव्रत विधिनकी सुनी जेम आगम भनी । दरशन विशुद्धजुत धरहु भवि इहविनती किसनातनी ८॥

छन्दचाल ।

समकित जुत व्रत सुखदाई । अनुक्रम ते शिव पहुंचाई ॥ कछु नाम वरतके कहिए । भविजन जे जे व्रत गहिए ।९॥

अथ अष्टान्हिक व्रत कथन ॥ चौपाई ॥

अष्टान्हिक महाव्रत सार । रहै अनादि जाका नहिं पार ॥ जो उत्कृष्ट भए नर तेह । तिन पूरवव्रत कीन्हो एह १०।
व्रत करन को है विधि जिसी । जिनआगम में भाषो तिसो ॥ तीनवार इक वरस मंझार। आसाढ़ कातिक फागुणधार।११
जो उतकिष्ठ वरत कों करै। आठ आठ उपवास जुधरै ॥ दूजो भेद कोमलो जांन जिन मारग में करो वखान ॥१२।
आठैं दिन कीज उपवास । नौमी एक भुक्त परकास ॥ दसमी दिन कांजी करिसार । पाणी भात एकही वार ॥१३॥

ग्यारस अल्प असन कीजिए। दुयवटतजि इकवटलीजिए॥ मुख सो ध्योवारस विधि एह। त्रिविधिपात्रकोंभोजनदेय॥१४॥
अंतराय तिनकों नहिं थाय। तो वह व्रत धरि असन लहाय॥ अंतराय तिनिकों जो परे। तो उसदिन उपवासहिकरे॥१५॥
तेरसि दिन आंबिल कीजिए। ताकी विधि भवि सुन लीजिए॥ एकअन्न षटरस विनु जांनि। जलमें मूंकि लेइ इक ठांनि १६॥
चउदस चित्त वेलडी थाय। भात नीर जुत मिरच लहाय॥ पूरणवासी को उपवास। किएहोय चिरकोअघनास॥१७॥
इह कोमली की विधि कही। जिन आगममें जैसी लही॥ आदि अंत करिए एकंत। दसदिन धरिये शील महंत॥१८॥
जाके जिम चउदस उपवास। चौदस पंदरस वलो तास॥ तेरस आंबिल के दिन लेह। रहित विवेक आंवली तेह १९॥
सदासरद जाकी नहिं जाय। उपजै जीव न संसै थाय॥ चउदस दिवस वेलडी करे। तादिन इम अनीति विसतरे॥२०॥
खांहि खलरा अरकाचरी। तथा तोरई निज मतहरी॥ तिनमें उपजै जीव अपार। सो व्रत दिन खैवो नहि सार २१॥

दोहा।

कांजी के दिन नीरमें, नाखि कसैलो लेह। तंदुल जल विनु अवर कछु, द्रव्य न भाषो जेह॥२२

चौपाई।

तीजी विधि जु अठाई जान। आठें तें चउदलहि वखान॥ बारस असन पछैतिहुंवास। इहै भेद लखि पुन्य निवास॥२३॥
दशमी तेरस जीमण होइ। बेला तीन करहु भविलोय॥ चोथो भेद यहै जानिये। शील व्रत्त ताको ठांनिये॥२४॥
आठैं दशमी बारस तीन। प्रोषध धरियै भाव प्रवीन॥ चउदस पंदरस बेलो करे। पंचम विधि बुधजन उच्चरे॥२५॥
आठैं ग्यारस चउदस जान। तीन दिवस उपवास वखान॥ अथवा दोय करे नर कोय। एकासन पणछइदिनजोय॥२६॥
यह व्रत संवर धरि मन लाय। सबै हरी तजिये दुखदाय॥ दसदिन शील वरत पालिये। संवरहू इह विधि धारिये॥२७॥
चउदासण विधि जु तकरे। पांच पाप अरु धरि परिहरे॥ धरि आरम्भ तजै अघदाय। दिनस आठलों शुभ उपजाय॥२८॥
अन मरयादा सुनि भवि जीव। धरि विशुद्धता सों लखि लीव॥ सत्रह वरप साखि इक जांन। करियेवाननसाखम्वान॥२९॥

अनवरआठ वरष जो जानं। बीस चारतसु साख बखान ॥ पंच वरष करि पंद्रा साख। अदिमन वचतनशुभअभिलाख
तीन वरषनो साख प्रमाण। एक वरष तिहुं साख मुजाण ॥ जैसी सकति दई अवकास। सो विधि आदर करिभवितास ॥
सकति प्रमाण उद्यापन करे। संवर तैं कवहूं नहिं टरे॥ मैना सुन्दरि अरु श्रीपाल। कियौ वरत फल लह्योरसाल ॥३२॥
कोडअठारह रहत जास। सबै गए सुवरण परकास॥ औरजहूंते सातसे धीर। तिनके निर्मल भए शरीर॥ ३३ ॥
चक्रीभयो नाम हरषेण। व्रत त्रिशुद्ध आराध्यो तेण ॥ तिन फल पायो सुखदातार। करम नासि पहुंचे भवपार ॥ ३४ ॥
अंतराय पारो भविसार। मौन सहित करिए आहार॥ व्रतमें हरी जिके नर खाय। संवर तास अकारथ जाय ॥ ३५ ॥
तातें व्रत धारी नर नार। मन वच क्रम हियरे अवधार॥ विधि माफिकते भवि जन करो। सुरनर सुखलहिशिव तियवरो ॥
सकल वरष के दिन मैं जान। परव अठाई भूपित मान ॥ खग भूमीस मिले नरेस। तिनकरि पूज जेमचक्रेस ॥ ३७ ॥
चक्रीकी जो सेवा करे। सो मनवंछित सुख अनुसरे ॥ आज्ञाभंग किए दुख लहै। ऐसे लोक सयाणे कहै ॥ ३८ ॥
तिनजो इम दिन संवर धरे। तास पुन्य वरनन को करे ॥ जो इन दिन में अघ उपजाय। संख्यातीत तास दुखथाय ॥३९॥

दोहा।

इहैअठाही व्रत धरो, प्रगटवपायरौ मर्म। सुरगादिक की वारता, लहै सास्वतो सर्म ॥ ४० ॥

अथ सोलह कारण दश लक्षण रत्नत्रय व्रत विधि कथन ॥

चौपाई।

सोलह कारण विधि सुनि लेह। जिन आगम में भाषी जेह ॥ भादों माघ चैत तिहुं मास। मध्य करे चित धारि हुलास ४१
वास इकंतर विधि जुत धरे। बीच दोय जीमण नहिं करे ॥ सोलह वरस करे भवि लोय। उद्यापनकरि छांडै सोय ४२
सकति नहीं उद्यापन तणी। करे दुगणाव्रत श्रीजिन भणी ॥ दश लक्षण याही परकार। उत्कृष्टी दशवासहधार ॥४३॥
दूजीविधि अहवासह तणी। करे इकन्तर भाख्यो गणी ॥ मर्यादा दशवरषहि जान। वरष मद्धि तिहुंवारहि ठान॥ ४४ ॥

अवर सकल विधि करिहै जिती। सम्वर माँहि जानिये तिती॥ रत्नत्रयकी विधि ए सही। वरषावधि तिहुवारह कही४५
भादौं माघ चैत्र पखि सेत। वारसि करि एकन्त सुहेत। पोसह सकति प्रमाण जु धरै। अति उच्छाह तैंतलो करै॥४६॥
पडिवा दिन करिहै एकन्त। पंचदिवस धरि सील महंत॥ वरस तीन मरयादा गहै। उद्यापन करि फुनि निरवहै॥४७॥
सकतिहीन जो नरतिय होय। सम्वर दिवस न छांडै सोय॥ जाको फल पायो सो भणो। नृप वैश्रवण विदेहा तणो४८
मल्लिनाथ तीर्थंकर होय। ताके पद पूजत तिहुंलोय। वालब्रह्मचारी तप कियो। केवलपाय मुकति पद लियो॥४९॥
अजहूं जे या व्रत को धरे। दरसन त्रिविधि शुद्धता करै। ताको फल शिवहै तहकीक। श्रीजिन आगम भाष्यो ठीक५०

अथ लब्धि विधान व्रत चौपाई॥

भादौं माघ चैत्र त्रिय जान। वदि पंदरसि एकन्तहि ठान॥ पडिवा दोयज तीज प्रवान। थापै तेला करि विधि मान॥५१॥
सकति प्रमाण जु पोसह धरै। चौथ दिवस एकासणकरै॥ पांचौ दिवस सीलका पाल। तीन वरस व्रत करहि सम्हाल ५२
पुत्री तीन कुटम्बी तणी। जिनव्रतलियो एम मुनि भणी॥ विधिवत करि उद्यापन कियो। तियपद छेदि देवपद लियो॥५३॥
त्रय द्विजसुत है पंडित नाम। गौतम भर्गरु भार्गरु नाम॥ महावीर के गणधर भए। तिनके नाम इन्द्र ए दिए॥५४॥
इंद्रभूति गौतमको नाम। अग्निभूत दूजो अभिराम। वायुभूत तीजे को सही। वरत तणा तीनों फल लही॥५५॥
इंद्रभूत तद्भव शिव गयो। दुहूं तिहूं उत्तम पदको लयो॥ यातें ते नवि परम सुजान। करो व्रत पावो सुखथान॥५६॥
दूजी विधि आगम इम कहै। पडिवा तीजहि प्रोषध गहै॥ दोयजदिवस करे एकन्त। इस मरयाद वरषछह भन्त॥
परिवा तीज एकान्त करेय। दोयज को उपवास धरेय॥ मरयादा भाषी नववर्ष। करिये भवि मनमें धार हर्ष॥५८॥
पञ्च दिवस लों पालै शील। सुरगादिक सुख पावै लील॥ फुनि उत्तम नर पदवी लहै। दीक्षाधर शिवतिय कर गहै॥५९॥

अथ अखैनिधि व्रत चौपाई॥

व्रत अखैनिधि को उपवास। श्रावण सुदि दशमी करितास॥ भादों वदि जब दसमी होय। तिनहूंके प्रोषध अवलोय॥६०॥
अवर सकल एकंत जु धरे। सो दशवर्षहि पूरो करै॥ उद्यापन करि छाड़ै ताहि। नांतर दुगणो करिहै जाहि॥६१॥

अथ मेघमाला वरत चौपाई ॥

वरत मेघमाला तसु नाम। भादव मास करै सुखधाम ॥ प्रोषध परिवा तीन बखान। आठैं दुहुं चौदसि दुहु जान ॥६२॥
सातवास चौईस एकंत। त्रिविधि शील जुत कारए संत ॥ वरष पांच लों तसु मरयाद। सुर सुख पावे जुत अहलाद ॥६३॥

अथ जेठ जिनवर बरत चौपाई।

वरत जेष्ठ जिनवर भवि लोइ। जेष्ठमास में करियें सोय ॥ किशन पक्ष पड़वा उपवास। एकासण चौदा फनितास। ६४।
प्रोपध शुकल प्रतिपदा करै। फुनि एकन्त चतुर्दश धरै ॥ ज्येष्ठमास के दिवस जु तीस। तास सहित व्रत कर गरीस ॥६५॥
वृषभ नाथ जिन पूजा रचै। गीत नृत्य वाजित्र सुसवै ॥ अति उछाह धारहीये मझार। मरयादा लखि कथा विचार ॥६६॥

अथ षट्रसीव्रत अडिल्ल ॥

दूध दही घृत तेल लूण मीठो सही। तजै पख दोय दोय सकल संख्या कही ॥
करे असन इक वार व्रती इम व्रत सजै ॥ पखवारह मरयाद षट्रसी व्रत भजै ॥६७

अथ पाख्या व्रत।

लूण दीत ससिहरी मंगल मीठो हरै ॥ घिरत बुद्ध गुरु दही दूध भृगु परिहरै ॥
तेल तै ज सनिहै वरत पाख्या गहै ॥ मरयादा जिम नेम धरे जिम निरवहै ॥ ६८ ॥

अथ ज्ञान पचीसी उपवास लिख्यते ॥

प्रोपध चौदह चौदसि के विधि जुत करे। तैसें ग्यारा ग्यारसि के प्रोपध धरे ॥
उव उपवास पचीस शील व्रत जुत धरे ॥ ज्ञान पचीसी वरत जिनागम इम करे ॥ ६९ ॥

अथ सुखकरण व्रत।

एक वास एकंत एक अनुक्रम करें। मास चार पख एक इकंतर इम धरें
देव शास्त्र गुरु पूज सजैं व्रत धरि सदा। नाम तास सुख करण हरण दुख जिनवदा ॥ ७० ॥

अथ समोशरण व्रत ॥ दोहा ॥

श्वेतकिशनचौदसि तणी, प्रोपध वीसरु चार । शील सहित भविजन करै, समोशरण व्रत धार ॥ ७१ ॥

अथ आकास पंचमी व्रत ॥ चौपाई ॥

भादव सुदि पंचमि उपवास । करे व्रत्त पंचमि आकाश ॥ वरप पंच मरयादा जास । शील सहित प्रोपध धरि तास

अथ अषै दशमी व्रत ॥

श्रावण सुदि दशमी कों सही । अखैदशम व्रत कों जन गही ॥ प्रोपध करै शील जुत सार । तसु मरयाद वरप दशधार ॥

अथ चंदन षष्ठी व्रत

भादव वदि छठि दिन उपवास । चंदनषष्ठीव्रतधरतास ॥ मन वच काय शील व्रतपाल । तसु प मास वरप छहधार ७४॥

अथ निर्दोष सप्तमी व्रत ॥

भादों सुदि सातैं निर्दोप । वरत करे प्रोपध शुभकोप ॥ संख्या सात वरप लौं जाहि । उद्यापन करि तजिए ताहि ॥ ७५ ॥

अथ सुगंध दशमी व्रत ॥

व्रत सुगंध दशमी को जांन । भादों सुदि दशमी दिन ठांन । प्रोपध करै वरप दस सही । शील सहित मर्यादा गही ॥७६॥
अष्ट द्रव्य सों पूजा करे । धूप विशेप खेवै अघ हरे ॥ धीवर सुता हुंती दुरगंध । व्रतफल तस तन भयो सुगंध ॥७७॥

श्रवणद्वादसीव्रत ॥

भादों सुदी द्वादशि व्रत नाम । श्रवण द्वादशी जो अभिराम ॥ बारहवरप लगे जो करै । शील सहित प्रोपध अनुसरै॥७८

अथ अनन्त चतुर्दशी व्रत ॥

भादौं सुदि चौदस दिन जानि । व्रत अनंत चौदसि को ठानि । तीर्थंकर चौदहौं अनंत । रचै पूज सों जीव महंत ॥७९॥
प्रोपध करे शीलजुत सार । चौदह वरपलग निरधार ॥ उद्यापन विधि करि वह तजै । सो जन स्वर्गतणा सुख भजै॥८०॥

अथ नवकार पैंतिसव्रत चौपाई ॥

अपराजित मंत्र नवकार । अक्षर तसु पैंतीस विचार ॥ करि उपवास वरण परमानि । सातैं सातकरी बुधमानि ॥ ८१ ॥
फुनि चौदा चौदसि गनि सांच । पांचै तिथिके प्रोषध पांच ॥ नवमी नव करिये भवि सात । सवप्रोषध पैंतीस गणांत ॥८२॥
पैंतोसी नवकार जु एह । जाप्यमन्त्र नवकार जपेह ॥ मनवच तन नर नारी करै ॥ सुर नर सुख लहि शिवतिय वरे ८३

अथ त्रेपन क्रियाव्रत ॥

त्रेपन किरियाकी विधि जिसी । सुणिए बुध भाषी जिन तिसी ॥ आठैं आठ मूल गुण तणी । पांचै पांच अणुव्रतभणी ८४
तीनतीज गुण व्रतकी धार । शिक्षाव्रतकी चौथ जु सार ॥ तप बारहकी बारसि जानि । तिसका प्रोषध बारह ठान ॥८५
सामि भावकी पड़िवा एक । ग्यारसि प्रतिमा की दश एक ॥ चौथ चारचहुं दानहि तणी । पड़िवा एक जलगालन भणी ८६॥
अणथमीय पड़िवा अघरोध । तीनहुं तीज चरण दृग बोध ॥ एत्रपन प्रोषध जे करै । शील सहित तपको अनुसरै ८७॥
सो नर तिय सुर नृप सुख पाय । अनुक्रमित शिवथान लहाय । उद्यापनविधि करिए सार । सकति जेम हीनन विस्तार ८८

अथ जिनेंद्र गुण संपत्ति व्रत ॥ छंदचाल ॥

जिन गुण संपत्ति व्रत धार । सुणिएतिनकों अवधार ॥ दसअतिशै जिन जन मतही । तीये उपजै लखि सतिही ॥ ८९ ॥
उपज्यौ जब केवल ज्ञान । दस अति सै प्रगटेजान ॥ इम अतिसय बीस जु करी । करि बीसदसै सुखवरी ॥ ९० ॥
देवाकृत अति सय जाणो । चौदस चौदस तिह ठांणो । वसु प्राति हार्य जिन देव । वसु आठैं करिएएव ॥ ९१ ॥
भावन सोलह कारणकी । पड़िमा खोड़श करि नीकी ॥ पांचो कल्याणक जाकी । पांचौं पांचे करताकी ॥
प्रोषध ए त्रेसठ जाणो । व्रतसील भविकजन ठांणा ॥ उत्तम सुरनर सुख पावै अनुक्रमिते शिवपद पावै ॥ ९२ ॥

अथ पंचमी व्रत ॥ चौपाई ॥

फागुण आसाढ कातिग एह । सितपंचम तैं व्रत का लेह ॥ पैंसठ प्रोषध करिएतास । वरष पांच पांच परिमास ॥ ९३ ॥

स्वेत पंचमी को व्रत धार। कमलश्री पायो फलसार ॥ भवसदंत तब मिलियोआय। तिनहूं व्रत कीनो मनलाय ॥९४॥
तास चरित माहे विसतार। वरनन कीयो सब निरधार॥ अजहुं नर तिय करिहै सोय। त्रिविधि शुधि तैसों फलहोय ॥९५॥

अथ शील कल्याणक व्रत ॥ दोहा ॥

शील कल्याणक व्रत तणो, भेदसुनो जे संत। मन वच काय त्रिशुधि करि, धारौ भविहरषंत ॥ ९६ ॥

छंदचाल ॥

तिरयंचणि सुर तियनारि। चौथी विनु चेतन सारि ॥ पञ्चइन्द्रिनिते चहुंगुणिए। तिनिसंख्याबीसज गुणिये ॥ ९७ ॥
मन वच तनतें तेवीस। गुनतै व्है तीसरुतीस ॥ कृत कारित अनुमोदनते। गुणिए फुनि साठहि गनते ॥ ९८ ॥
एकसो असी हुई जोई। प्रोषध करु भवि धरि सोई ॥ इकवरष मांहि निरधार। करिएपूरण सब व्रत सार ॥ ९९ ॥
इकदिन उपवास जु कीजै। दूजीदिन असन जु लीजै ॥ तीजै दिन फिर उपवास। इमकरहुइकंतर तास ॥१६०० ॥
एकसो असी एकंत। इतनेही वास करंत ॥ दिनसाढे तीन सैं धीर। पालै निति शील गहीर ॥ १ ॥
इह शील कल्याणक नाम। व्रतहै बहु विधि सुखधाम ॥ हैचक्री काम कुमार। हरिप्रतिहरि बल अवतार ॥ २ ॥
तीर्थंकर पदवीपावैं। समकित जुत व्रत जो ध्यावै ॥ ऐसें लखिजे भविजाण। करिएव्रतशील कल्याण ॥ ३ ॥

अथ शीलव्रत ॥ छंदचाल ॥

अबसुनहुशील व्रत सार। जैसो आगम निरधार ॥ वैशाख सुकल छठि लीजे। प्रोषध उपवास करीजे ॥ ४ ॥
अभिनंदन जिनवर मोषं। कल्याणक दिन शिव पोषं ॥ शुभ शीलवरत तसु नाम। करिपंच वरष सुखधाम ॥ ५ ॥

अथनक्षत्रमाला व्रत ॥ गीताछंद ॥

अश्विनी नक्षत्र की सुवासरच्यार अधिक पचासही। तिहि मध्य एकासन सताईस वीस सात उपवासही ॥
सुनशील मन वच तन त्रिशुद्धि करि विवेकी चावस्यों। मालानक्षत्रसुनाम व्रततैं छूटिये विधि दावस्यों ॥ ६ ॥

अथ सर्वार्थ सिद्ध व्रत ॥

कातिग सुकलअष्टम दिवस तैं अष्टवास जु कीजिए। तसुआदि अंतइकंत दस दिन सील सहितगनोजिए॥
जिनराज श्रुत गुरु पूज उत्सव सहित नृत्यादिक करै। सर्वार्थ सिद्ध सुनाम व्रतइह मोक्ष सुखकों अनुसरै॥ ७॥

अथतीनचोविसी व्रत॥ दोहा॥

व्रतचोवीसीतीनको, सुकल भाद्रपदतीज। प्रोपधकीजै शीलजुत, उरसुख शिवको बीज॥ ८॥

अथ श्रुतस्कन्धव्रत दोहा॥

श्रुतस्कन्ध व्रत तीन विधि, उत्तम मध्य कनिष्ट। पोड़स प्रोपध तीस दुय, वासुर माहिं गरिष्ट॥ ९॥
दस प्रोपध दिन बीस में, मध्य सुविधि जखि लेह। वसु प्रोपध इक वासमें, है कनिष्ट व्रत एह॥१०॥
कथन विशेष कथा मही, द्वादशांग के भेद। त्रिविध जिनेश्वर भापियो, करके कर्म उछेद॥ ११॥

अथ जिनमुखावलोकन व्रत॥

जिनमुखा वलोकन वरत, करिये भादों मास। जिनमुख देखे प्रात उठि, अवर न पेखे तास॥ १२॥

छंदचाल॥

प्रोपध इकमाव इकन्तर। कांजीजुत करिये निरन्तर॥ अथवा चन्द्रायण करिहै। लघु सकति इकन्त जु धरिहै॥१३॥
संख्या धरि वस्तु जु केरी। तातें अधिक लेनहि केरी॥ इह वरत महा सुखदाई। चहुंगति भव भ्रमण नसाई॥१४॥

अथ लघु सुखसंपत्ति व्रत॥

सुख संपतिव्रत दुय भेद। तिनकी विधि भवि सुनिएव॥ पोड़श तिथि प्रोपध पट दश। लहुडी सुखदाय अनेकस १५

वड़ीसुख संपत्ति व्रत॥

पडिवा इक दोयज दोई। तिहुं तीज चौथ चहु जोई॥ पांचैं पण छठ छह जाणो। सातैं फुनि सात वखाणो॥१६॥

आठै के प्रोपध आठ । नवमी नव आगम पाठ ॥ दसमी दस ग्यारस ग्यार । बारसिके प्रोपधबारै ॥ १७ ॥
तेरसि तेरा गनि लीजे । चौदसि के चौदह कीजै ॥ पंदरसि पदरह शिवकारी । मीसरु सो प्रोपध धारी ॥ १८ ॥
इहसुख संपत्ति व्रतनिको । भव भव सुखदायक जीको ॥ मन वच काया शुध कीजे । भविजन नर भवफल लीजे १९

अथ बाराव्रत चौपाई ॥

बाराव्रत तणी विधि जिसी । बारा भांति वखाणो तिसी ॥ प्रोपध कीजे बारा भांति । अरु बाराही करिए एकन्त २०॥
बारा कांजी तंदुल लेय । निगोरसे गोर रस तजि दय ॥ अलप अहार असनइक भाग । लहै करि है दुय बटभाग ॥
इकठाणी भोजन जल सबै । लै पुरसाय बार इक तबै ॥ मूंग मोठ चौला अरु चिणा । लेहि इकोंण बीणी तपिणा २२॥
पाणी लूण थकी जो खाय । नयड नाम ताको कहवाय ॥ विरत छांडिये सब परकार । सो जाणो लूखो जुअहार २३॥
त्रिविधि पात्रसाधरमी जाण । ताहि आहारदेय विधि जाण ॥ लेनुख सोधि निरन्तरथाय । पाछे व्रतधर असन लहाय २४
अंतराय हूए उपवास । करे नाम सुख सोध्यो तास ॥ घरके लोक बुलाइ कहेई । बिन जाचें भोजन जल देई ॥२५॥
धरे थालमाहीं जो खाय । किरिया चैन अयाची थाय ॥ लूण सर्वथा त्यागे जदा । भांति अलूणाकी है तदा ॥२६॥
जिनपूजा सुन शास्त्र वखान । एक गेहको करि जरिमांण ॥ जाय उडंड तासके बार । भोजनलेहु कहै नरनार ॥२७॥
ठाम असन जलको जो गहै । वरतमान निरमान जु कहै ॥ बारावरत भांति दस दोय । अनुक्रमि सेतपच्छ भनिलोय २८
समकित सहित जु व्रतको धरे । त्रिविध शुद्ध शीलहि आचरे ॥ करिहै पूरण वरप मंझार । सो सुरपद पावे नरनार २९

अथ एकावली व्रत अडिल्ल ॥

सुणहु भव्यक एकावली विधिहै जिसी । सुकल प्रतिपदा पंचम अष्टम चउदसी ॥
कृष्ण चतुरथी आठैं चउदसि जाणिए । चउरासी उपवास वरषमधि ठाणिये ॥३०॥
नीये क्रांति नृप प्रोपध विधि है तिसी । उद्यापनकी रीत करो आगम जिसी ॥ ३१ ॥
दीक्षा धरि मुनि होय घोर तपको गही । केवल ज्ञान उपाय मोक्ष पदवी लही ॥ ३१ ॥

या
ोप
,२३

अथ दुकावलीव्रत दोहा ।

विधि दुकावली बरतकी, श्रीजिन भाषी ताम। बेला आत जु मासमें, करिए सुनि तिय नाम ॥ ३२ ॥

छन्दचाल ॥

पखि श्वेत थकी व्रत लीजे । पडिवा दोयज शुद्धि कीजे ॥ फुनि पांचैं षष्ठी जाणो । आठैं नवमी छठि ठाणो ॥३३॥
चौदसि पून्यो गिण लेह । बेला चहु पखि सित एह ॥ थिति चौथी पांचमी कारी । आठैं नौमी सुविचारी ॥३४॥
चौदसि मावस परवीन । पखि किसन करै छठतीन ॥ इम सात मास इकमांहीं । बारामासहिं इक ठाहिं ॥ ३५ ॥
चौरासी बेला कीजे । उद्यापन करि छांडीजे ॥ इस व्रततैं सुर शिव पावे । दुखको तहां वोर न आवै ॥ ३६ ॥

अथ रतनावलीव्रत ॥ चाल छन्द ॥

रतनावलि व्रत इम करिये । प्रोषध सुदि तीजहि धरिये ॥ पचम अष्टम उपवास । सितपक्ष तिहू प्रोषधतास ॥ ३७ ॥
दोयज पंचम अंधियारी । आठैं प्रोषध सुखकारी ॥ इक मास मांहि छह जानो ॥ वरष सतरि दुय ठानों ॥३८॥
उद्यापन सकति समान । करिके तजिए मतिमान ॥ दृगजुत धरि शील धरीजैं । तातें उत्तम फल लीजै ॥३९॥

अथ कनकावली व्रत ॥

कनकावलीय व्रत जैसे । आगम भाष्यो सुणि तैसे ॥ सितपक्ष थकी उपवास । करिये विध सुनिए तास ॥४०॥
प्रोषध सित पडिवा कीजे । फुनि वास पंचमी लीजै ॥ सुदि दशमी फुनि होय जवहीं । वदि षठ बारस व्रत सजहीं ४१
छह मास मास इकमाहीं । करिए भवि भाव धराही ॥ उपवास बहत्तरि जास । इक वरष मध्यकरै तास ॥४२॥

अथ मुक्तावलीव्रत ।

मुक्तावली व्रत लघु एम । करिहै भवि करि प्रेम ॥ भादों सुदि सातैं जाणों । पहिलो उपवास बखाणों ॥४३॥
आसोज किसन छठि तेरस । उजियारी करिये ग्यारस ॥ कातिक वदि बारस ताम । सुदि तीजरु ग्यारसे ठाम ॥४४॥

मगसिर वदि ग्यारसि जानो । प्रोषध सुदि तीजहि ठानो ॥ नवं नवं प्रति वरष गहीजै । प्रोषधइक असी करीजै४५॥
पूरो नव वरष मझारी । जुत शील करहु नर नारी ॥ तातैं फल पावें मोटो । मिटिहै बिधि उदय जु पोटो ॥४६॥

अथ मुकुट सप्तमी व्रत ॥ दोहा ॥

सावण सुदि सप्तमी दिवस, प्रोषध को नरवाम ॥ सातवरष तक कीजिये, मुकुट सप्तमी नाम ॥ ४७ ॥

अथ नंदीश्वर पंक्ति व्रत ॥

नंदीश्वर पंकति वरत, सुनहुभविक चितलाय ॥ किये पुन्य अतिउपजै, भव आतापमिटाय ॥ ४८ ॥

चौपाई ॥

प्रथमहि च्यार इकंतर वीस । करहु पछे वेलो इकतीस ॥ तापीछैं जु एकंतर करैं । द्वादश प्रोषध विधि जुत धरैं ॥४९॥
फुन वेलो करिये हित जांनि । वारा वास इकंतर ठांनि ॥ पाछै इक वेलो कीजिए । इकअंतर दशदुयलीजिए ॥५०।
फिरि इक वेलो करि धरि पेम । वडुउपवास एकंतरएम ॥ सबउपवास आठ चालीस । विचि वेलौ चहुं गहैगण.स. ५१॥
दधि मुख रति करके उपवास । अंजन गिरि चहुं बेलातास ॥ दिवस एक सौ आठ मझार । वरतयहै पूरणताधार ॥५२॥
छपन्न प्रोषध भविमन आन । करें पारणावा वन जान ॥ लगत करैं न अंतर परें । अघ अनेक भवसंचितहरें ॥ ५३ ॥

अथ लघु मृदंगमधि व्रत ॥ अडिल्ल ॥

दोय वासफिर असन फिर तिहुं चउकरैं । पांचवास धरि च्यार तीन दुय अनुसरैं ॥
दिवसतीस में वास कहे तेईस हैं । लघु मृदंगमधि सात पारणाजुत गहै ॥ ५४ ॥

अथ वडो मृदंग मधि व्रत ॥ गिताछंद ।

उपवास इक करिदोय थापे तीन चहु पण छह धरै । फुनिसात आठरु चढै नवलों फेरिवसु सात जु करैं ॥
छहपांच चाररु तीन दुयइक वास इक्यासीगह । मिरदंगमधि जुनाम दीरघ पारणा सत्रह लहे ॥ ५५ ॥

अथ धरम चक्र व्रत ॥ अडिल्ल छंद ॥

एकवास करि दोय तीन फुनि चहुं धरे । तापीछैं करि पांव एक फुनि विस्तरे ॥
दिनबाईस मझार वास षोडश कहे । धरम चक्र व्रत धारिपारणाछह गहे ॥ ५६ ॥

बडी मुक्तावली व्रत ॥

एकवास दुय तीन चार पणथापई । च्यार तीन दुय एकधार अघकांपई ॥
सवैं वासपणवीस पारणा नवगही । गुरुमुक्तावली व्रतदिवस चौतीसही ॥ ५७ ॥

अथभावना पचीसी व्रत ॥

दसमी दसउपवास पंचमी पंचहे । आठैंवसुउपवास प्रतिपदादुयगहै ॥
सव प्रोषध पच्चीस शील युतकीजिए । एभ,वना पचीसी वरत गहीजिए ॥ ५८ ॥

अथ नवनिधि व्रत

चौदा चौदसि चौदारतन तणी करें । नवविधि की तिथि नवमी नव प्रोषध धरें ॥
रतनत्रय तिहु तीज ज्ञान पण पंचमी ॥ नवनिधि प्रोषध एकतीस करि अघगमी ॥ ५९ ॥

अथश्रुतग्यांन व्रत दोहा ।

प्रोषध व्रत श्रुतज्ञानके, जिनवर भाषे जेम । सकल आठने एकसो, बुधिजांण भविधरपेम ॥ ६० ॥

चौपाई ॥

सकल पापमै व्रत लीजिए । षोड़श तिथि ताकी कीजिए ॥ सोलापडिवा प्रोषधसार । सितमितकरि पखमें निरधार ॥६१॥
और कहूं तिथि तिन कर तीज । चोथ च्यार पण पांच लीज ॥ छहछठिसातैं सात वखांणि । आठैं आठ नवमीनवजांणि ॥६२॥
दोसदै ग्यारा ग्यारसी । प्रोषधकरि बा।। बारसो ॥ तेरसि तेरह वास वषांण । चौदसि चौदह प्रोषध ठांण ॥६३॥
पून्यो पन्दरह करि उपवास । अमावस पन्दरह करितास ॥ सील सहित प्रोषध सब करे । भव भवके संचित अघहरे ॥६४॥

अथसिंहनिः क्रीडितव्रत दोहा

सिंहनि क्रीडित तप तणो, कछु विशेप वषांण । विधिसों कीजे भावजुत, करम निरजरा ठाण ॥ ६५ ॥

छंदचाल ॥

प्रथमहिकरि इक उपवास । फुनि दोय एक तिहु जास ॥ दोय च्यारिं तीन पण कीजै । चवपांचथापि करिदीजै ॥ ६६॥
चहु पांचतीन चहु दोई । तिहु एक दोय इक होई ॥ सबवास साठि गणलीजै । तहु वीस पारणा कीजै ॥६७।
असी दिन में व्रत एह । करि कह्यों जिनागम जेह ॥ इह तप शिवसुख के दायक । कीन्हों पूरब मुनि नायक ॥६८॥

अथ लघु चौतीसीवरत दोह ॥

अतिसय लघु चोतीस व्रत, तास तणो कछु भेद । कथा माहिं सुनियो जिसे, किये होय दुख छेद ॥ ६९॥

अडिल्ल छन्द ।

दसदसमी जनमत के अतिसय दसतणी । फिरिदस केवलज्ञान ऊपजै दस भणी ।।
चोदसि चोंदह अतिशय देवाकृत कही । चार चतष्टय चौथ चार इहविधि गही ॥ ७० ॥
पोडश आठैं प्रातिहार्य की वसु भणी । ज्ञान पांचकी पांचै पांच कही गणी ॥
अरु पष्टी छह लही सबै प्रोपध सुनो । पांच अधिक भवि सांठ कीए फल बहु गुणो ॥ ७१ ॥

अथ बारासै चौतिसाको व्रत ।

दोयज पांचै आठैं ग्यारस चउदसी । इनके प्रोपध करै सकल अघ जैनसी ॥
प्रोपध सब बारहसो अरु चोतीसही । नाम वरत बारानै चोतीसो कही ॥ ७२ ॥

अथ पंचपरमेष्टी का गुणव्रत उक्तंच गाथा

अरहंता छियाला सिद्ध अट्ठेव सूयं छतीसा । उवझायापण वीसा साहुणहुंति अडवीसा ॥७३॥

दोहा ।

कहूं पंच परमेष्ठि के, जे जे गुण सगरीस । छयालीसवसु तीस छह, अरु पचीस अडवीस ॥ ७४ ॥

अरहंत का गुण वर्णन

कहूं छियालीस गुण अरहन्त । दस अतिसय जनमत है सन्त ।। केवल ज्ञान भये दश थाय । दुहुंकी बीसदसे करवाय॥७५॥
प्रातिहार्य की आठैं आठ । चौथि चतुष्टय चहुंए पाठ । सुर कृत अतिसय चवदह जास । चौदह चौदसि गनिए तास ॥७६।

सिद्धका गुण वर्णन

अव कणिए वसु सिद्धन भेद । करिए वाम आठ मुणि लेह ॥ समकित दूजो णाण वखाण । दंसण चौथो वीरजजाण ।।७७॥
सुइमच्छठो अवगाहण सही । अगुरु लघु सपतम गुणगही ॥ अव्वा वाध आठमो धरै । इन आठोंकी आठैं करै ॥७८॥

आचारज के गुण छत्तीस

आचारिज गुण जे ह छतीस । तिनकीविधि सुनिए निसिदीस ॥ वारसि वारा तप दशदोय ॥ षडावात्रसिकी छठिछह होय ७९।
पांचैं पांच पांच आचार । दश लक्षण की दशमी धार ।। तीन तीज तिहु गुप्तजो तवो । प्रोषध ए छह तीस जो भणी ८०॥

उपाध्याय के गुण

गुण पचीस उवझाया जानि । चौदह पूरव कहे वखान ।। ग्याराअंग प्रकाशे धीर । एपचीसगुण लखिये वीर ॥ ८१ ॥
चौदा चौदस के उपवास । ग्यारां ग्यारसि प्रोषध तास ।। उपाध्याय के गुणहैं जिते । वासपचीस वपाणें तिते । ८२॥

साधु का गुण २८

साधु अठाई सगुण जाणिये । तिविधिपघइनि विधि ठाणिए ॥ पंचमहाव्रत समिति जु पंच । इन्द्रीविजय पंचगणिसंच ।।८३॥
इनिकी पन्दरह पक्षैकरे । षडआवसिकी छठि छहधरे ॥ भूमिसयन मज्जन को त्याग । वसनत्यजनकचलोंच विराग ॥ ८४॥
भोजन करे एकही वार । ठाढो होइ सो लेइ अहार ॥ करेनही दांतणकी वात । इनि सातों की पडिवासात ॥ ८५ ॥

सतमिति प्रोषध ए अठवीस । करिहै भवितरिहै शिवईस ॥ पञ्चपरम गुरु गुण सब जोड़ । सो परतियालीस धरिकोड ॥८६॥
करिए प्रोषध तिनके भव्व । सुरपदके सुख दायकसव्व ॥ अनुक्रम शिवपावै तहकीक । जिनवर भाष्यो है यह ठीक ॥८७॥

अथ पुष्पांजलीव्रत । अडिल्ल

भादौं तैं वसु चैत मास परयंतही । तिनकैसितपप मैं व्रतपुष्पांजली कही ।
पञ्चमतैं उपवास पांच नवमीलगै ॥ किये पुन्य उपजाय पाप सिगरे भगैं ॥ ८८ ॥
अथवा पांचैनवमी वास दुयही करै । छठिसातैं दिन आठै तिहुं कांजी करै ॥
छठि आठैं एकंत वास तिहु कीजिये । दोयवास एकंत तिनहूं लीजिये ॥ ८९ ॥ दोहा ॥
पांचवरषलौंवरतइह, करि त्रिशुद्धताधार । तातैं फलव्रतकिहहै, यामैं फेर न सार ॥ ९० ॥

अथ शिवकुमारका वेला लिख्यते॥ चौपाई॥

शिवकुमारका वेला जान । सुनीकथा जिनकहूं वखान ॥ चक्रवर्त्तिका सुत सुखधाम । शिवकुमार है ताको नाम ॥ ९१ ॥
घरमैं तप कीनो तिहसार । वेला चौसठि वर्ष मझार ॥ त्रिया पांच से कै घर मांहि । करै पारणो कांजी आहि ॥९२
पूरण आयु महेंद्रसुथयो । तहंतैं जंबू स्वामी भयो ॥ दीक्षाधर तपकरि शिव गयो । गुणअनंत सुख अंत न पयो ॥९३॥
वरषहजार एक प्रति एक । वेला चौसठि धरि सुविवेक ॥ करै आयु लघु जानी अबै । शीलसहित धारो भविसबै ।९४॥
लगतै कारण सकतिको नाहिं । आठैं चौदस कम्सकनाहिं ॥ इनमैं अंतरपाडै नहीं । सोव्रतकिइ लहै सुखग्रही ॥९५॥

अथतीर्थङ्करोंका वेला । दोहा ।

ऋषभआदितीर्थेशके, वेलावीसरुचार । आठैं चौदस कीजिए, अंतरपूरन पार ॥ ९६ ॥ चौपाई ॥
सातैं आठ वेलो ठांन । नौमी दिवसपारणोजान ॥ तेरसि चौदसि दयउपवास । मावसपून्यो भोजन तास ॥ ९७ ॥
ता पारणाकी विधि जिसी । सुणीवपाणतहां मैंतिसी ॥ वेला प्रथम पारणेएह । तीन शांजलीतजैं नेह ॥ ९८ ॥

अरु तेईस पारणा जान। तीनअंजली दूध बपान ॥ इमबेला कीजे चौबीस। तिनतैं फल अति लहै गरीस ॥ ९९॥

अथ जिन पूजा पुरंदर ब्रत लिख्यते॥ गीताछंद ॥

बरत जिन पूजा पुरन्दर सुनहु भविचितलायकै ॥ बारामहीनामांझ कोई मासइकहित दायकै ॥
ताकी सुकलपढिलाथकी ले अष्टमीलौंकीजिए। प्रोपधइकंतरआठदिनमैं पूजजिन शुभ लीजिए ॥ १००॥

दोहा ॥

बरत यह दिन आठको, बार एक करि लेइ ॥ मनवचतन तिनकालजिन, पूजै सुरपद देइ ॥ ॥

अथ रोहिणीब्रत लिख्यते ॥

ब्रत असोक रोहणी तनो। करिहै जे भविजीव ॥ सात बीस प्रोपध सकल ॥ धरि त्रिशुद्धताकीव ॥ २ ॥

अडिल्लछंद ॥

जिहदिन मांझनक्षत्ररोहिणी आय है। ताको प्रोपध करै सकल सुखदायहै ॥
अनुक्रमते उपवास सताईसजानिए। वरप सवा दुय मांहि पूर्णता मानिए ॥ ३ ॥

अथकोकिलापञ्चमी ब्रत लिख्यते ॥ दोहा ॥

अबैकोकिला पञ्चमी, बरत कहो विधिसार। शील सहित प्रोपध किये सुरपतिको दातार ॥ ४ ॥

द्रुतविलंबितछंद ।

पक्षअंधयारेमास असाढही । करिये प्रोपधकातिग लौं सही ॥ तिथि सुपंचमके उपवासही। मतिसुकोकिलपंचमिकौं लही

दोहा ।

मरयादा या बरतकी, सुनहु भविकपरवीन ॥ पांचवरपलौंकीजिये, त्रिविध शुद्धताकीन ॥ ६ ॥

अथकवलचंद्रायणव्रत लिख्यते ॥दोहा॥

वरतकवल चंद्रायणा, बारहमास मझार ॥ एकमहीना मैं करै, एकवार चितधार ॥ ७ ॥ चौपाई ॥

करहि अमावसको उपवास । पाछैं तैं इक चढता ग्रास ॥ पडिवादिवस ग्रास इकलीन । दोयज दोय तीज दिन तीन ॥ ८ ॥

चौथ चार पणपांचै सही । छट्ठि छहरातैं सतलही ॥ आठैं आठनवांमनो टेक । दशमीदसग्यारहि दस एक ॥ ९ ॥

बारसि बारह तेरसी जान । तेरसि चौदह चोदह ठांन ॥ पून्यो दिवस लेई दस पांच । सुकलपखकीए विधि सांच ॥ १० ॥

कृष्ण पखकीपडिवा जास । चोदहगास तणो परगास ॥ दोयज तेरह बारह तीज । चौथ ग्यार पञ्चमि दसलीज ॥ ११ ॥

छठ नव आठैं आठ वखांण । आठैं सात नवमि छहजांण ॥ दसमी पांचग्यारसीचार । बारसि तिहुं तेरसि दयधार ॥ १२ ॥

चोदस दिनाके गांसइकजाण । मांवसदिवस पारणौ ठांण ॥ एकमासको व्रतहैएह । गासलीजिये तिम सुणि लेह ॥ १३ ॥

गासलैन कौं ऐसो करै । मुखमैं देतनकरतैपरै ॥ बीचांपवोपाणीन गहाय । अंतराय गल अटकै थाय ॥ १४ ॥

जिनपूजा विधि जुत दिन तीन । करै वन्दना गुरुनमि सीस ॥ शास्त्र पाठ सुणमन लाय । धरमकथा मैंदिवसगमाय ॥ १५ ॥

पालै शीलवचन मन काय । इहविधि महा पुन्य उपजाय ॥ यातैं सुरपदहोवै ठीक । अनुक्रम शिवपावै तहकीक ॥ १६ ॥

अथमेरुपंक्तिव्रतलिख्यते ॥

वरत मेरु पंकति जो नाम । तास करहु विधि सुनि अभिराम ॥ दीपअठाई मध्यसुजाण । पञ्चमेरु जो प्रकटवखांण ॥ १७ ॥

जंबूदीप सुदर्शन सही । विजय सुपूरव धातकी सही ॥ अपरधातकी अचल प्रमांन । प्राची पोहकर मंदर मान ॥ १८ ॥

पुहकर अपर सुविद्युन्मालि । पञ्चमेरु ये धीरु सम्हालि ॥ तिनमैं असी चैत्यगृहसार । तिनके व्रत प्रोषध निरधार ॥ १९ ॥

सुणहु सुदरशण भूधर जेह । भद्रसालवन चहुं दिसि तेह ॥ जिन मंदिर तिह चार वखांण । प्रोषध चार [illegible] ॥ २० ॥

पाछैं बेलोकीजे एक । वनसौमनस दूसरो टेक ॥ चार जिनेश्वरभवन प्रकाश । चारवार फुनि [illegible] ॥ २१ ॥

नंदन वनजिन प्रोषध चार । पीछैताकेबेलोधार ॥ पांडुक वन चवजिनगेह । ताके चहु प्रोषध परिगेह ॥ २२ ॥

फुनि बेलोधागे भविसार । मेरु सुदरसन इहविसतार ॥ प्रोषध सोलहै बेलाचार । व्रतदिन चहुचालीस मंझार ॥ २३ ॥
चार बीस उपवास बषांण । बीसजुतास पारणाजांण ॥ ऐसें अनुक्रम करिए भव्व । पंचमेरु व्रत विधि सों सव्व ॥२४॥
द्वारावत मेरु सुदरशन नांम । तेईनाम सवनि सुखधाम । वाही विधि सब वरत जुतणी । जाणोंसही जिनागम भणी ॥ २५ ॥
इनमैं अंतर पाडे नहीं । लगते प्रोषध बेला गही ॥ सब प्रोषध को ऐसे जोड । बेला बीस करे चित कोड ॥ २६ ॥
वारा सकल एकसो बीस । करे पारणा सत्तरतीस ॥ सातमहीना दिन दस मांहि । सकल वरत इम पूरण थाहि ॥ २७॥
सकल पास बेला विच जांण । बीसइकंत सुकहे बषांण ॥ ऐसे बीस दिवस जांनिए । वरत मेरु पकतिमानिए ॥२८॥
शील सहित शुभ व्रत पालिये । हीणअदैविधि के टालिये ॥ सुरपदपावै संशयनाहिं । अनुक्रमभव लहि शिवपुरजाहिं ॥२९॥

दोहा ॥

वरतमेरु पंकति इहै, बरन्यो सुख दातार । करहु भविक समकित सहित, ज्यो पावैं भवपार ॥ ३० ॥
पंचमेरु के बीसवन, तहां असी जिन गेह । तिन के व्रतकी विधि सकल, पूरणकीनी एह ॥ ३१ ॥

अथ पल्ली विधान व्रत लिख्यते । दोहा ॥

सुणहु पल्यविधानव्रत, जिनआगम अनुसार । वरष वहत्तर कीजिए, वारा मास मझार ॥ ३२ ॥

छंदचाल ॥

आसोजकिसन छठि तेरस । सुदिबेलोग्यारस वारस ॥ चौदसि सितप्रोषध धरिये । कातिक वदिवारस वरिए ॥ ३३ ॥
प्रोषध सुदि तीजरु वारसि । मगसिर वदि वारग्यारसि ॥ सुदितीज अवरफरिवारसि । वदिपोसह दुतिया पंदरसि ॥ ३४ ॥
सुदि पांचैं सातें कीजे । धून्यूंको वास धरीजे ॥ वदि माघ चोथसातें गनि । चौदस उपवास धरोमनि ॥ ३५ ॥
सुदि सातैं आठैं बेलो । दशमी करिवास अकेलो ॥ फागुणपांचे छठिकारी । बेलोमुणि तिथि उंजियारी ॥ ३६ ॥
फुनिपडिवाग्यारसि लीजे । दोनों दिन भलौंकीजै । वदिपडिवा दोयज बेलो । चैत की करो इकेलो ॥ ३७ ॥

चौथ छठि इकादस अठमी। सुदिसातैं को अरदसमी॥ वैशाख चौथ बदि धारी दशमी वास फुनि कारी ॥३८॥
सितदोयज तीज धरीजे। नौमी तेरसि दहु लीजे॥ दशि प्रोपध तेरसि ठौन। चौदसमावस तेलों जान॥ ३९॥
सुदि आठें दशमी पंदरस। उपवास करो करि मन वस॥ अवसावण मांघ केषाम। कहि हौं भव ब्रणियो तासं॥ ४०॥
छठि चौथि अष्टमी सावण। फनि चौदनि सित ततीया भण॥ बारमि तेरसको वेलो। पून्यू को बास अबेलो॥४१॥
भ गदों वदि दोयज वास। छठि सातें वेलो तास॥ बारस उपवास धरीजै। [illegible] एक करीजै॥ ४२॥
तेल गे पांचें छठि साते। पुतनौमी वासकी यातें॥ ग्यारस बारस तेरसकों। प्रोषध तलों पन्दरसकों॥ ४३॥
उपव [illegible] आठ चालीस। तेलाचहु कहे गरीस॥ वेलाछहजिनवरभाषे। जिनआगम में इह आषे॥ ४४॥
ए [illegible] एकमें वास। सत्तरि दुय आगम भास॥ धारणें पारणों सन्त। करिये एकन्त महंत॥ ४५॥
धारे शी[illegible] त्रिविधि नरनारी। व्रत करहु न ढील लगारी॥ सुर है अनक्रम शिव जाई। विधिपल्यतणी इह गाई॥४६॥

॥ अथ रुकमणीव्रत लिख्यते ॥

सवैया ३१ सा॥

लछमी मती का भव वाहिं व्रत कीनो इह स्वेतभाद्र पद आठें प्रोपध आदाय कै। दोय जाम धरणें और चारं उपवास दिन पूजा रचै दोय याम पारणो बनायके॥ ४७॥ कीनों आठ वरष लौं गद्ध भाव देह त्यागि अच्युत सुरेश इंद्राणी पद पायके। भई रुकमिणी कृष्ण वासदेव पटतिया रुकमिणी नाम व्रतजाणो चितलायके॥ ४८॥

अथ विमानपंकती व्रत लिख्यते॥

व्रत विमान पंकति तणे, विधि सुनिये भविसार। मन वच क्रम करिए सही, सुर सुरेश पद धार॥ ४९॥

॥ अडिल्ल ॥

सौ धमरु ईशान सुग दुहु तें गही। पंच पिचोत्तर लगें पटल त्रेसठ कही॥
तिनकी चहुंदिस मांहि चय श्रेणी जहां। जैनभवन है अनेक अकृत्तम ही तहां॥ ५०॥

दोहा।

तिनके नाम विधानको, वरत इहै लखि सार। जहां जहां जेते पटल, सो सुनिये विस्तार ॥ ५१ ॥

॥ चौपाई ॥

दुय सुर गनि इकतीस विख्यात। सनतकुमार माहेंद्रहि सात ॥ चार ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सही लांतव कापिष्टहै द्वयसहीप२
एक शुक्र महाशुक्रह धार। एकहि सतार अरु सहसार ॥ आणत प्राणत आरण तीन। अच्युत लगै छहपटलप्रवीन ॥५३ ॥
नव नवग्रैवेयक जानिये। नव नवोत्तर इक मानिये ॥ पंच पंचोत्तर पटल जुएक। एत्रेसठ मुणि धरि सुविवेक ॥ ५४ ॥
अवैवरत प्रोपध विधि जिसी। कथाप्रमाण कहौं सुणि तिसी ॥ एकपटल प्रतिप्रोषध च्यार। करै एकंतर चित अवधार ॥५५॥
प्रोषध लगतै वेलो एक। करि भविजन मनधरि सुविवेक ॥ तापीछैं प्रोषध चहु जान। तिनके पीछैं वेलो ठान ॥ ५६ ॥
चहुंप्रोपध वेलो चहुंवास। छटचहुअनसनफुनिछठतास ॥ इह विधि त्रेसठ वारविधान। चहुंप्रोपध छठ अनुक्रम॰ान ॥५७॥
त्रेसठवार जु पूरण थाय। इकलगतो तेलो करवाय ॥ वीच इकंतर असनजु करै। एक भुक्त अतर नहि परै ॥ ५८ ॥
इनके वेला अरु उपवास। अनशन दिवसरु वेलोजास ॥ अरु सव दिन इकठे कर जोड़। सो सुणज्यौं भविचितधरिकोड़ ॥५९॥
छह सौ दिवस सताणवैं जाण। वरत दिवस मरयाद वखाण ॥ वास इकन्तर दुइसे जान। तिन ऊपरवावनपरवान ॥६०॥
त्रेसठ छठते लोइक जान। अव सव वासजोड़ इम मान ॥ वास इक्यासी परसयतीन। असन तीनसै सोला चीन ॥६१॥
इह व्रत तीनभवनमें सार। विधिजुत किए देव पदधार ॥ अनुक्रम शिवजैहै तहकीक। अवधारहु भविचितधरिठीक ॥६२॥

अथ निरजपंचमी व्रत लिख्यते ॥ सवैया ३१ सा ॥

प्रथम आसाढ सेत पंचमी को वास करे कातिकलो मास पांच प्रोपध गहीजिये।
आठ परकार जिनराज पूजा भावसेती उद्यापन विधि करि सुकृत लहीजिये ॥
कीयो नागश्रिय सेठ सुता एकवरपलों सुरगति पाय विधि कथातें पाईजिये।
निर्जर पंचमी को व्रत इह सुखकार भाव शुद्धकीए दुःखकोजलांजलि दीजिये ॥ ६३ ॥

॥ अथ [illegible] निर्जरणी व्रत लिख्यते ॥

दरसण के निमित चौदसि [illegible] सुदि । सावणकी चौदस सुज्ञानकाज कीजिये ।
भादों सुदि चौदस को प्रोषध चारित केरो तपजोग चौदसि असोज सीत लीजिये ॥
ए चार प्रोषध वरष मांहि विधि सेती कर्म निर्जरनी वरत सुन लीजिये
धनश्रीय सेठ सुताकरि सुरपद पायो अजों भवि भावि करिवेको चितदीजिये ॥ ६४ ॥

अथ आदित्य वार व्रत लिख्यते ॥ दोहा ॥

सुणोवरतआदीतकी, विधि भाषी है जेम ॥ कथाप्रमाण सु कहत हों, दायक सब विधि क्षेम ॥ ६५ ॥

चौपाई ।

प्रथमएकमाहे आसाढ । आठईपून्यूं विचि आठ ॥ सांवण मांहि करे फुनिचार । चारवास कर भादों मझार ॥ ६६ ॥
तजे चकार मझार विचार । वरष एकमाहें नववार ॥ करैंवरष नवलों निरधार । उजुमण करोसकत संभार ॥ ६७ ॥
उत्तमप्रोषधकी विधि जाण । आमिलदूजो जगत वषाण ॥ तृतीयप्रकारकह्यो इकठान । एकभुक्तिविधि चौथीजान ॥ ६८ ॥
संयम शील सहित निरधार । वरण जु नव को इह विसतार ॥ वरष एक में कीयो चहै । दीत आठ चालीस जुगहै ॥ ६९ ॥
विधि नाही चहुंवारवखाण । पार्श्वनाथजिन पूजा ठाण ॥ कीजे उद्यापन चहुंसार । पीछें तजिए व्रत निरधार ॥ ७० ॥
उद्यापन की सक्ति न होय । दूणांव्रत करिये भविलोय ॥ सेठनाम मतिसागर जाण । त्रिया गुणवती जास वखाण ॥ ७१ ॥
तिहइह व्रतको फल पाइयो । विधितें कथा माहिंगाइयो ॥ इहजाणी करभविजन करो । व्रतफलतें शिवतियकुं वरो ॥ ७२ ॥

अथकरा चूरव्रतलिख्यते ।

करा चूरव्रतकी विधि एह । आठ भांति भाषतहों जेह ॥ आठें आठ आठ में करे । चौसठि आठें पूरा परे ॥ ७३ ॥
प्रोषध आठ करे निरधार । इकठाणावसु एकहीवार ॥ एकगाराले इक दिन मांहि । आठजिनवेदकरे सक नाहिं ॥ ७४ ।
करहि इक फल्यां हरित तजेय । सीत दिनस तन्दुल इक लेय ॥ लाडू तिथि इकलाडूलाय । कांजी आठ करि सुखदाय ७५॥

दोहा ।

वरष दोय वसु मास में, व्रत पूरो है एह । शील सहित व्रत कीजिये, दायक सुर शिवगेह ७६ ॥

अथ अनस्तमीव्रत लिख्यते ॥ चौपाई ॥

अनस्तमीव्रत विधि इमपाल । घटिका दुयरवि अथवत टालि ॥ दिवस उदय घटिका दुय चढ़ै । तजि आहार चहुविधिव्रतवढ़ै७७
याकीकथा विशेष विचार । भाषो श्रपन क्रिया मझार ॥ यातें कहीं नहीं इह ठाम । निसि भोजन तजियै अभिराम ७८

अथ पंचकल्याण व्रत लिख्यते ॥

दोहा ।

व्रत कल्याणक पंचमी, मोपध तिथि विधि जाण । आचारज गुणभद्रकृत, उत्तर पुराण प्रमाण ॥ ७९ ॥
तीर्थंकर चौबीस के, गरभकल्याणक चार । तिथि उपवास तणी सुनो, करिये तिम मन धार ॥ ८० ॥

गर्भकल्याणक ॥ पद्धड़ीछन्द ॥

दोयज असाढ वदि वृषभधीर । छविवास पूज्य सुदि छठि जुवीर ॥ मुनिसुव्रतसांवणदुतीयस्यांम । दसमकरी जिनकुंथनाम८१॥
सितदोयजसुमति सुगरभ एव । भादोंवदिसातिंसांतिदेव ॥ छदिछठि सुपारस उदरमात । नमिश्रदिकु वरिदोयजविख्यात ८२
कातिक वदिपड़िवाजिन अनन्त । सुदिछठि नेमि प्रभु सुर महंत ॥ पद्मप्रभुवदि छटिमाघमास । फागुणवदि नौमीसुविधितास
अरहनाथ सुकलत्रितया वषाण । अ दें सभवउरमांतठांणि ॥ ससि प्रभवदिपांचैचंतएव । आठैं सांतलादिन गरभभेव ॥८४॥
सुदिएकैंन्निनवरमल्लिजांनि । वदितीजपारश्व वैशाखमांनि ॥ सुदिछठिअभिनंदन गरभ वास । जिनधर्मनाथतेरासप्रकाश
श्रेयांस जेठवदि छठिगरीस । दशमीदिनउच्छव विमलईश ॥ जिनअजित अमावसिउदरमात ॥ चौबीसगरभ उत्सवविख्यात ॥

दोहा

बीस चार जिनवर गरभ, वासर कहे वखान ॥ अबें जनमदिनतिथि सकल, सुनिभवि चित हित आंन ॥ ८७ ॥

जन्मकल्याणक ॥ पद्धड़ी छन्द ॥

आसाढ़ दसमी वदि नमि जनेश ॥ सामण वदि छठि नेमीश्वरेश ॥ कातिगवदि तेरसपदमकंत । मगसिर सुदि नौमीपुष्पदंत ८८॥
ग्यारसि मल्लिनु जनमावतार । अरहनाथ जनम चौदसि सुसार ॥ पूरणमासी सम्भवसदेव मल्लिप्रभवदि ग्यारसि पोष एव ८९
ग्यारस दिन पारशनाथ ज्ञान । शीतल जिनवारसि किसनमान । सितचौथ विमलनाम जुवखाद दसमी सित उछह अजितनाह ॥
वारसि अभिनन्दनजनमलीय तेरसि जिनधर्म मकाथ कीय । ग्यारसि फागुण श्रेयांस स्वामि । जिन वासुपूज्य चौदसि ...मि
वदि चैत नवमि रिसह स्वामि । दसमी मुनिसुव्रत पय नमामि ॥ सुदि तेरस जन्मे वीरनाथ । सुमतिदसमी वैशाख श्याम ९२
सुदि पड़िवा जनमे कुंथवीर । वारसि वदि जेठ अनन्त धीर ॥ चौदसि श्रीशांति कियो प्रकाश । सित बारसि जनमे श्रीसुपाश

॥ तप कल्याणक ॥

नमिनाथ दशमी आषाढ़ श्याम । सावण सुदि छठ तप नेमिनाम ॥ कातिग वदि तेरस वीरधीर मगसिर वदि दशमी पद्मवीर ९४
सुदि एक दिना पुहुपदन्त । दशमी दिन अरह जिनेतप महन्त ॥ जिन मल्लित जो ग्यारसि सुगेह । सुदि पून्यौं शंभवतप नेह ९५
चन्द्रप्रभ वारस किशन पोष । ग्यारसि पासतप्यो उपधिपोष ॥ सीतल जिन वदि द्वादसी माह सुदि चौथ विमलतप लियहु नार ९६
नवमी दिन दिक्षा अजितदेव । वारस अभिनन्दन सुत पभेव ॥ तेरस जिनधर्म तपो ... फागण वदि ग्यारसि श्रीश्रेयांस ९७
प्रभु वासुपूज्य चौदस सुजान । वदि चैतर नवमी रिसहमान ॥ सुव्रत दशमी वैशाख श्याम । सुदि पड़िवा कुंथ जिनेसताम ९८
सित नवमी लियो तप सुमति वीर । जिन शांति जेठ वदि चौथ धीर ॥ वदि वारसि तप जिनवर अनंत । वारस सुपार्श्व सित जेठ सन्त ९९

दोहा ।

तप कल्यानककौ कथन, उत्तर पुराणह माहि । काढ़ि कियो यत्र ज्ञानको, मुनिहु चित्त इक ठाहि ॥ १०० ॥

ज्ञानकल्यानक ॥ पद्धड़ीछन्द ॥

जिन नेमीश्वर पड़िवा कुवार । संभव जिन चौथ दि ज्ञानधारि ॥ कातिग सुदि दोयज पुहुपदन्त । लहि केवल बारस अरमहंत १॥

मगशिरसुदि ग्यारसमल्लिसुबोध। ग्यारसनमि ह्रियाकर्मजोध। शीतलवदिचौदसिपोषज्ञान। सुदिदसमीसुमतिकेवलमहान॥२
सुदिग्यारसिअजित सुबोध पाय। चौदस अभिनन्दन ज्ञान पाय॥ पून्योंलहि केवल धर्मवीर। श्रेयांस अमावसमाघधीर ३
सुदि वासुपूज्य दोयज प्रकाश। छठि विमलनाथ केवल विभास॥ फागुण वदि छट्ठी सुपार्श्वईश। सातैं चंद्रप्रभु नमूं सीश ४
फागुनवदिग्यारसऋषभजान। वदि चैत चौथ पारश बखान॥ अमावस श्रीजिनवर अनंत। सुदि तीज कुंथ केवललहंत ५
सुदि ग्यारस सुमतिजुबोध पाय। पदमप्रभुपून्यों ज्ञान थाय॥ सुव्रत नौमी वैशाख श्याम। सुदि दसैं वीरजिनबोध पाम ६

दोहा॥

ग्यान कल्याणक वर्णयो, उत्तरपुराण मैं जेम। अब निर्वाण प्रमाणतिथि, सुणहु भविक धर प्रेम॥ ७॥

निर्वाणकल्याणक॥ पद्धड़ीछंद॥

आषाढविमल आठैं असेत। सुदिसातैं शिव नेमी लहेत॥ सावण सुदि सातैं पारशनाथ। पून्यों श्रेयांस लहिमोक्षसाथ॥८॥
भादों सुदिआठैं पुहपदंत। जिन वासुपूज्य चौदस नमंत॥ सीतल जिन आठैं सित कुमार। कातिगमावस भववीरपार॥९॥
वदिमहा चतुर्दशि वृषभनाम। पद्मप्रभु फागुन चौथस्याम॥ सातैं सुपार्श्वशिवलहीयधीर। चंद्रप्रभुसातैंत्रजग तीर॥१०॥
वदिबारसि मुनिसुव्रतवखांण। सुदिपांचैं मल्लिजिनेस जाण। वदिचैतमावसीनंतनाथ। अमावस अरजिनमोक्षसाथ॥११॥
सुदिपांचैं शिवजिनअजितपाय। सुदिछठसंभवनिर्वाणथाय॥ सुदिग्यारसिसुमतिसुमोक्षधीर। नमिवदिचौदसिवैशाखतीर
सुदिएकैं शिवदिनकुंथजांण। अभिनंदनछठनिर्वाणठांण वदिचौदसिजेठसुशांतिनाथ। सुदिचौथधर्मशिवकियोसाथ॥

दोहा॥

कल्याणकनिर्वाणकी, तिथचोवीसविचार। कही जेम भाषी तिसी, उत्तरपुराण मझार॥ १४॥
होसम्पूरण व्रत जबै, करउद्यापनसार। आगम मैं जिन भाषियो, सोभ विमण निरधार॥ १५॥

उद्यापनकीविधि॥ चौपाई॥

पांचकीजिये जिनवर गेह। पांचप्रतिष्ठाकर शुभलेह। झालरि झांझ कंसालरुताल। छत्रचमर सिंघासन सार॥१६॥

भामंडल पुस्तक भंडार । पंचपंच सब कर निरधार ॥ घंटाकलश ध्वजा पणथाल । चंद्रोपक बहु मोलविशाल ॥ १७ ॥
पुस्तक पांच चैत गृह धरै । तिन बांचैं भविजन भवतरै ॥ चारसंघको दय आहार । जिन आगम भाषी विधसार ॥ १८ ॥
इतनी विधि जो करी न जाय । सकत प्रमाण करै सो आय ॥ सकत उलंघन करनो कहीं । सकतिवान करपरहै नहीं ।
काहू भांति कछु नहि थाय । तो दूणो व्रतकर चितलाय ॥ अैंबरत करिहै नरनार । करै दान सुन हीये अवधार ॥ २० ॥
गरभकल्याणक कीदनजाण । मैंदाका करिखाजा आण ॥ बांठे सबको घर अहलाद । करेइसी विध धरपरमाद ॥ २१ ॥
जनमकल्याणक दत्त विस्तरे । चिणाभिजोयकर विरहा करै ॥ मैंदा फल घरबाटे नार । चित्तमाहि अतिहितअवधार ॥ २२ ॥
तपकल्याणक दत्तअवधार । बाजर पापर खिचड़ी धार ॥ जिनआगमही वखाणी नहीं । युक्तिवाण मानसविधिगही ॥ २३ ॥
ज्ञान कल्याणक पगआय । जबै दानदे मन चितलाय ॥ पाठांगाय बाटै तिया । मनमें हरष सफल निजजिया ॥ २४ ॥
करके कल्याणक निर्वाण । तास दानको करै वखान ॥ मोतीचूर रूमगद फसार । लाडू कर बांटै रूब टार ॥ २५ ॥
बीस चार घटकी मरयाद । दे अति मानहिये अहलाद ॥ मनकी उकति उपावै घणी । जिनशास्त्रनमाहे नहीं भणी ॥ २६ ॥
याते सुनये परम सुजान । जिन आगम भाष्यो परमान । थोड़ो कीये अधिक फलदेय ॥ भाव सहित कर सुरपदलेय ॥ २६ ॥

॥ अडिल्ल ॥

जिम जिनआगम कह्यो दान तिम दीजिये । निजमन युक्ति उपाय कबहु नहिं कीजिये ॥
कमीशाल नहि लोग सक्तनहि पाइये । जास बराबर धर्म तिनहि चितलाइये ॥२७॥

॥ दोहा ॥

भोजनादि नित सकनितन, दानादिक विधसार । करि उपजावैपुन्य बहु यामें फेर न सार ॥ २८ ॥
पंकागगाकर नारके, परत पागग जाणं । शीलसहित प्रोषध सकल, करहु भभवि चित आण ॥ २९ ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

कल्याणकनार पन रहार नरपजनम ना गाया । पंनम निर्माणं वरनपर माणं कहियो महा पुराण ॥

तिनकी विधि भाषी जिम जिन भाषी किए लहै सुर गेह। अनुक्रम शिवपावै जेमन जावे ते सब जाणीएइ ॥३०॥

॥ निर्वाण कल्याणकका बेलो ॥ चोपाई ॥

जे जे तीर्थङ्कर निर्वाण। गए मासदिनकी तिथि ठाण॥ तिह दिनको पहिलो उपवास॥ लगतो दूजो वासप्रकाश॥३१॥
इह विधि बारहमास मझार। बेला करिये बीसरुचार॥ बेला कल्याणक निर्वाण। वरत नाम लखिये बुधभाण॥३२॥

लघुकल्याणकको व्रत॥ दोहा॥

गरभ जनम तपज्ञान शिव, तीर्थंकर चोबीस॥ वरसमांहि तिथि सवनकी, करै एकसो बीस॥ ३३॥

छप्पय।

रिषभगरभ वदि दुतिय गर्भ छठिवासुपूज्य गन। आठैं विमल सुग्यान दशमी नमि जनम रु तपभन॥
वर्धमान छठि सुकल गरभ माता के आए। सुदि सातैं जिन नेम करम हणि मोक्षसिधाए।
आषाढ मास माझै दिवस, छहमाहेही जांणियो। छहकल्याणक सातमो, छइ जिनवरको ठांणियो ॥३४॥
मुनि सुव्रतजिन देवगरभ वदि दोयज वासर। कुंथुगरभ वदि दसे सुमति सितबीज गरभवर॥
नेमनाथसित छठी जनम दिन तपफुनि धरियो। सातेपारशनाथ मोक्ष लहि भव दधि तरियो॥
श्रेयांसनाथ निरवानपद पून्यूं के दिनसरदही। सावणसुमास छठि दिन विषै सात कल्याणक है सही॥३५॥
वदि भादौंजिन शांति गरभ सातैंमाता उर। सुदि छठि गरभ सुपास अष्टमी मोक्ष सुविधिपर॥
वासपूज्य निर्वाण चतर्दसि भादौं जाणो। वदिदोयज आसोज गरभ नमि जिनवर मांनो॥
लहि मोक्ष नेमि एकैं सकल, आठैं शीतल शिवगए। दुहमास मांहि दिन सात मैं, कल्याणक सातह भए॥३६॥
गरभ अनंत जिनेश प्रतिपद कातिक करियो। संभव केवल चौथ त्रयोदसि पद्म जनम लियो॥
तपफुनि तेरसि पद्ममोक्ष नमति जु अमावस। सुविधिग्यांनसितबीज नेमि छठि मात गरभ वस॥
अरनाथ चतुष्टय विधिहणय, केवल ग्यान उपानियो। दिनसात कल्याणक आठ सब, काती मांहि सुजांनियो॥३६॥

संभवति तप चंद दसें सुविधि सु दें पंकै तपगनें। पुहप दंत नय जनम दसम तप अरहनाथ भन ॥
मल्लिजनम तप ज्ञान कल्याणक चिहुं सितग्यारस। नमितिसग्यारसि ग्यान जनम अरनाथ छचौदस ॥
संभव जु कल्याणक जनम तप, दुहूं पूरणवासी थए। दिनसात कल्याणक एकदा मगसिर माहीं वरणए ॥ ३७
पारशनाथ सुजनम अवर तप ग्यारसिकारी। जनम चन्द्र भताम दिवस दित्ताहू धारी ॥
चौदस शीतल ज्ञान सांति सुदि दशमी विधि तसु। ग्यारस केवल अजित जिनेश्वर प्रगट भयो जस ॥
मधु अभिनंदन चांदनि दिवस, लोकालोक प्रकासियो दिनपांच कल्याणक आठ जत, पौषमहीनो भासियो ॥३८॥

दोहा।

फागण दिन द्वारवि त्रिप, कल्याणक जिनराय। पदरह कये त्रिजगत पति, नमैं किसन सिरनाय ॥ ३९ ॥

छंदत्रिभंगी ॥

अष्टान्हिक धारण सोलह कारण व्रतदशलक्षणरतनत्रयं। शुभलब्धि विधानं अषय निधानं मेघ सु मालोपढरसयं ॥
ज्येष्ठादिक जिनवर रसपाख्यातर ज्ञानपचीसीअपदसे। समतादिक सरण व्रत मुख करणं सुखपंचम आकासल में ।४०।
पंडीरात वंगविसाल नागलोक दसधियं। रामा सुरवास देवनिवास धर्म प्रकाशं प्रकट कियं ॥
साधर्मी कलंणायं सकल गुण जाणं गोत्र पाटणी सुजसलियं। पूजा जिनरायं व्रत गुरुपायं नमैं सकति जिन दान दियं।४१।
तसु मा दोरगा गुरु सुख दुँ लहु आणंदसिंघ गुणो। सुख देवसुनंदन जिनपद वंदन धांनमान किसनेस मुणो।
किअमि इहकीनी कथा नवीनी निजहित चीनी सुरपदकी। सुखदायक्रिया भनि इहमनवचतन गुद्ध पलं दुरगतिरदकी ॥४२॥

दोहा।

मधुर राय वसन्तको, जाने सकल जहान। तस प्रधानसुतकोनज, किसन सिंह मनमान ॥ ४३ ॥

अडिल्ल।

नेतविपाकी कर्म उदै जब आइयो। निजपुरतजि कै सांगानेर बसाइयो ॥
तह जिन धर्म प्रसाद गमें दिन सुखदाई। साधर्मी जन सजन मान दीहित गई ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

इहविचार मन आनियो, क्रिया कथन विधसार । होय चौपई बंधतो, सबजन कु उपगार ॥ ४५ ॥

सबही जनबांचो पढ़ो, सुणो सकल नर नार । अखदाई मन आनियं, चलो क्रिया अनुसार ॥ ४६ ॥

॥ छंदचाल ॥

व्याकरण न कबही देख्यो । छन्द न नजरांअवलेख्यो ॥ लघुदीरघ वरण न जाणू । पदमात्राइनपिछाणू ॥ ४७ ॥
मतिहीण तहां अधिकाई । पटुताकवहूनहि पाई ॥ मनमांही बोहिआई । त्रेपन किरिया सुख दाई ॥ ४८ ॥
इह कथा संस्कृत केरी । भाषा रचिहों शुभ वरी ॥ कछु अवर ग्रंथ ते जानी । नानाविध किरियाआनी ॥ ४९ ॥
धर क्रिया कोस तिस नाम । पूरण करिहो अभिराम ॥ जिम मूढ़ समुद्रअवगाहै । निजभुजतेउतरो चाहै ॥ ५० ॥
गिरिपरितरु को फल जानी । कुबजक मनि तोरन ठानी ॥ शशि नीरकुण्डके माहीं । करत शशिबिम्ब गहाही ५१॥
तिम सज्जन मुझको भारी । हसिहै बसे नहिंकोरी ॥ बुधजन मो क्षिमा करीजे । मेरो कछु दोष न लीजे ॥ ५२ ॥
जो अशुद्ध होय पद याही । शुधकरि पढ़ियो भवि ताही ॥ अधिको नहि कहनो जोग । बुधजनकोयही नियोग ५३ ॥

॥ अडिल्ल ॥

किसनसिंह इह अरज करै सबजन सुनो । कर मिथ्यात को नाश निजातम पद मुनो ॥
कथासहित व्रतपाल करण बस कीजिए । अनुक्रम लहि शिवथान साश्वताजीजिए ॥ ५४ ॥

॥ सवैया इकतीसा ३१ ॥

सत्रहसौ सम्वत चौरासी यासु भादों मास वर्षारितु स्वेत तिथि पून्यो रविवार है ॥ सतिभिसा रवि धृतनाम जोग कुम्भ ससि सिंघको दिनेस महूरत अतिसार है । ढुढाहर देसज न बसे सांगानेर थान जैसिंहसवाई महाराज नीति धार है ॥ जाके राजसमय परिपूरण की इह कथा भव्यन के हिरदय हुलास देन हार है ॥ ५४ ॥ ऐसे चौदन

पैंतीस इकतीसा मरहटा पचास पांचसे बीस ठानेहैं ॥ सातसे छाणवे सु चौपई छवीस छप्पै पद्धड़ी पैंतीस तेरा सोरठा वखाने हैं ॥ अडिल्ल बहत्तर नाराच आठ गीता दस कुण्डलिया तीन छह तईसा प्रमान है ॥ द्रुत विलंवित चार आठ है भुजंगी तीन त्रोटक त्रिभंगी नव छन्द एते आने है ॥ ५५ ॥

॥ सवैया तेईसा २३ ॥

छन्द कहे इमग्रन्थ मझार लीए गनि जे उक्तंच धराई ॥ दोयहजार मही लखि घाट [illegible] चसीय एह प्रमान कराई ॥ जो न मिले तुक अक्षर मात तदा पुनरुक्त न दोषठराहीं ॥ तो मझको लखि दीन प्रवीन दसो मतिमें तम पाय पराही ॥ ग्रन्थनिमें इहलेखक को इकहै मरयादसिलोकफिती है । छन्दनिके सब अक्षर [illegible] [illegible] तिती है ॥ ते सब वर्ण बतीस प्रमाण श्लोकनि की गणती जुड़ती है ॥ दोयहजार परी नवसे लखि लेहु जिके भवि शुद्धमती है ५७

॥ छप्पयछन्द ॥

मंगल श्रीअरिहंत सिद्धमंगल सिवदायक ॥ आचारज उवझाय साधु गरु मंगल लायक ॥
मंगल जिनमुख खिरी दिव्य धुनिमय जिन वाणी । मङ्गल श्रावक नित्य समकिती मङ्गल जानी ॥
मंगल जु ग्रन्थ इहजानियो, वकतामुख मंगलसदा । श्रोतजु सुनो निज गुणरुचि मंगलकर तिनको सदा । ५८।

॥ दोहा ॥

किसनसिंह कवि वीनती, जिनश्रुत गुरुसों एह ॥ मंगल निज तन सुपद लख मुझहि मोक्षपद देह ॥ ५९ ॥

॥ चौपाई ॥

जबलों भव जिनेश्वर सार । जग मांहि वरते सुखकार ॥ तबलों निस्तारो यह ग्रन्थ । भविजनसुरशिवदायक पंथ ६०

इतिश्री क्रियाकोष भाषा मूल त्रपनक्रियाते आदि दे और ग्रन्थांकी साख कर मूल कथन उपरान्त सम्पूर्णम् ॥

Printed at the "Jawahar Printing Press" [illegible]

हमारे छापेखानेसे सर्वजगहके छपेजैनग्रंथ मिलसक्ते हैं खासहमारे छपे जैनग्रंथ पांच के मूल्यमें छः मिलेंगे

श्री पद्मपुराण महानग्रन्थ ६) श्री पार्श्व पुराण महान ग्रंथ १।) श्री पाण्डवपुराण ग्रन्थ २।।।) तेरहद्वीपपूजन पाठ वि० २॥) श्री आराधनासार कथाकोप १२६ कथाओं का संग्रह ३।।) यशोधरचरित्र भा० टी० ।=) क्रियाकोष कृष्णसिंहकृत १) भाषापूजनसंग्रह भादोंपाठ ।।) सप्तऋषी पू०)॥ शत्रुञ्जयगिर पू० गुटका=)॥ गिरनारऔरपावागिर पू० –) नित्यनियम पूजनसं० =) शीलकथाभारामल कृत ।) दर्शनकथाभारामल कृत ।) सेठ सुदर्शन कथा)॥।

होली की कथा –) राजा श्रेणक रानीचलनाचरित्र =)। चारदान कथा बड़ी ≡) जम्बूस्वामी की कथा =) निशि भोजन कथा बड़ी –)। निशभोजनकथा छोटी)॥ बाईसपरीषह संग्रह बड़ा =) प्रभु विलास नईरंगतमें भजन =) जयोतीप्रसाद भजनमाला –) उपदेश पचीसी पुकार पचीसी)॥। सङ्कटहरण दुःखहरण वीनती)। न्यामतसिंहभजनमाला –) मङ्गतराय भजनमाला –) लावनी कर्त्ता खण्डन)॥ चौबीसीअखाड़ा लावनी संग्रह –)। बारहखड़ी सूरत लावनी)॥ नन्हेलाल भजन संग्रह ।) बाल भजन संग्रह उत्तम पुस्तक –) दर्शनपाठ उत्तम पुस्तक –) शिखर माहात्म्यसार)॥ नमोकार मन्त्र वेल बूंटेदार –) पञ्चमङ्गल रूपचन्दजी कृत)॥। मांसभक्षणनिषेध)॥ ४० के दाम १) नागरीप्रकाश)। १००के दाम १) छःढाला दौलतराम स्तुति सहित –)॥ पंचपरमेष्ठी वन्दना)। जैनसंस्कार पद्धती ५३ क्रिया भाषा विवाहपद्धतीसहित ।–) भूधर जैनशतक =)॥ बारहभावना संग्रह बड़ी)॥। प्रातस्मरण मङ्गलपाठ भाषा)॥ समाधिमरणपाठ बड़ा भाषा –) भक्तामर पाठ भाषा –) विषापहार भाषा)॥। जोगीरासा वैराग्य भावना)। आलोचनापाठ भाषा)॥ नवांगकाण्ड भाषा)। बारहमासा सीतासती –) बारह० राजल)॥ बारह० वज्रदन्त चक्री)॥ बारह० नेमनाथ)॥ कृपण पचीसी)॥ हुक्कानिषेध)॥ सामायकपाठ)।

पता–लाला जैनीलाल जैन मालिक जैनग्रंथप्रचारक कार्यालय व जैनीलाल प्रिंटिंगप्रेस देवबन्द